30.00

June 2011

मरयम

एजूकेशन की अहमियत

दीनी परवरिश

कुरआन और हम

इमाम अली अ० और हयूमन राइटस

साइंस

इमाम मुहम्मद बाक़िर अ०

आज की औरत

उम्मीद की किरन

बरसात की बीमारियाँ

ख़ुशहाल ज़िन्दगी

रजब की फ़ज़ीलत

इम्तेहान

अगर आपको 'मरयम' पसंद है तो....
इसे अपने रिश्तेदारों, साथियों और दोस्तों के बीच फैलाने में हमारी मदद कीजिए!

SUBSCRIPTION CHARGES WITHIN INDIA		
1 year	**12** issues	320/-
2 years	**24** issues	600/-
3 years	**36** issues	850/-

CONTACT NO.
+91-522-4009558
+91 9956 62 0017, 9695 26 9006
maryammonthly@gmail.com
LUCKNOW-INDIA

सबसे
बुरा बंदा वह है जिसके
दो चहरे और दो ज़बानें हों।
अपने भाई को देखकर उसकी
तारीफ़ करे और उसकी पीठ पीछे उसे
ज़लील कर दे। जब भाई को कुछ मिले
तो यह जले और जब वह किसी
परेशानी में हो तो उसे छोड़ दे।

इमाम मूसा काज़िम अ०

Monthly Magazine

June
2011

मरयम

MARYAM

A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine

Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Mohammad Alam
Azmi Rizvi
Fatima

Graphic Designer
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

मुराक़ेबा और मुहासेबा (अख़लाक़)	11
हज़रत अली[अ] और ह्यूमन राइट्स	28
क़ुरआन और हम	13
इमाम अली नक़ी[अ]	22
बरसात की बीमारियां	42
कमाल का राइस (डिश)	15
इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ]	9
माहे रजब की फ़ज़ीलत	5
निजात देने वाला	26
दीनी तालीम, दीनी परवरिश	7
इमाम मुहम्मद तक़ी[अ]	16
इम्तेहान (कहानी)	33
बैंक एकाउंट	21
27 रजब, बेसत	36
ख़ुशहाल ज़िन्दगी	18
उम्मीद की किरन (सच्ची कहानियां)	12
एहकाम	39

ख़ुदा के नाम से जो बड़ा महरबान है...

रजब का महीना बड़ी बरकतों वाला महीना है क्योंकि इसमें एक-दो नहीं बल्कि कई इमामों की विलादत और शहादत है। वैसे भी हदीसों में इस महीने को बहुत अफ़ज़ल बताया गया है। इसी महीने में हज़रत अली[अ] की विलादत भी है जिनकी सारी ज़िन्दगी दूसरों तक उनके हक़ पहुंचाने और उन्हें इंसाफ़ दिलाने में गुज़र गई। सच्ची बात है कि अगर इमाम अली[अ] इंसाफ़ का बेड़ा न उठाते तो दूसरों की तरह वह भी बड़े आराम से अपनी ज़िन्दगी बिताते और कोई आपको कुछ कहने वाला न होता। लेकिन अमीरुल मोमेनीन ने अपनी जान की परवा न करके इंसाफ़ और अदल की वह मिसाल क़ायम की कि आज तक दुनिया उस हुकूमत के गुन गा रही है। आज भी जब यू.एन.ओ. में मालिके अशतर को हज़रत अली[अ] के ज़रिए लिखे जाने वाले हुकूमत के बारे में उसूलों को पढ़ा जाता है तो हर मुल्क उन उसूलों की तारीफ़ किए बिना नहीं रह पाता लेकिन सवाल यह उठता है कि सिर्फ़ तारीफ़ से क्या होता है। आज हर तरफ़ बेगुनाहों के ख़ून से होली खेली जा रही है, माओं की गोदियाँ उजड़ रही हैं, बच्चे यतीम हो रहे हैं, भूक से पेट और कमर एक हो चुके हैं, पहनने के लिए तन पर कपड़े नहीं हैं और दूसरी तरफ़ समाज का एक बहुत बड़ा तबक़ा है जो ऐशो-आराम और मौज-मस्ती में इतना डूबा हुआ है कि उसे अपने आस-पास की कुछ भी ख़बर नहीं है।

काश! अमीरुल मोमेनीन[अ] की हुकूमत को दुनिया ने बाक़ी रहने दिया होता तो शायद बल्कि यक़ीनी तौर पर आज जो बदतरीन सूरतेहाल हमारे सामने है वह न होती...लेकिन यह सब तो बड़े ऊँचे पैमाने की बातें हैं यानी हम सब सिर्फ़ अफ़सोस करके आगे नहीं बढ़ सकते बल्कि हमें अपने लेविल पर भी चीज़ों को देखना होगा...क्या हमारे आस-पास तो ऐसा नहीं हो रहा है कि कोई भूका सो जाए और हम इतना ज़्यादा खा चुके हों कि नींद ही न आ रही हो, किसी घर में कोई ऐसा मरीज़ तो नहीं है जिसके पास इलाज के लिए पैसा न हो, हमारे पड़ोस में कोई ऐसी लड़की तो नहीं है जिसकी ग़ुरबत की वजह से शादी ही न हो पा रही हो, किसी यतीम की आंखों से आंसू तो नहीं बह रहे हैं...हमें संजीदगी से इन सब बातों पर ग़ौर करना पड़ेगा और सिर्फ़ ग़ौर ही नहीं बल्कि अमली तौर पर आगे आना होगा क्योंकि यही इमाम अली[अ] की सीरत है।

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher S. Mohammad Hasan Naqvi printed at Imagine Grafix, 4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9695269006
email: maryammonthly@gmail.com

माहे रजब की फ़ज़ीलत

रजब, शाबान और रमज़ान बड़ी अज़मतों वाले महीने हैं जिसके लिए बहुत सी रिवायतें भी बयान हुई हैं। जैसे रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं कि रजब का महीना खुदा के नज़दीक अज़मत वाला महीना है। इस महीने में जंग करना हराम है। साथ ही यह भी रिवायत में मिलता है कि रजब खुदा का महीना है, शाबान मेरा महीना है और रमज़ान मेरी उम्मत का महीना है। रजब में एक रोज़ा रखने वाले को खुदा की खुशनूदी हासिल होती है, खुदा का ग़ज़ब उससे दूर हो जाता है और जहन्नम के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा उस पर बंद हो जाता है। इमाम मूसा काज़िम[अ०] फ़रमाते हैं कि रजब के महीने में एक रोज़ा रखने से जहन्नम की आग एक साल की दूरी तक दूर हो जाती है और जो शख़्स इस महीने में तीन रोज़े रखे तो उसके लिए जन्नत वाजिब हो जाती है। इमाम फ़रमाते हैं कि रजब जन्नत में एक नहर है जिसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा है। जो शख़्स इस महीने में एक दिन का रोज़ा रखेगा वह उस नहर से सैराब होगा।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] से रिवायत है कि रसूले अकरम[स०] ने फ़रमाया कि रजब मेरी उम्मत के लिए इस्तग़फ़ार का महीना है। इसलिए इस महीने में अपने लिए ज़्यादा से ज़्यादा मग़फ़िरत चाहो क्योंकि खुदा बहुत बख़्शने वाला और मेहरबान है।

रसूले इस्लाम फ़रमाते हैं कि रजब को 'असब' भी कहा जाता है क्योंकि इस महीने में मेरी उम्मत पर खुदा की रहमत बहुत ज़्यादा बरसती है। इसलिए इस महीने में कसरत से **'अस्तग़फ़िरुल्लाह व अस-अलुत्तौबा'** कहा करो यानी 'मैं खुदा से बख़्शिश चाहता हूं और तौबा की तौफ़ीक़ मांगता हूं।'

शेख़ सुदूक़ ने सालिम से रिवायत बयान की है कि उन्होंने कहा कि मैं रजब के आख़िर में इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो हज़रत ने मेरी तरफ़ देखते हुए फ़रमाया कि इस महीने में तुमने रोज़ा रखा है? मैंने कहा कि नहीं! आपने फ़रमाया कि तुमने इतना सवाब खो दिया है कि जिसकी मिक़दार खुदा के सिवाए कोई नहीं जानता क्योंकि यह वह महीना है जिसकी फ़ज़ीलत सारे महीनों से ज़्यादा है। मैंने कहा कि अगर मैं इसके बाक़ी बचे हुए दिनों में रोज़ा रखूं तो क्या मुझे वह सवाब मिल जाएगा? आपने फ़रमाया कि ऐ सालिम! ध्यान रहे कि जो शख़्स रजब के आख़िर में एक रोज़ा रखेगा खुदा उसको मौत की सख़्तियों, मौत के बाद की हौलनाकी और क़ब्र के अज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा। जो शख़्स महीने के आख़िर में दो रोज़े रखेगा वह पुले सिरात से आसानी से गुज़र जाएगा और जो तीन रोज़े रखेगा उसे क़यामत की सख़्तियों से महफ़ूज़ रखा जाएगा और उसको जहन्नम की आग से आज़ादी का परवाना अता होगा।

रजब के आमाल

यह रजब के आमाल में पहली क़िस्म के आमाल हैं जो किसी ख़ास दिन के नहीं हैं बल्कि इन्हें रोज़ाना अदा किया जा सकता है:-

1- रजब के पूरे महीने में यह दुआ पढ़ना चाहिए। रिवायत है कि यह दुआ इमाम ज़ैनुल आबिदीन[अ०] ने रजब में पढ़ी थी:

या मंय यम-लिकु हवा-इजस्सा-ई-ली-न व या-ल-मुज़्ज़मी-रस्सा-मिती-न लि-कुल्लि मस-अ-ल-तम मिन्का समउन हाज़िरून व जवाबुन अतीद। अल्लाहुम्मा व मवा-ई-दु-कस्सादि-तु व अयादीकल फ़ाज़िल-तु व रहमतुकल वासि-अतु। फ़-असल-अलु-क अन तुसल्लि-य अला मुहम्मद व आलि मुहम्मद। व अन तक़-ज़ि-या हवा-ई-जी लिद्-दुनिया वल आख़िरा। इन्नका अला कुल्लि शैईन क़दीर।

तर्जुमा: *"ऐ वह जो सवालियों की हाजतों का ज़िम्मेदार है और ख़ामोश लोगों के दिलों की बातें जानता है। हर वह सवाल जो तुझसे किया जाए तेरा कान उसे सुनता है और उसका जवाब देता है। ख़ुदाया! तेरे सब वादे सच्चे हैं। तेरी नेमतें बहुत ज़्यादा हैं और तेरी रहमत बड़ी फैली हुई है। मेरा सवाल यह है कि मुहम्मद व आले मुहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और मेरी दुनिया व आख़िरत की हाजतों को पूरा फ़रमा दे कि तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।"*

2- यह दुआ पढ़े कि जिसे इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] रजब में हर रोज़ पढ़ा करते थे:

ख़ाबल वाफ़ि-दू-न अला ग़ैरि-क व ख़सि-रल मु-त-अर्रि-ज़ू-न इल्ला ल-क व ज़ाअल मुलिम्मू-न इल्ला बि-क व अज-द-बल मुन-तजि-ऊ-न इल्ला मनिन त-ज-अ फ़ज़्-ल-क बाबु-क मफ़तूहुल लिल राग़िबी-न व ख़ैरू-क मबज़ूलुल लित्ता लिबी-न व फ़ज़्-लु-क मुबाहुल लिस्सा-ई-ली-न व नैलु-क मुताहुल लिल आमिली-न व रिज़्-क़ु-क मबसूतुल लिमन असा-क व हिल-मु-क मु-त-रिज़ुल लिमन नावा-क। आ-द-तु-कल एहसानु इलल मुसीय्यीन। व सबीलु-कल इबक़ा-ऊ अलल मु-तदीन। अल्लाहुम्मा फ़ह-दिनी हुदल

मुह-तदीन। वरज़ुक़्नी इजतिहादल मुजतहिदीन। व ला तज-अलनी मिनल ग़ाफ़ि-लीनल मुब-अदीन। वग़फ़िर ली यौमद्-दीन।

तर्जुमाः *"ऐ ख़ुदा! तेरे ग़ैर के दरवाज़े पर आने वाले घाटे में हैं और तेरे अलावा किसी से मांगने वाले नुक़्सान में हैं। जो किसी और के दरवाज़े में घुस जाए वह बर्बाद है और जो किसी और के फ़ज़्ल की उम्मीद करे वह क़हत का शिकार हो जाएगा। तेरा दरवाज़ा राग़िबों के लिए खुला हुआ है और तेरा ख़ैर मांगने वालों के लिए बराबर अता हो रहा है। तेरा फ़ज़ल सवाल करने वालों के लिए आम है और तेरी अता उम्मीदवारों के लिए हमेशा तैयार है। तेरा रिज़्क़ गुनाहगारों के लिए फैला हुआ है, तेरी बुर्दबारी दूर हो जाने वालों के लिए भी तैयार है, तेरी यह आदत है कि तू गुनाहगारों के साथ भी एहसान करता है और ज़ालिमों को भी छूट देता है। ऐ ख़ुदा! मुझे हिदायत याफ़्ता लोगों जैसी हिदायत दे और कोशिश करने वालों जैसी कोशिश की हिम्मत अता फ़रमा! मुझे उन ग़ाफ़िलों में से क़रार न देना जो तेरी बारगाह से दूर हो गए हैं और क़यामत में मुझे बख़्श देना!"*

3- इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] फ़रमाते हैं कि रजब में यह दुआ पढ़ा करोः अल्लाहुम्मा इन्नी अस-अ-लु-क सब-रश्शा-किरी-न ल-क व अ-म-लल ख़ाईफ़ी-न मिन-क व यक़ीनल आबिदी-न ल-क। अल्लाहुम्मा अन-तल अलिय्युल अज़ीम। व अना अबदु-कल बाईसुल फ़क़ीर। अनतल ग़निय्युल हमीद। व अनल अबदुज़्ज़लील। अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मद व आलि-हि वम-नुन बि-ग़िना-क अला फ़क़री व बि-हिल-मि-क अला जहली। व बि-क़ुव्व-ति-क अला ज़ाफ़ी। या क़विय्यु या अज़ीज़। अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मद व आ-लिहिल औसि-या-ईल मर-ज़ीय्यीन। वक-फ़िनी मा अहम्मनी मिन अम-रिद्-दुनिया वल आख़िरा। या अर-ह-मर रा-हिमीन।

तर्जुमाः *"ऐ माबूद! मैं तुझसे सवाल करता हूं कि मुझे शुक्रगुज़ारों का सब्र, डरने वालों का अमल और इबादतगुज़ारों का यक़ीन अता फ़रमा। ऐ माबूद! तू बुलंद और बुर्ज़ुग है और मैं तेरा फ़क़ीर और मोहताज बंदा हूं। तू बेहाजत और तारीफ़ वाला है और मैं तेरा पस्त और हक़ीर बंदा हूं। ऐ माबूद! रहमत नाज़िल फ़रमा मुहम्मद और उनकी आल पर और मेरी मोहताजी पर अपने ग़नी होने से, मेरी नादानी पर अपने हिल्म से और अपनी क़ुव्वत से मेरी कमज़ोरी पर एहसान फ़रमा! ऐ क़ुव्वत वाले, ऐ इज़्ज़त वाले, ऐ माबूद! रहमत फ़रमा मुहम्मद और उनकी आल पर जो तेरे पसंदीदा और वसी व जानशीन हैं और दुनिया व आख़िरत के अहम मामलों में मेरे लिए काफ़ी हो जा! ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले!"*

किताबे इक़बाल में सैय्यद बिन ताऊस ने भी इस दुआ को लिखा है इससे ज़ाहिर होता है कि यह बहुत अच्छी दुआ है जिसे हर वक़्त पढ़ा जा सकता है।

4- मुहम्मद बिन ज़कवान कहते हैं कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ॰] की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मैं आप पर क़ुर्बान हो जाऊं! यह रजब का महीना है, मुझे कोई दुआ बताईए कि ख़ुदा उसके ज़रिए मुझ पर रहमत नाज़िल फ़रमाए। आपने फ़रमाया कि लिखो और रजब के महीने में हर रोज़ यह दुआ पढ़ा करोः बिसमिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम। या मन अर-जू-हो लि क़ुल्लि ख़ैरिन व आ-म-न स-ख़-त-हू इन-दा क़ुल्लि शर्रिन। या मंय्यो तिल कसी-र बिल क़लील। या मंय्यो-ति मन स-अ-ल-हु। मंय्यो-ति मन-लम यस-अल-हु व मन-लम यारिफ़्-हु तहन्नु-नम मिन-हु व रहमतन। आ-तिनी बि-मस-अ-ल-ति इय्या-क जीम-आ ख़ैरिद्-दुनिया व जीम-आ ख़ैरिल आख़िरा। वसरिफ़् अन्नि बि मस-अ-लती इय्या-क जीम-आ शर्रिद्-दुनिया व शर्रिल-आख़िरा। फ़्-इन्न-हु ग़ै-रू मनकूसिम मा आतै-त व ज़िदनी मिन फ़ज़्लि-क या करीम।

'ख़ुदा के नाम से शुरू करता हूं जो रहमान और रहीम है। ऐ वह जिससे हर भलाई की उम्मीद रखता हूं और हर बुराई के वक़्त उसके ग़ज़ब से अमान चाहता हूं। ऐ वह जो थोड़े अमल पर ज़्यादा सवाब देता है, ऐ वह जो हर सवाल करने वाले को देता है, ऐ वह जो उसे भी देता है जो सवाल नहीं करता और उसे भी देता है जो तुझे नहीं पहचानता, अपनी रहमत व महरबानी की वजह से तू मुझे भी मेरे सवाल पर दुनिया व आख़िरत की सारी भलाईयां और नेकियां अता फ़रमा दे और दुनिया व आख़िरत की सारी बुराईयों को मुझ से मोड़ दे कि तू जिसको अता करेग उसमें कमी नहीं होगी और फिर अपने फ़ज़्ल से और इज़ाफ़ा कर दे, ऐ करीम ख़ुदा!"

रावी कहता है कि इसके बाद इमाम[अ॰] ने अपनी दाढ़ी को दाहिनी मुट्ठी में ले लिया और अपनी शहादत वाली उंगली को हिलाते हुए बड़े गिरये व ज़ारी की हालत में यह दुआ पढ़ीः

या ज़ल जला-लि वल इकराम। या ज़न ना-माई वल जूद। या ज़ल मन्नि वत्तौल। हर्रिम शै-ब-ति अलन नार।

तर्जुमाः *"ऐ साहिबे जलालत व बुर्ज़ुगी! ऐ नेमतों और करम के मालिक! ऐ एहसान व अता करने वाले! मेरे इन बालों को आग पर हराम फ़रमा दे!"*

पन्द्रह रजब का दिन

यह बड़ा ही मुबारक दिन है और इसके कुछ ख़ास आमाल हैं जो यह हैंः

1- ग़ुस्ल, 2- इमाम हुसैन[अ॰] की ज़ियारत, 3- नमाज़े सलमान, 4- अमले उम्मे दाऊद और यही इस दिन का खास अमल है जो हाजतों के पूरा होने, मुसीबतों के दूर होने और ज़ालिमों के ज़ुल्म से बचाव के लिए बहुत असरदार है। यह अमल इस तरह से हैः अमले उम्मे दाऊद करने के लिए 13, 14, 15 रजब को रोज़ा रखे और 15 रजब को ज़वाल के वक़्त ग़ुस्ल करे। ज़वाल के फ़ौरन बाद नमाज़े ज़ोहर व अस्र इस तरह बजा लाए कि रुकू व सजदों में ख़ौफ़ और आजिज़ी का इज़हार करे और ऐसी जगह पर हो जहां कोई उससे बात न करे। जब नमाज़ ख़त्म हो जाए तो क़िब्ला रूख़ होकर इस तरह अमल करे :-

सौ बार सूरए अलहम्द, सौ बार सूरए तौहीद और दस बार आयतल कुर्सी। इसके बाद यह सूरे पढ़े- सूरए अनआम, सूरए बनी इसराईल, सूरए कहफ़, सूरए लुक़मान, सूरए यासीन, सूरए साफ़्फ़ात, सूरए हा-मीम सजदा, सूरए हा-मीम-ऐन-सीन-क़ाफ़, सूरए दुख़ान, सूरए फ़त्ह, सूरए वाक़ेआ, सूरए मुल्क, सूरए नून, सूरए इन्शेक़ाक़ और उसके बाद क़ुरआन की आख़िरी सूरत तक लगातार पढ़े और फिर क़िब्ला रुख़ हो कर अपनी दुआएं मांगे।

दीनी तालीम दीनी परवरिश

■ डॉ. हिना बानो तबातबाई
लेक्चरर शिया पी.जी. कॉलेज, लखनऊ

एजूकेशन और परवरिश पर इन्सानी समाज की बुनियाद होती है मगर जो अहमियत इन दोनों को इस्लाम में मिली है उसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब रसूले अकरम[स०] पर 'वही' नाज़िल होना शुरू हुई तो वह भी इसी मक़सद के तहेत था। पहली वही सूरए इक़रा की शुरू की पांच आयतें थीं जिसमें पढ़ने-पढ़ाने का ज़िक्र है, क़लम की बात है और इल्म हासिल करने पर ज़ोर दिया गया है।

इल्म के मायने 'जानना' होते हैं। तालीम के मायने 'इल्म सिखाना' और तरबियत व परवरिश के मायने 'किसी चीज़ को धीरे-धीरे पाल-पोस कर परफ़ैक्शन की हद तक पहुंचाना' होते हैं। तरबियत व परवरिश करने वाले को 'रब' या 'मुरब्बी' कहते हैं।

अल्लाह तआला ने पहली 'वही' में अपने को मुअल्लिम न कह कर 'रब' यानी पालने वाले की हैसियत से पहचनवाया है। जिससे यह बात साफ़ है कि इस्लाम में इल्म सिर्फ़ फ़न का नाम नहीं है बल्कि इसका ताअल्लुक़ तरबियत व परवरिश से है जिससे शख़्सियत में बदलाव व निखार आ जाए।

इस तरह इस्लाम में एजूकेशन और तरबियत एक दूसरे से जुड़े हैं और यह सारी इन्सानियत की पूरी ज़िंदगी से जुड़ी हुई चीज़ है। इस्लाम ही वह दीन है जिसने यह नज़रिया दिया है कि बग़ैर अमल के कोई इल्म पूरा नहीं है। इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, "इल्म वह है जो तुम्हारे अमल से ज़ाहिर हो।"

फिर आपने फ़रमाया, "इन्सान अपनी ज़बान के पीछे छुपा होता है।"

चूंकि इन्सान की ज़बान उसकी पूरी पर्सनालिटी को सामने लाकर खड़ा कर देती है और पर्सनालिटी की तामीर ही तरबियत है। दूसरे अल्फ़ाज़ में हमारी ज़िंदगी और इस्लाम के नाम से होने वाली बातचीत ही इस टॉपिक का निचोड़ हो सकती है। औरत के लिए अलग-अलग वक़्तों में लेक्चर्स का इन्तेज़ाम किया जाए जहां वह आएं और अपने मसलों का हल मालूम करें। मर्दों को उनकी ज़िम्मेदारियां इस्लामी एतेबार से समझाई जाएं और औरतों को उनकी फ़ील्ड से रिलेटेड दीनी जानकारियां दी जाएं। इस्लामी तरबियत का सिस्टम सही मायनों में इसी तरह लागू हो सकता है और इस तरह समाज में आम ग़लत रस्मो-रिवाज को भी ख़त्म किया जा सकता है जिसकी वजह से आज हमारे नौजवान मज़हब से दूर हो रहे हैं, उनके सामने मज़हब की सही पिक्चर पेश की जाए।

बहेरहाल इस ज़माने में इस्लामी सिस्टम के बारे में सोचना भी बड़ी ग़लत बात है। मेरी दुआ है कि जिन ज़ेहनों में यह ख़्याल उभरा है, अल्लाह उनकी कोशिशों को पूरा करे।

इस्लामी एतेबार से अगर हम तरबियत के मायने व मफ़हूम को समझने की कोशिश करें तो हमें क़ुरआन के साथ-साथ मासूमीन[अ०] की हदीसों पर भी ग़ौर और अमल करना होगा। इमाम अली[अ०] का एक क़ौल है, "अपने आपको और अपनी औलाद को जहन्नम की आग से बचाओ।"

इसका मतलब यह है कि तरबियत की सबसे पहली ज़िम्मेदारी मां-बाप की होती है। इसलिए 'अपनी औलाद' कहा गया है। एक और जगह

دینی تربیت

पर रसूले ख़ुदा[स०] फ़रमाते हैं, ''अपनी औलाद पर करम करो और उसे अदब सिखाओ।''

इस हदीस से भी पहली स्टेज पर मां-बाप ही नज़र आते हैं। अगर हम यह चाहते हैं कि हमारी आगे की नस्ल की ज़िन्दगी और सोच में इस्लामी एहकाम व क़ानूनों का असर दिखाई दे तो इसके लिए सबसे पहला काम हमें यह करना होगा कि इस्लामी एहकाम की पाबंदी करें। अगर हमारे घरों में इस्लामी माहौल है जैसे नमाज़ की पाबंदी, क़ुरआन की तिलावत का चलन, हराम-हलाल में फ़र्क़, तहारत-निजासत का ख़्याल, बुर्ज़ुगों की इज़्ज़त, मां-बाप का एहतेराम, आइम्मा[अ०] की विलादत-शहादत के मौक़ो पर उनकी याद...तो यह नहीं हो सकता कि इस माहौल में पलने वाला शख़्स पूरी तरह से दीन के एहकाम और क़ानूनों से बाहर निकल जाए और उन पर अमल न करे। मैं इस बात को फिर कहना चाहूंगी कि इन सारी बातों के लिए पहले हमें क़दम बढ़ाना होगा जिस तरह से हमारी हिदायत के लिए 14 मासूमों[अ०] को आईडियल बनाकर भेजा गया ताकि आम इन्सान यह न कह सकें कि दीन के रास्ते पर चलना नामुमकिन है।

इन्सान ज़िंदगी के किसी हिस्से में भी चाहे तो दीन का रास्ता अपना सकता है लेकिन अमल से पहले इल्म की मंज़िल आती है। इस्लाम ख़ुदा के सामने तसलीम हो जाने का नाम है, तसलीम यक़ीन को कहते हैं, यक़ीन तसदीक़ को कहते हैं, तसदीक़ एतेराफ़ को कहते हैं, एतराफ़ फ़र्ज को पहचानने का नाम है और फ़र्ज़ अमल करके ही पूरा किया जा सकता है।

इमाम अली[अ०] की इस हदीस की रौशनी में हमें समझना चाहिए कि इस्लाम प्रेक्टिकल दीन है। इस्लाम इंसानियत का दीन है, जहां-जहां इंसानियत के तक़ाज़े पूरे होते हैं वहां-वहां इस्लामी क़ानून ज़िंदा है और जहां-जहां इंसानियत को क़त्ल किया जाता है वहां इस्लामी क़ानून लागू हो ही नहीं सकता। इस्लाम इंसानियत के फलने-फूलने और बाक़ी रखने के लिए है। इस्लाम इंसानियत को बचाने के लिए है। दुनिया की बनाई हुई मशीनें इंसान के जिस्म को तो कंट्रोल कर सकती हैं मगर आज तक कोई ऐसी मशीन नहीं बन सकी है जो इंसान के ख़्यालात और जज़्बात पर कंट्रोल कर सके। यह काम सिर्फ़ दीन का है जो इंसान के नफ़्स को क़ाबू में कर सकता है।

तिब्बे इमाम

■ राज़िया रिज़वी, लखनऊ

शहद अगर नहार मुहं इस्तेमान किया जाए तो बलग़म दूर करता है, मेदे को धोता है, ताक़त देता है, कब्ज़ को दूर करता है, बदन की रतूबत को दूर करता है, कुव्वते बाह को बढ़ाता है। दूध और शहद हज़ारो बूटियों का अर्क़ होता है। अगर सारी दुनिया के हकीम जमा होकर ऐसा अर्क बनाना चाहें तो नहीं बना पाएंगे। दूध और शहद में तरह-तरह के फायदे हैं।

असली शहद की पहचान है कि उसे सूघने से प्यास लगती है और अगर गर्मी महसूस हो तो ज़हरीला शहद है।

बदन को मोटा करने का तरीक़ा

जिस्म पर मालिश बदन को मोटा करती है।

बच्चों को अनार खिलाने से यह बहुत जल्द ताक़त पहुंचा कर बालिग़ और जवान करता है।

रिवायत में है कि सत्तू की ईजाद 'ख़ुदा की वही' की वजह से हुई है, इस से गोश्त बढ़ता है, हडडीयां मज़बूत होती है और चेहरे पर रौनक़ आती है। दूसरी जगह पर है कि सत्तू सत्तर तरह की बीमारियों को दूर करता है। जो शख़्स सत्तू को चालीस दिन तक खाए उसके दोनों कंधे मज़बूत हो जाएंगे।

याददाश्त तेज़ करने का तरीक़ा

(अ) नहार मुहं तीन तोले मुनक्क़े खाने से याददाश्त तेज़ होती है।

(ब) एक हिस्सा शहद, एक हिस्सा ज़ाफरान के साथ मिला लें। रोज़ाना सुबह नहार मुहं 9 माशा खा लिया करें। हाफ़ेज़ा ऐसा तेज़ हो जाएगा कि लोग जादूगर कहेंगे।

हफ़्ते में एक बार लहसुन खाने से रियाही दर्द से बचा जा सकता है।

इमाम[अ०] ने फ़रमाया है कि ज़ुकाम ख़ुदा के लश्करों में से एक लश्कर है। जिससे जिस्म की सारी गंदगियां दूर हो जाती हैं। कई रिवायतों में है कि तीन दिन तक इसका इलाज नहीं करना चाहिए।

केले के फ़ायदे

कब्ज़ को दूर करता है। केले में फाइबर भी होता है इसलिए इसे अपनी गिज़ा में शामिल करना चाहिए। मेदा भी ठीक रहता है। तबियत में अगर भारीपन रहता है तो इससे जल्द निजात पाने का तरीक़ा यह है कि केले का मिल्क शेक तैयार करें और उसमें शहद डाल कर पिएं, बड़ा फायदा पहुंचाता है।

दूध पूरे सिस्टम को ठीक रखता है। पोटेशियम एक अच्छी चीज़ है जो दिल की धड़कन को नार्मल करने में, दिमाग़ को ऑक्सीजन पहुंचाने में और जिस्म में पानी के बैलेन्स को बाक़ी रखने में बहुत फ़ाएदेमंद है। जब आदमी टेंशन का शिकार होता है तो ऐसी सूरत में केला बेहद मुफ़ीद है क्योंकि इसमें बड़ी मिक्दार में पोटेशियम होता है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर अ०

रजब की पहली तारीख़ वह मुबारक तारीख़ है जब इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० ने अपने नूरानी वुजूद से दुनिया को रौशन किया था।

परवरदिगार! हम इस मुबारक दिन के मौक़े पर तुझसे दुआ करते हैं कि हमें सीधे रास्ते की हिदायत करने वाले मुहम्मद अ० व आले मुहम्मद अ० पर दरूद भेज और हमारी आंखों से जिहालत के पर्दे हटा दे ताकि मारेफ़त के नूर के साथ हम तेरे पाक औलिया के रास्ते पर चल सकें।

इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० ने भी दूसरे इमामों और ख़ुदा के बुज़ुर्ग बंदों की तरह अपने इल्म व अमल से दीने इस्लाम की बेहतरीन ख़िदमत की। समाज में दीनी वेल्यूज़ और तालीमात का रिवाज, ग़लत नज़रियों पर तनक़ीद, अलग-अलग इल्मी व दीनी मैदानों में बेहतरीन शार्गिदों की तरबियत इस्लामी समाज के लिए इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० की ख़िदमतों का एक अहम हिस्सा है।

एक बहुत बड़े अहले सुन्नत स्कॉलर इब्ने हैसम इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० के बारे में कहते हैं, "इस अज़ीम इमाम और रहनुमा को बाक़िरुल उलूम यानी उलूम को चीरने वाले का नाम दिया गया है क्योंकि वह उलूम की पेचीदा गुत्थियां सुलझाते थे। उनका इल्म और अमल बेहद ज़्यादा और अख़्लाक़ बहुत ऊँचा था। आपने अपनी सारी ज़िंदगी ख़ुदा के रास्ते पर चलने में गुज़ार दी थी।

इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० ने क़ुरआने मजीद की तफ़सीर और उसकी हक़ीक़तों को बयान करने के बारे में बहुत ज़्यादा कोशिशें की थीं। इसीलिए क़ुरआन की आयतों की तफ़सीर के बारे में बहुत ज़्यादा रिवायतें नक़्ल हुई हैं।

इमाम बाक़िर अ० हमेशा फ़िक़्ह, हदीस और तफ़सीर को बयान करने में दो अहम उसूलों यानी क़ुरआन और सुन्नत पर ज़ोर देते थे और अपने सहाबियों से भी कहते थे कि जब भी मैं तुम्हारे सामने कोई हदीस बयान करूं तो जान लो कि इस हदीस का सोर्स ख़ुदावन्दे आलम की किताब, क़ुरआन है।

आपकी इमामत के शुरू के सालों में समाज के अंदर अक़्ली और थियालोजिकल बहसों की कोई जगह नहीं थी और दीन के बारे में गहरी छान-बीन को बिदअत समझा जाता था। ऐसे हालात में इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० ने अपने लेक्चर्स में अक़्ली बहसें शुरू कीं और लोगों को अलग-अलग इल्मों में ग़ौर करने की दावत दी। आप हक़ीक़तों को समझने में अक़्ल के रोल को बहुत अहम समझते थे। इस बारे में आपने फ़रमाया है, "ख़ुदा लोगों का उनकी अक़्ल के एतेबार से हिसाब करेगा।"

इमाम मुहम्मद बाक़िर अ० ने अपनी अठ्ठारह साल की इमामत में एक बहुत बड़े इल्मी मूवमेंट की बुनियाद रखी थी और अपने बेटे इमाम जाफ़र सादिक़ अ० की इमामत के ज़माने के लिए एक अज़ीम इस्लामी यूनिवर्सिटी की बुनियाद के रिसोंसेस पैदा

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०]

"जो भी ख़ुदा पर भरोसा करेगा दूसरे उसपर क़ाबू नहीं पा सकेंगे और जिसने भी गुनाह से ख़ुदा की पनाह मांगी वह किसी से हारेगा नहीं।"

"समझदारी और सब्र आलिम का लिबास है।"

"ख़ुदा की तरफ़ से नेमतों की ज़्यादती का सिलसिला उस वक़्त टूटता है जब बन्दे शुक्र करना छोड़ देते हैं।"

किए। आपका इल्मी सर्किल बहुत फैला हुआ था और सिर्फ़ थियालोजिकल और फ़िक़्ही इल्मों तक ही बंधा हुआ नहीं था। इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के एक ख़ास सहाबी और शार्गिद जाबिर बिन यज़ीद जाफ़ी कहते हैं, "मैं नौजवानी के ज़माने में इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के पास गया।" आपने पूछा, "कहां से और किस काम के लिए आए हो?" मैंने कहा, "कूफ़े का रहने वाला हूं और आपसे इल्म हासिल करने के लिए मदीना आया हूं।" इमाम[अ०] ने खुले दिल से मुझे अपनी शार्गिदी में ले लिया और मुझे एक किताब दी। इस तरह मैं उनके शार्गिदों में शामिल हो गया। किताबों में लिखा है कि जाबिर बिन यज़ीद जाफ़ी को सत्तर हज़ार हदीसें याद थीं।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] की ज़िंदगी का सबसे ख़ूबसूरत वक़्त वह होता था जब आप अपने ख़ुदा से राज़ो-नियाज़ कर रहे होते थे। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] फ़रमाते हैं कि एक रात मेरे वालिद काफ़ी देर तक घर नहीं आए। मैं बहुत परेशान हो गया और मस्जिद की तरफ़ चला गया। देखा कि मेरे वालिद मस्जिद के एक कोने में ख़ुदा से राज़ो-नियाज़ कर रहे हैं जबकि दूसरे लोग अपने-अपने घरों को जा चुके थे। वह अपने परवरदिगार की बारगाह में अपनी पेशानी ज़मीन पर रख कर कह रहे थे, "ऐ पाक परवरदिगार! मैंने तेरे सामने तेरा बन्दा होने की वजह से सजदा किया है। ख़ुदाया! मेरे नेक आमाल कुछ भी नहीं हैं। इसलिए तू मेरे इन आमाल को बढ़ा दे और क़यामत के दिन मुझे अपने अज़ाब से महफ़ूज़ रख और मुझे अपनी माफ़ी व बख़्शिश का हक़दार क़रार दे क्योंकि सिर्फ तू ही तौबा क़ुबूल करने, बख़्शने वाला और मेहरबान है।"

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] अपनी सख़ावत और बख़्शिश में मशहूर थे। आप हमेशा अपने घर वालों से कहते थे कि जो भी ज़रूरतमंद घर के दरवाज़े पर आए उसका एहतेराम किया जाए।

इमाम[अ०] के एक ख़ादिम ने रिवायत की है कि इमाम[अ०] के सहाबी और जानने वाले जब आपके पास आते थे तो आप उन्हें अच्छा खाना खिलाते थे और कभी उन्हें अच्छा लिबास भी दिया करते थे और कुछ वक़्तों में पैसों के ज़रिए भी उनकी मदद करते थे। ख़ादिम आगे कहता है कि एक दिन मैंने इमाम[अ०] से इस बारे में बात की और कहा कि आप अपनी सख़ावत और बख़्शिश को कुछ कम कर दीजिए क्योंकि माली हालत कुछ ज़्यादा अच्छी नहीं है लेकिन इमाम[अ०] ने उसके जवाब में कहा कि दुनिया में अपने भाईयों से मुलाक़ात, उनको चीज़ें देने और नेकी व भलाई करने से बढ़ कर कोई अच्छी चीज़ नहीं है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] हमेशा अपने चाहने वालों को इस बात से ख़बरदार करते रहते थे कि कहीं वह हक़ के रास्ते की सख़्तियों की वजह से इस रास्ते से बहक न जाएं। आप फ़रमाते थे कि हक़ और हक़ीक़त के रास्ते में साबित क़दम रहो क्योंकि अगर किसी ने मुश्किलों की वजह से हक़ का इन्कार किया तो वह 'बातिल रास्ते में' ज़्यादा मुश्किलों से दो चार हो जाएगा। इमाम के मुताबिक़ हक़ का रास्ता रौशन और सीधा रास्ता है। अगर इन्सान इस सीधे रास्ते से हट गया तो वह बातिल की भूल-भुलैय्यों में भटक कर और बड़ी-बड़ी मुश्किलों का शिकार हो जाएगा।

एक जगह आप फ़रमाते हैं कि रसूले ख़ुदा[अ०] ने फ़रमाया है कि अगर मेरी उम्मत के दो ग्रुप नेक होंगे तो मेरी पूरी उम्मत नेक होगी और अगर यह दो ग्रुप बुरे हो गए तो मेरी सारी उम्मत को बुराईयों की तरफ ले जाएंगे। उनमें से एक ग्रुप फ़क़ीह और स्कॉलर्स का ग्रुप है और दूसरा ग्रुप हाकिमों और हुकूमत करने वालों का है।

बनी उमय्या समाज में इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] की मक़बूलियत से हमेशा परेशान और डरे हुए रहते थे। इमाम[अ०] के ज़माने में कई उमवी हाकिम गुज़रे जिनमें से हिशाम बिन अब्दुल मलिक ने आप के साथ सबसे ज़्यादा सख़्तियां बरतीं। इसके मुक़ाबले में इमाम[अ०] ने भी ख़ामोशी का रास्ता नहीं चुना और डर के माहौल के बावजूद ख़ुद हाकिमों के सामने भी उनकी ग़ल्तियों और ज़ुल्म को बयान किया।

हम इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के यौमे विलादत की एक बार फिर मुबारकबाद के साथ अपने इस आर्टिकिल को यहीं पर ख़त्म करते हैं।

मुराक़ेबा और मुहासेबा

■ आयतुल्लाह मकारिम शीराज़ी

उलमा ने अपनी किताबों में मुराक़ेबा और मुहासेबा पर बहुत ताकीद की है और यक़ीनन इसके बग़ैर कोई भी शख़्स रूहानी और अख़्लाक़ी कमाल तक नहीं पहुंच सकता।

मुराक़ेबा यानी अलग-अलग आमाल और कामों को किए जाने से पहले उन पर पूरा ध्यान देना।

मुहासेबा यानी इन कामों को करने के बाद इनके रिज़ल्ट्स और असर पर ग़ौर करना।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि इन दोनों स्टेजेस में से किसी एक स्टेज से ज़रा सी भी ग़फ़लत और बे-ध्यानी इन्सान की आख़िरत को बर्बाद कर देती है और फिर इन्सान उसके बाद इस बर्बादी से बाहर नहीं निकल पाता।

इस सूरत में रूह की हालत बिल्कुल इन्सान के जिस्म की तरह होती है। जिस तरह इन्सान अपने जिस्म की सलामती और हिफ़ाज़त के लिए मजबूर है कि अलग-अलग एहतियाती क़दम उठाए, ऐसे माहौल में रहने से पहले ग़ौर करे जहां अलग-अलग तरह की बीमारियां पैदा होने का ख़तरा हो, कोई चीज़ खाने से पहले उससे होने वाले नुक़सानों की तरफ़ ध्यान हो। इसी तरह कभी-कभी इन्सान मजबूर हो जाता है कि बीमारियों से बचने के लिए टीके लगवाए, कभी किसी ख़ास खाने से परहेज़ करे और कभी-कभी अपनी मेडिकल जांच भी कराए और अगर डाक्टर किसी बीमारी का पता लगा ले तो उसका इलाज कराए। साथ ही एक ख़ास वक़्त तक आराम भी करे ताकि उसका जिस्म दोबारा अपनी असली हालत पर वापस आ सके। इसी तरह अख़्लाक़ी बुराईयों से जंग करने और रूह को महफ़ूज़ रखने के लिए भी ऊपर बताए गए रास्ते पर चलना बहुत ज़रूरी है।

वैसे इन्सान अगर अख़्लाक़ी सिफ़तों और अच्छाईयों से ख़ुद को सजाना चाहता है तो उसके लिए नीचे दी गई इन बातों पर अमल करना ज़रूरी है:-

1- हमेशा अपना ख़्याल रखे और अपनी तरफ़ ध्यान दे। हमेशा यह ज़ेहन में रखे कि हर हाल में उससे पहले ख़ुदा उसके कामों को देख रहा है। क़ुरआने मजीद में आया है, "क्या वह ज़ात जो हर नफ़्स के आमाल की निगरां है।" (1)

इस आयत से यह समझ में आता है कि ख़ुदा उस इन्सान की तरह है जो हमेशा किसी शख़्स के सारे कामों को देखता रहता है।

एक दूसरी जगह क़ुरआने मजीद में है, "अल्लाह तुम सबके आमाल का निगरां है।" (2)

रसूले अकरम[स] की एक हदीस है, "ख़ुदा की इबादत इस तरह करो जैसे उसको देख रहे हो और अगर तुम उसको नहीं देख रहे हो तो वह तुम्हें देख रहा है।" (3)

ग़ौर करने की बात यह है कि यह हदीस, 'एहसान' की तफ़सीर में नक़ल हुई है, "बेशक अल्लाह अदल, एहसान और क़िराबतदारों के हक़ों का हुक्म देता है।" (4)

2- इन्सान को चाहिए कि अपने हर काम और बातचीत से पहले उसकी वजह, रिज़ल्ट और उसके अंजाम पर ग़ौर करे। जैसा कि हदीस में आया है, "इन्सान के किसी काम को करते वक़्त वह काम चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, तीन नाम-ए-आमाल खुल जाते हैं ताकि उसकी हरकतों को लिखा जा सके। पहला "क्यों" दूसरा "कैसे" और तीसरा "किसके लिए"। (5)

यानी पहला नाम-ए-आमाल किसी काम को करने की वजह, दूसरा उस काम की क्वालिटी और तीसरा उस काम का मक़सद लिखे जाने के लिए। यक़ीनी तौर पर यह ऐसा नुस्ख़ा है जो इन्सान को सारे बुरे कामों को करने से रोकता रहेगा।

3- हर रोज़ इन्सान के लिए ज़रूरी है कि अपने रोज़ाना के कामों के करने के बाद अपने इन कामों का गहराई से हिसाब लगाएं। अगर कोई

أخلاق

सच्ची कहानियाँ

उम्मीद की किरन

■ अख़तर अब्बास जौन

सहाबियों ने चारों तरफ़ से उन्हें घेर रखा था, उनके चेहरों से उनके दिल का हाल मालूम हो रहा था, उनकी ज़बानें ख़ामोश थीं लेकिन उनके चेहरे बोल रहे थे, इसी बीच दिलों को छू जाने वाली एक आवाज़ गूंजी और लोग उसकी तरफ़ खिंचे चले गए।

लोग इंतिज़ार में थे कि आज हिकमत की ज़बान पर कौन सा कलाम जारी होता है, निगाहें उन होठों पर टिकी हुई थीं जो बोलते थे तो रसूल[स०] के कलाम की याद दिलाते थे।

वह बोलने वाला कोई और नहीं था सिवाए रसूल[स०] के इल्म और हिकमत के वारिस, हज़रत अली इब्ने अबी तालिब थे।

हज़रत अली[अ०] ने एक सवाल किया, तुम्हारी निगाह में कुरआन की कौन सी आयत सबसे ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली है? सब लोग सर झुकाए सोचने लगे, कुछ लोग एक-दूसरे से चुपके-चुपके सवाल कर रहे थे कि इस सवाल का जवाब कौनसी आयत है।

वहां मौजूद लोगों में से एक ने अपनी ज़बान खोली और कहा, मेरे ख़्याल में कुरआन की सबसे ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली आयत यह है, "अल्लाह इस बात को माफ़ नहीं कर सकता कि उसका शरीक क़रार दिया जाए और इसके अलावा जिसको चाहे बख़्श सकता है।" (1)

इमाम ने जवाब दिया, "हां! यह आयत उम्मीद दिलाने वाली है लेकिन सबसे ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली नहीं है। इमाम के दूसरे सहाबी ख़ड़े हुए और कहा, या अली यह वाली आयत हो सकती है, "जिसने बुरा काम (गुनाह) किया और अपने ऊपर जुल्म किया उसके बाद अल्लाह की बारगाह में अस्तग़फ़ार व तौबा करे तो वह अल्लाह को माफ़ करने वाला और मेहरबान पाएगा।" (2)

इमाम ने फ़रमाया, "यह आयत भी इंसान को उम्मीद दिलाने वाली है लेकिन सबसे ज़्यादा उम्मीद दिलाने वाली नहीं है।"

एक दूसरे शख़्स ने एक और आयत की तिलावत की, "और वह लोग जो बुरे काम करते हैं या अपने ऊपर जुल्म करते हैं वह अल्लाह को याद करें और अपने गुनाहों की माफ़ी चाहें, और अल्लाह के सिवा कौन है जो गुनाहों को माफ़ करता है।" (3)

इमाम ने फ़रमाया, "यह आयत भी उम्मीद दिलाने वाली है लेकिन यह वह आयत नहीं है।"

एक दूसरे किनारे से एक और शख़्स ख़ड़ा हुआ और उसने यह आयत पढ़ी, "कह दो ऐ मेरे बंदों जिसने (गुनाह करके) अपने ऊपर जुल्म किया वह अल्लाह की रहमत से मायूस न हो, बेशक वह सारे गुनाहों को माफ़ करने वाला है। (4)

हज़रत अली[अ०] ने उस शख़्स के जवाब में भी वही जुमला कहा जो इससे पहले कहा था। इमाम से यह जवाब सुनने के बाद लोग ख़ामोश हो गए। हज़रत अली[अ०] ने लोगों की ख़ामोशी को देखकर फ़रमाया, "ऐ मुसलमानों क्या हो गया है कि सबने ख़ामोशी इख़्तियार कर ली।"

लोगों ने कहा कि जो कुछ हमने कहा उसके अलावा हमें कुछ नहीं मालूम। इमाम ने फ़रमाया, रसूल[स०] से सुना है कि सबसे ज़्यादा उम्मीद वाली आयत यह है, "रसूल आप दिन के दोनों हिस्सों में और रात गए नमाज़ क़ायम करें। नेकियां बुराईयों को ख़त्म करने वाली हैं। यह ख़ुदा का ज़िक्र करने वालों के लिए नसीहत है।" इसके बाद रसूल[स०] ने फ़रमाया, या अली! क़सम है उस ज़ात की जिसने मुझे बशारत देने और डराने वाला बनाकर भेजा, जब तुममें से कोई वुज़ू करके उठता है तो उस वक़्त उसके जिस्म के हिस्सों से गुनाह झड़ जाते हैं और जब अपने चेहरे और दिल को अल्लाह की तरफ़ करके नमाज़ पढ़ता है और नमाज़ को पूरा करता है तो उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं और ऐसे हो जाता है जैसे अभी-अभी वह अपनी मां के पेट से पैदा हुआ है और दो पंजगाना नमाज़ के बीच उससे गुनाह सरज़द हों तो नमाज़ की वजह से उसे माफ़ कर दिया जाता है। उसके बाद फिर फ़रमाया, "ऐ अली! हमारी उम्मत के लिए पंजगाना नमाज़ ऐसी नहर की तरह है जो किसी के घर के सामने हो, उसके बदन में कोई गन्दगी लगी हो तो वह हर दिन पांच बार अपने जिस्म को धोए तो फिर क्या उसके जिस्म में कोई गन्दगी बाक़ी रहेगी।"

1-निसा/48, 2-निसा/110, 3-आले इमरान/35 4-ज़ुमर/53

(तफ़सीरे मजमऊल बयान, सूरए हूद/114)

गुनाह या ग़लती उससे हो गई तो जल्दी से जल्दी उसके असर को अपनी रूह व दिल से मिटाने की कोशिश करे ताकि किया गया गुनाह उसके दिल में जगह न बना ले। इसका तरीक़ा यह है कि पहले तो जो काम किया है उसके बुरे रिज़ल्ट्स पर ग़ौर करे, और अपने ऊपर लानत-मलामत करे और दोबारा उस काम को न करने का पक्का इरादा करे। इसी के साथ जिस मिक़दार में वह काम किया था उसी मिक़दार में नेक काम भी करे ताकि उसके दिल की नूरानियत और रूहानी पाकीज़गी एक बार फिर अपनी असली हालत पर वापस आ जाए और उस शख़्स की तरह जो जिस्मानी बीमारी से उठता है एक टाईम तक अपने ईमान और रूह की मज़बूती के लिए कोशिश करता रहे। (रिवायतों में 'तौबा' इसी को कहा गया है वरना तौबा इसके अलावा और कुछ नहीं है)।

मुहासेबा यानी किए गए कामों को ख़ुद को पाक करना इतना ज़रूरी है कि रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते थे, "मैं हर रोज़ सत्तर बार तौबा व इस्तग़फ़ार करता हूं।" (6)

ध्यान रहे कि रसूले इस्लाम[स०] की तौबा गुनाहों की वजह से नहीं है बल्कि ख़ुदा की इताअत की वजह से है।

1-सूरए राद/33, 2-सूरए निसा/1, 3-बिहारुल अनवार, 72/279, 4- , 5-अहयाउल उलूम व मुहज्जतुल बैज़ा, 6-मुहज्जतुल बैज़ा, 2/315

क़ुरआन और हम

■ फ़साहत हुसैन

हर मुसलमान को क़ुरआन से मुहब्बत होती है और जो भी क़ुरआन पढ़ना जानता है वह उसे पढ़ने और समझने की कोशिश करता है और जो नहीं जानता है वह कोशिश करता है कि किसी भी तरह से पढ़ना सीख ले। लेकिन इसके बाद भी यह देखने में आता है कि हमारे बीच क़ुरआन को जो इ़ज़्ज़त और मुक़ाम मिलना चाहिए वह अभी नहीं मिला है और हमारी ज़िंदगी में उसकी जो हैसियत होना चाहिए थी वह नहीं है। इसकी वजह शायद यह है कि हमें अच्छी तरह से नहीं मालूम है कि क़ुरआन क्या है या क्यों नाज़िल हुआ है और क़ुरआन के बारे में हमारी ज़िम्मेदारियां क्या हैं? और जब तक यह बातें मालूम न हों हम क़ुरआन को उसका सही मुक़ाम नहीं दे सकते।

आइए! इन सवालों का जवाब हम ख़ुद क़ुरआन से पूछते हैं।

बहुत सी आयतों में क़ुरआन ने ख़ुद को पहचनवाया भी है और हमारी ज़िम्मेदारी भी बताई है। हम एक-एक करके यह आयतें पेश कर रहे हैं:

क़ुरआन क्या है और क्यों नाज़िल हुआ है?

क़ुरआन मुत्तक़ी और परहेज़गार लोगों की हिदायत के लिए आया है।[1]

अगर हम किसी नए शहर या किसी नई जगह पर जाएं तो हमारे पास उस शहर या उस जगह की गाइड-बुक होना चाहिए वरना हम शहर में भटकते रह जाएंगे और जिस जगह पर जाना चाहते हैं नहीं पहुंच पाएंगे। इसीलिए ख़ुदा ने हमें हमें इस दुनिया में भेजने के बाद हमें एक गाइड-बुक दी है जिसका नाम

है नहीं पहुंच पाएंगे। इसीलिए ख़ुदा ने हमें इस दुनिया में भेजने के बाद एक गाईड-बुक दी है जिसका नाम क़ुरआन है ताकि हम हर-हर क़दम पर उसको देखते रहें और यह मालूम करते रहें कि हमें अपनी ज़िंदगी में क्या-क्या करना है।

क़ुरआन ने ज़मीन-आसमान, समन्दरों और जानवरों वग़ैरा के बारे में भी बहुत सी बातें बताई हैं लेकिन उन सब को बताने का असली मक़सद इन्सान को ख़ुदा की तरफ़ ध्यान दिलाना और उसकी हिदायत करना है।

इस आयत के बारे में सवाल यह है कि जो ख़ुद ही मुत्तक़ी और परहेज़गार है उसे हिदायत देने का क्या फ़ायदा?

जवाब : लोग दो तरह के होते हैं :

1- जो चाहते हैं कि हिदायत पा जाएं और सही रास्ते पर आ जाएं और उन्हें जब भी कोई अच्छी बात नज़र आती है तो वह अपनी ग़लती मान लेते हैं और सच्चाई का रास्ता अपना लेते हैं।

2- वह लोग जो हटधर्मी होते हैं और किसी भी तरह अच्छी बात को मानने पर तैयार नहीं होते हैं।

आयत में मुत्तक़ी और परहेज़गार लोगों से मुराद पहले वाले लोग हैं। जिस तरह बारिश का पानी पेड़-पौधों और खेती के लिए अच्छा होता है लेकिन बंजर ज़मीन पर उस बारिश के पानी का कोई फ़ायदा नहीं होता और उसमें से पेड़ नहीं उगता। लेकिन अच्छी ज़मीन बारिश के बाद खूबसूरत हो जाती है और उसमें पेड़-पौधे उग जाते हैं क्योंकि उसमें बारिश के पानी से पेड़-पौधे उगाने की सलाहियत होती है। इसी तरह क़ुरआन उन लोगों को हिदायत देता है जिन लोगों में उससे हिदायत हासिल करने की सलाहियत होती है और वह उससे हिदायत लेना चाहते हैं।

क़ुरआन के बारे में हमारी ज़िम्मेदारी

1-"क़ुरआन ठहर-ठहर का बाक़ायदा पढ़ो।" [2]

"जिस क़द्र हो सके, तिलावत करो।" [3]

इन आयतों में क़ुरआन को पढ़ने और उसकी तिलावत

करने का हुक्म दिया गया है क्योंकि क़ुरआन से नज़दीक होने के लिए सबसे पहला काम उसकी तिलावत करना है। आयत में कहा जा रहा है कि जितना हो सके तिलावत करो। इससे पता चलता है कि ज़रूरी नहीं है कि हर रोज़ आधा पारा या एक पारा पढ़ा जाए बल्कि इन्सान जितना क़ुरआन इत्मिनान और सुकून के साथ पढ़ सकता हो उतना पढ़े। जैसा कि देखा गया है कि जब कुछ लोगों को यह एहसास होता है कि क़ुरआन की तिलावत करना चाहिए तो वह जल्दबाज़ी में ज़्यादा-ज़्यादा क़ुरआन पढ़ना शुरू कर देते हैं और फिर कुछ ही दिनों के बाद छोड़ देते हैं। क़ुरआन इससे मना कर रहा है और कह रहा है कि जितना हो सके उतनी तिलावत किया करो क्योंकि जो काम कम किया जाए और हमेशा किया जाए वह उस काम से अच्छा होता है जो ज़्यादा किया जाए और कभी-कभी किया जाए।

2- "क्या यह लोग क़ुरआन में ग़ौर नहीं करते हैं कि अगर वह ख़ुदा के अलावा किसी और की तरफ़ से होता तो उसमें बड़ा इख़्तेलाफ़ होता।" [4]

यह आयत उन सब लोगों को बुरा कह रही है जो क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते हैं।

यूँ तो क़ुरआन हर ऐतबार से मोजेज़ा है लेकिन इस आयत में क़ुरआन के मोजेज़ा होने का एक एंगिल यह बयान किया जा रहा है कि अगरचे क़ुरआन 23 साल में धीरे-धीरे पैग़म्बरे ख़ुदा[स०] पर नाज़िल हुआ है और उसमें इबादत, अख़्लाक़, समाजियात, आख़िरत, एहकाम, ज़मीन व आसमान वग़ैरा के बारे में बहुत सी आयतें हैं लेकिन इन आयतों में कहीं भी एक दूसरे से टकराव नहीं है। हालांकि अगर यह किसी आदमी का कलाम होता तो इसमें टकराव पाया जाता क्योंकि आम आदमियों की मालूमात जैसे-जैसे बढ़ती जाती हैं उनके नज़रिए भी बदलते जाते हैं और इस तरह उनके नए नज़रियों का पिछले नज़रियों से टकराव पैदा हो जाता है लेकिन क़ुरआन में ऐसा नहीं है।

इस आयत से यह पैग़ाम मिलते हैं:

(A) लोगों की ज़िम्मेदारी है कि वह क़ुरआन और दीन के बारे में सोचें, ग़ौर व फ़िक्र करें और सिर्फ़ कही सुनी बातों पर अमल न करें।

(B) कुछ लोग समझते हैं कि क़ुरआन हमारी समझ में नहीं आ सकता है लेकिन यह आयत सबसे कह रही है कि क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र करो। इसका मतलब है कि अगर हम ग़ौर करें तो हम क़ुरआन को समझ सकते हैं क्योंकि यह हमारे ही लिए नाज़िल हुआ है।

3- "और हमने क़ुरआन को नसीहत के लिए आसान कर दिया है तो क्या कोई नसीहत लेने वाला है।" [5]

इस आयत में भी यही कहा जा रहा है कि ख़ुदा ने क़ुरआन को आसान बनाकर भेजा है और नसीहत लेने वाले इससे नसीहत ले सकते हैं।

क़ुरआन से नसीहत लेने का मतलब यह है कि जब हम क़ुरआन पढ़ें तो यह न समझें कि यह आयत किसी पिछली क़ौम के बारे में थी और हमारा इससे कोई मतलब नहीं है। नहीं बल्कि क़ुरआन हर ज़माने के लिए है और उसका मक़सद सिर्फ़ कहानियां सुनाना नहीं है बल्कि इसके वाक़ेआत का एक मक़सद होता है जिसकी तरफ़ हमें ध्यान देना चाहिए और उनसे नसीहत हासिल करना चाहिए। जैसे जनाबे यूसुफ़[अ०] का वाक़ेआ पढ़ते वक़्त हमें उससे यह नसीहत लेना चाहिए कि जिस तरह जनाब यूसुफ़[अ०] ने गुनाह से बचना चाहा तो ख़ुदा ने उनकी मदद की उसी तरह अगर हम भी गुनाह से बचना चाहें तो ख़ुदा हमारी भी मदद करेगा और ऐसे हालात में भी गुनाह से बचा जा सकता है वग़ैरा।

4- "यह जो किताब हमने नाज़िल की है बड़ी बरकत वाली किताब है। इसलिए इस पर अमल करो और तक़वे का रास्ता चुनो, शायद तुम पर रहम किया जाए।" [6]

इस आयत में ख़ुदा हमको क़ुरआन में बताई हुई बातों पर अमल करने का हुक्म दे रहा है। इसका मतलब है कि क़ुरआन सिर्फ़ तिलावत करने की किताब नहीं है बल्कि यह हमारी ज़िंदगी का सिस्टम बयान करता है जिस पर हमें अमल करना चाहिए।

मुबारक का मतलब यह है कि ज़माना जितना भी आगे बढ़ता जाएगा क़ुरआन का फ़ायदा और असर कभी ख़त्म नहीं होगा, वह पुराना नहीं होगा और हर ज़माने के लोग चाहे कितनी ही तरक़्क़ी क्यों न कर जाएं वह उनकी हिदायत करता रहेगा।

इन चारों आयतों में ग़ौर करने से समझ में आता है कि क़ुरआन के बारे में हमारी ज़िम्मेदारी की चार स्टेजेस हैं :

1- क़ुरआन की तिलावत करना।

2- इसमें ग़ौर व फ़िक्र करना।

3- इससे नसीहत लेना।

4- इस पर अमल करना।

जब यह चारों स्टेजेस पूरी हो जाएंगी तभी हम क़ुरआन के बारे में अपनी ज़िम्मेदारी अदा कर पाएंगे। ख़ुदावन्दे आलम से दुआ है कि वह हमें क़ुरआन को समझने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए...

1-सूरए बक़रा/2, 2-सूरए मुज़म्मिल/4, 3- सूरए मुज़म्मिल/20, 4-सूरए निसा/82, 5-सूरए क़मर/17, 6-सूरए अनआम/155

Recipe

कमाल का राइस

चावल ज़्यादातर लोगों की डाइट का अहम हिस्सा है। अगर आपने चावल को अलग-अलग तरीक़े से बनाना सीख लिया तो तय है कि आपकी कुकिंग स्किल की तारीफ़ करते-करते लोग थकेंगे नहीं।

आज बनाना सीखिए, चावल से बने दो लज़ीज़ डिश।

पुदीना पुलाव

- बासमती चावलः 1 कप
- पानीः 2 कप
- प्याज़ (लम्बाई में कटी हुई): 1
- नमकः टेस्ट के हिसाब से
- तेज़ पत्ताः 2
- बटर या घीः 2 चम्मच
- भुना हुआ काजूः 1/4 कप (गार्निशिंग के लिए)

पेस्ट बनाने के लिए

- पुदीनाः 1/2 गुच्छा
- हरा धनियाः 1/4 कप
- अदरकः एक इंच का टुकड़ा
- हरी मिर्चः 2
- दालचीनीः 1 टुकड़ा
- लौंगः 1

(पुदीना और धनिया को धो लें और दूसरी चीज़ों को मिलाकर पेस्ट तैयार कर लें।)

तरकीबः

बासमती चावल को पानी में डुबोकर आधे घंटे के लिए छोड़ दें। चावल को पानी से निकालकर सुखा लें। कुकर या कड़ाही में थोड़ा-सा बटर या घी डालें। जब बटर या घी पिघल जाए तो उसमें तेज़पत्ता डालें और एक-दो मिनट तक पकने दें। अब तैयार पेस्ट को कुकर में डालें और लगभग दो तीन मिनट तक भूनें। अब कुकर में चावल डालें और तब तक भूनें, जब तक कि चावल सभी मसालों में अच्छी तरह से मिक्स न हो जाए। अब ज़रूरत के हिसाब से पानी डालें और चावल को पकाएं। एक अलग फ्राईंग पैन में थोड़ा-सा बटर डालकर काजू को भून लें। अब उसी फ्राईंग पैन में प्याज़ को ट्रांस्पेरेंट होने तक भूनें। तैयार चावल को काजू और भुने हुए प्याज़ से गार्निश करें और दही वाले सलाद के साथ सर्व करें।

थाई मसाला राइस

- बासमती चावल (पका हुआ): 3 कप
- बेबी कॉर्न (बारीक कटा): 4
- शिमला मिर्च (बारीक कटी): 1
- करी पेस्ट (लाल या हरा): 2 चम्मच
- हरी मिर्च (बारीक कटी): 2
- हरी प्याज़ (बारीक कटी): 6
- सोया सॉसः 2 चम्मच
- तेलः 1 चम्मच
- नमक और काली मिर्च पाउडरः ज़ाएक़े के हिसाब से

तरकीबः

कड़ाही में तेल गर्म करें और बेबी कॉर्न व शिमला मिर्च को 2-3 मिनट तक भूनें। कड़ाही में करी पेस्ट, मिर्च और हरा प्याज़ डालें। थोड़ी देर भूनें और उसमें चावल, सोया सॉस, नमक और काली मिर्च पाउडर को अच्छी तरह से मिला दें। गरमागरम सर्व करें।

■ बाक़िर ज़ैदी

इमाम मुहम्मद तक़ी अ0

इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] 15 रजब जुमे के दिन 195 हिजरी में मदीने में पैदा हुए थे। आपके वालिद का नाम इमाम अली रज़ा[अ०] और मां का नाम सबीका ख़ातून था।

आप[अ०] की इमामत का दौर अब्बासी ख़लीफ़ा वाला दौर है। मामून रशीद (193 से 218), मोतसिम (218 से 228) दोनों अब्बासी ख़लीफ़ाओं ने इमाम[अ०] को मदीने से बग़दाद बुलाया और वही सियासत जो मामून ने आप[अ०] के वालिद इमाम रज़ा[अ०] के साथ की थी वही आपके साथ भी की यानी इमाम[अ०] को मदीने से बुलाकर अपनी आंखों के सामने रखा ताकि आपके सब कामों, आपके मिलने जुलने वालों और आने-जाने पर नज़र रखी जा सके और इमाम[अ०] और उम्मत के बीच के रिश्ते को तोड़ा जा सके।

आपके ज़माने में होने वाले इंक़ेलाब

आपके ज़माने में कई एक इंक़ेलाब बरपा हुए जिनकी लीडरशिप अलवियों के पास थी। इनमें से दो मूवमेंट अहम हैं:-

1-अब्दुल रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उमर बिन अली बिन अबी तालिब जिन्होंने यमन के इलाक़े में इंक़ेलाब बरपा किया। यह इंक़ेलाब वहां के बदकिरदार हाकिमों के ख़िलाफ़ था और उसका नारा था 'आले मुहम्मद की मर्ज़ी के लिए'। लोगों ने इस दावत को क़ुबूल किया और अब्दुल रहमान की बैअत कर ली यहां तक कि मामून एक बहुत बड़ा लश्कर भेजने पर मजबूर हो गया।

2- दूसरा इंक़ेलाब मुहम्मद बिन अलक़ासिम बिन अली बिन उमर बिन अली बिन हुसैन बिन अली बिन अबी तालिब ने तालिक़ान के इलाक़े में बरपा किया था।

इन मूवमेंट्स के लीडर्स के नारों से पता चलता है कि वह सब हुकूमत को इमामों[अ०] का हक़ समझते थे। इसलिए इस हक़ को इमाम तक पहुंचाने के लिए जंग कर रहे थे और इसीलिए मामून ने इमाम रज़ा[अ०] और इमाम तक़ी[अ०] और मामून के बाद मोतसिम ने भी इमाम तक़ी को मदीने से बुलाकर बग़दाद में रखा ताकि आपकी सारी सरगर्मियों पर नज़र रखके आपको इन मूवमेंट्स से दूर रखा जा सके लेकिन इमाम[अ०] ने इन सारी रुकावटों के बावजूद एक ऐसा सिस्टम बनाया जो ख़ुफ़िया तौर पर काम कर रहा था।

आपकी शादी

मामून इमाम[अ०] को अपनी निगाहों के सामने रखने पर ही चुप नहीं बैठा बल्कि उसने अपनी

बेटी उम्मे फ़ज़ल की शादी इमाम[अ०] के साथ कर दी ताकि इमाम[अ०] की सारी सरगर्मियां यहां तक कि घर के अंदर की बातें भी ख़लीफ़ा के सामने रहें।

जब मामून ने अपनी बेटी की शादी आपसे करने का एलान किया तो बनी अब्बास ने इस पर ऐतराज़ किया। मामून ने सब को बुलाया और इस ऐतराज़ के जवाब देने और इमाम को अपनी बेटी के शौहर के तौर पर क़ुबूल करने के लायक़ साबित करने के लिए सारे उलमा को दावत दी। यहया बिन अकतम जो उस वक़्त सबसे बड़ा आलिम था उसे भी दावत दी गई और इमाम[अ०] से सवाल किए गए। आप[अ०] के जवाब सुनकर सबने कह दिया कि आप ही इल्मी मैदान में सबसे आगे हैं।

मदीना वापसी

इसके बाद आप कुछ दिनों के लिए मदीने वापस चले गए। वहां से आपने अपने बनाए हुए सिस्टम की नई छानबीन की जो सारी इस्लामी दुनिया में उस वक़्त फैला हुआ था। आप इसी सिस्टम के ज़रिए अपने मानने वालों की सारी मुश्किलों को हल करते थे।

नीचे पेश की जा रही रिवायतों से हमें अंदाज़ा होगा कि इमाम[अ०] ने किस तरह हालात के तहेत अपनी सरगर्मियों को ख़ुफ़िया तौर पर जारी रखा हुआ था।

इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०]:

"अगर जाहिल चुप रहे तो लोग इख़्तेलाफ़ न करें।"

"जिसने अपने भाई को अकेले में नसीहत की उसने उसे ज़ीनत बख़्शी और जिसने उसे सबके सामने नसीहत की उसने उसे ज़लील किया।"

इमाम[अ०] ने अपने हाथ से यह ख़त अपने बेहतरीन सहाबी अली बिन मेहज़ियार के लिए लिखा था:-

"अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं जो रहमान व रहीम है। ऐ अली! ख़ुदा तुम्हें जज़ाए ख़ैर दे और तुम्हें अपनी जन्नत में जगह दे, तुम्हें दुनिया व आख़िरत में रुसवाई से बचाए, तुम्हें हमारे साथ महशूर करे! ऐ अली! मैंने ख़िदमत, नसीहत, इताअत, इज़्ज़त और जो काम तुम पर वाजिब थे उन के ज़रिए तुम्हें आज़माया है। बस अगर मैं यह कहूं कि मैंने तुम जैसा कोई शख़्स नहीं देखा तो मुझे उम्मीद है कि यह बात सच्ची होगी। ख़ुदा तुम्हें जन्नत में जगह दे। तुम्हारा मुक़ाम और सर्दी-गर्मी, दिन-रात में तुम्हारी ख़िदमत मुझसे छुपी नहीं हैं। मैं ख़ुदा से दुआ करता हूं जब ख़ुदा सारी मख़लूक़ को जमा करे तो तुम्हें ऐसी रहमत अता करे जिस पर तुम रश्क करो और ख़ुदा दुआ का सुनने वाला है।[1]

इस हदीस से पता चलता है कि इमाम[अ०] ने अली बिन मेहज़ियार को कुछ अहम कामों के करने पर सराहा और माना कि उन्होंने हर हाल में इमाम का साथ दिया है। इससे साबित होता हे कि अली बिन महेज़ियार ख़ुफ़िया तौर पर इमाम के लिए काम करते थे और इसीलिए इमाम ने उन्हें जन्नत की बशारत दी है।

इसी तरह कुछ दूसरी रिवायतों में आया है कि इमाम[अ०] ने अपने किसी सहाबी से फ़रमाया, "तुम्हारी राय मेरी राय है।"[2]

यानी कुछ ऐसे लोग थे जो कुछ मसलों में इमाम[अ०] की तरफ़ से अपनी राय बयान करते थे और हर सियासी, माली, तहरीकी मुश्किल का जवाब देते थे और यह लोग सारी इस्लामी दुनिया में फैले हुए थे।

एक और रिवायत में आया है, "मेरा यह ख़त लेकर उसके पास जाओ और कहो कि माल मुझे भेजे।"[3]

इस ख़त से पता चलता है कि आपके वकील हर तरफ़ आपकी तालीमात को फैलाने के लिए माल जमा करते थे और इमाम[अ०] उस सारी रक़म को इस्लाम का नाम बाक़ी रखने के लिए ख़र्च करते थे। इसीलिए एक और रिवायत में आया है, "हिसाब मौसूल हो गया। मैंने इतने दीनार भेजे हैं।"[4]

इसी तरह एक और हदीस है कि जब आप हज के लिए जाते थे तो हर शहर से आपके चाहने वाले आते थे और आपसे आगे के हालात के बारे में बातचीत करते थे और अपनी मुश्किलों का हल पूछते थे।

इन रिवायतों से पता चलता है कि इमाम[अ०] अपने ज़माने में अपनी पूरी ताक़त के साथ दीन को बाक़ी रखने में लगे हुए थे। बनी अब्बास को डर था कि मामून ने इमाम तक़ी[अ०] से अपनी बेटी की शादी करके इमाम[अ०] के लिए ख़िलाफ़त का रास्ता साफ़ कर दिया है। इसीलिए मामून के मरने के बाद जब मोतसिम ख़िलाफ़त पर आया तो उसने 219 हिजरी में आपको मदीने से बग़दाद बुलाया और इस डर को दूर करने के लिए 220 हिजरी में ज़हर देकर शहीद कर दिया।

1-बिहारुल अनवार, 50/105, 2-बिहारुल अनवार, 50/108, 3-रिजालुल कशी, 550, 4- बिहारुल अनवार, 50/109

ख़ुशहाल ज़िंदगी

■ सै. हैदर अब्बास

मिली जुली शादीशुदा ज़िंदगी में मर्द हो या औरत दोनों की यह ख़्वाहिश होती है कि वह एक ख़ुशगवार और सुकून से भरी हुई ज़िंदगी गुज़ारें लेकिन ज़ाहिर है कि जिस तरह हर मक़सद के पूरा करने के लिए कुछ फ़ैक्टर्स होते हैं और उन फ़ैक्टर्स पर अमल करके ही वह मक़सद पूरा किया जा सकता है, इसी तरह एक ख़ुशगवार ज़िंदगी और घरेलू सुकून से भरा हुआ माहौल भी सिर्फ़ चाहने से नहीं मिलता बल्कि उसके फ़ैक्टर्स पर अमल करना ज़रूरी है।

अगर इस मक़सद को हम इंसानी ज़िंदगी का बुनियादी मक़सद कहें तो ग़लत नहीं होगा क्योंकि जिसकी ज़ाती ज़िंदगी ख़ुशगवार न हो और उसे घर में सुकून भरा माहौल न मिले तो उसकी समाजी ज़िंदगी पर भी इसका असर पड़ता है।

इस टॉपिक पर बहुत कुछ कहा जा सकता है, बहुत कुछ लिखा जा सकता है लेकिन हम यहां पर कुछ ऐसे उसूल अपने पढ़ने वालों को दे रहे हैं जिनका न जानना आम तौर पर घरेलू ज़िंदगी में कड़वाहट घोल देता है।

मुहब्बत और रहमत

बुनियादी तौर पर इंसान आपस में एक दूसरे का मोहताज है। कोई भी इंसान चाहे कितना ही ताक़तवर क्यों न हो, उसे दूसरे की ज़रूरत ज़रूर होती है। मदद दो तरह से की जाती है एक मज़दूरी लेकर और दूसरे मुहब्बत के ज़रिए।

ख़ुदा ने इंसान की ज़रूरत को देखते हुए उसके नेचर में मुहब्बत और रहमत के जज़बात को पैदा किया और जितनी ज़रूरत बढ़ती गई उसकी शिद्दत को भी उसने उतना ही बढ़ा दिया।

मियां-बीवी एक गाड़ी के दो पहिए हैं। दोनों को अगर ज़िंदगी की गाड़ी चलाना है तो यह काम एक दूसरे की मदद के बिना नहीं हो सकता लेकिन इस मदद की बुनियाद मुहब्बत और रहमत के जज़बात पर है। मियां और बीवी में जितनी आपसी मुहब्बत ज़्यादा होगी उतनी ही ज़िंदगी ख़ुशगवार और सुकून से भरी गुज़रेगी। इसीलिए ख़ुदा ने क़ुरआन में जब इंसान के लिए लाइफ़-पार्टनर के मक़सद यानी 'सुकून' को बयान किया तो उसके फ़ौरन बाद फ़रमाया, "हमने उनके बीच मुहब्बत और रहमत को रखा है।" यानी मुहब्बत और रहमत शादीशुदा ज़िंदगी की बुनियाद हैं और अगर यह फ़ैक्टर न पाया जाए तो ख़ुशगवार ज़िंदगी नहीं गुज़ारी जा सकती।

यह बात भी ग़ौर करने वाली है कि सिर्फ़ मुहब्बत काफ़ी नहीं है बल्कि किसी न किसी तरह इसका बयान करना और

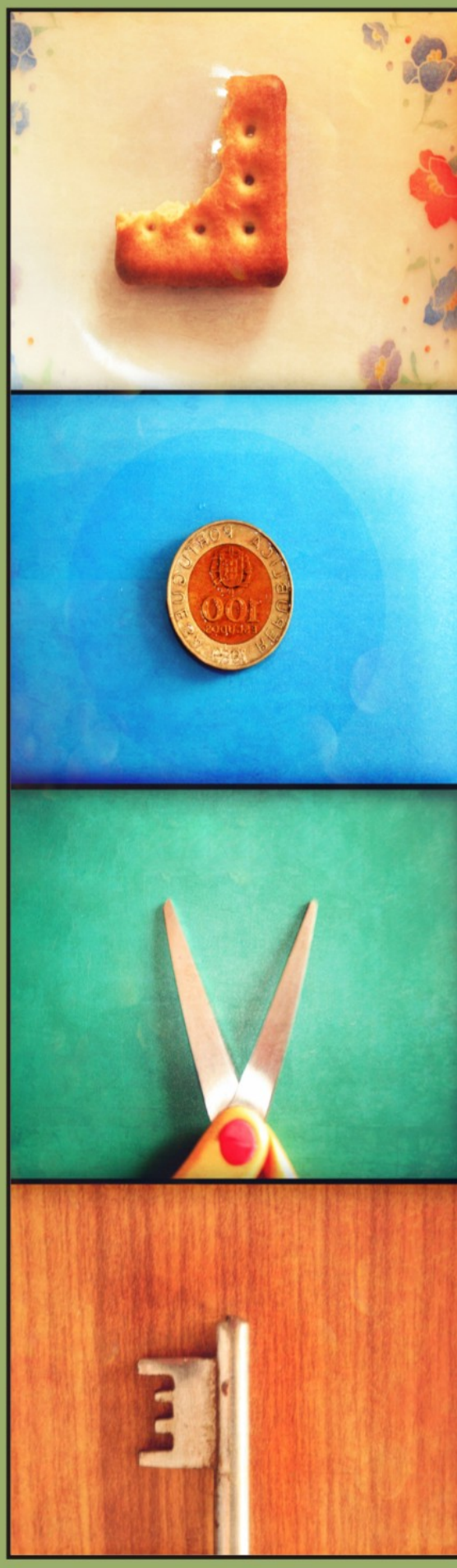

दिखाना भी ज़रूरी है जिससे समाने वाले के दिल में भी यह जज़बात फलते-फूलते और ज़्यादा बढ़ जाते हैं। लम्बी शादीशुदा ज़िंदगी में अक्सर इसकी सख़्त ज़रूरत होती है।

माफ़ कर देना

इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि ख़ास इंसानों के अलावा इंसान ग़लतियों का पुतला है। अगर औरत ग़लती कर सकती है तो मर्द से भी ग़लती हो सकती है। जब दोनों तरफ़ से ग़लती हो सकती है तो ग़ल्तियों की अनदेखी करने का फ़न भी दोनों के पास होना चाहिए। इसीलिए इसकी अहमियत की वजह से आयतों और रिवायतों में इस पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया गया है। यहां तक कि खुदा की बख़्शिश और माफ़ी उसी वक़्त मिल सकती है जब एक इंसान दूसरे इंसान के साथ भी बख़्शिश और माफ़ी के साथ पेश आए। इसीलिए सूरए नूर की आयत/22 में आया है, "हर एक को माफ़ करना चाहिए और दरगुज़र करना चाहिए। क्या तुम यह नहीं चाहते हो कि खुदा तुम्हारे गनाहों को बख़्श दे और अल्लाह बेशक बड़ा बख़शने वाला मेहरबान है।"

माफ़ करना अच्छी परवरिश का एक बेहतरीन रास्ता है जिससे इंसान में बदलाव और अच्छाई की तरफ़ क़दम बढ़ाने का रास्ता खुला रहता है और वह हठधर्मी से दूर रहता है।

अगर किसी की ग़लती पर उसे माफ़ करके उसको अच्छे अंदाज़ से बता दिया जाए तो उस ग़लती के दोहराए जाने के चांसेस बहुत कम रह जाते हैं लेकिन मामला अगर इसके उलटा हो तो न सिर्फ़ यह कि ग़लती ख़त्म नहीं होती बल्कि ग़लती करने वाला इस पर और निडर हो जाता है जिसकी वजह से घरेलू ज़िंदगी में मसले खड़े हो जाते हैं।

सच्चाई

मियां और बीवी दोनों को यह बात हमेशा ज़ेहन में रखनी चाहिए कि उनके लाइफ़-पार्टनर से ज़्यादा उनका कोई मददगार और ग़म बांटने वाला नहीं हो सकता और एक ऐसा हमसफ़र जो मुहब्बत और रहमत के जज़बात भी रखता हो और माफ़ करने जैसी इतनी बड़ी नेमत भी उसके पास हो तो फिर इंसान को इस हक़ीक़त को छुपाए रखने का कोई हक़ नहीं बनता।

शादीशुदा ज़िंदगी नाम है मिलजुल कर आपसी मसलों और झगड़ों को हल करने का। इसलिए किसी एक का मसला दूसरे का मसला है, किसी एक की मुश्किल को दोनों को मिलकर हल करना है लेकिन यह मुश्किलें उसी वक़्त हल हो सकती हैं, जब सच्चाई से काम लिया जाए।

शादीशुदा ज़िंदगी में हक़ीक़त पसंदी और सच की बहुत ज़्यादा अहमियत है और इससे बहुत से बड़े-बड़े सेंस्टिव मसलों को हल किया जा सकता है। सच बोलना आपसी भरोसे को बढ़ाता है।

इसके उलट झूठ और हक़ीक़त को छुपाना जहां आपसी भरोसे को ख़त्म कर देता है वहीं दूसरे पर शक करने की वजह भी बन जाता है और यह हालत इस हद तक बढ़ जाती है कि दूसरे के बारे में हर वक़्त बुरा ख़्याल और बदगुमानी होने लगती है। यह बीमारी दीमक की तरह घरेलू ज़िंदगी को बर्बाद कर देती है।

मर्द और रोज़ी-रोटी

यह काम जो कि घरेलू ज़िन्दगी की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ज़रूरी है, औरत को उसके घरेलू मैदान में काम करने का जोश, जज़बा और लगन देता है। वह जब सारा दिन शौहर को घर से बाहर मेहनत और ज़हमत करते हुए देखती है तो उसकी पूरी कोशिश होती है कि वह भी घर में शौहर को सुकून भरी ज़िंदगी का माहौल दे सके।

जायज़ ख़्वाहिशें

अक्सर देखने में आया है कि बेजा या बेवक़्त ख़्वाहिशों ने एक ख़ुशहाल घराने की ज़िंदगी को बदतर बना दिया है। बेजा ख़्वाहिशें या ज़्यादा उम्मीदें इंसान की आपसी ज़िंदगी में कड़वाहट का एक बड़ा फ़ैक्टर हैं।

हमेशा यह याद रखना चाहिए कि आपसी मिली-जुली ज़िंदगी को एक अच्छी और सुकून भरी ज़िंदगी की तरह गुज़ारना ही शादी का असली मक़सद है, दूसरी सारी चीज़ों का नम्बर इसके बाद आता है। असल में इन चीज़ों की ज़रूरत भी इसलिए पेश आती है कि ऐशो-आराम और लक्जरी भरी 'ज़िंदगी' गुज़ारी जा सके।

लेकिन अगर तन की इस आसानी से ज़ेहनी परेशानियां पैदा होने लगें तो इससे क्या फ़ाएदा। दुनिया जहान की नेमतें मिल जाएं लेकिन रूहानी सुकून चला जाए तो इस सारे ऐशो-आराम का क्या फ़ाएदा। ख़्वाहिशें पूरी हो जाएं लेकिन लाइफ़-पार्टनर दूर हो जाए तो इससे बढ़कर नुक़सान और क्या हो सकता है।

इसलिए इस मुश्किल से बचने के लिए ज़रूरी है कि जो भी ख़्वाहिश और तमन्ना की जाए वह मौक़े को देखकर और गुंजाइश को सामने रखकर की जाए। बीवी अपने शौहर से हमेशा उस चीज़ की उम्मीद रखे जो उसके बस में हो और क्या

ही अच्छा हो कि वह किसी तरह की उम्मीद ही न रखे बल्कि खुद शौहर उसकी ज़रूरत को देखते हुए अपने हालात के मुताबिक़ वक़्त-वक़्त पर पूरा करता रहे।

इन मुश्किलों के पैदा होने में अक्सर मर्द भी ज़िम्मेदार होते हैं। वह अपनी माली ज़िंदगी को अपनी लाईफ़-पार्टनर से छुपाते हैं और पैसा कमाने के रास्ते में आने वाली अड़चनों को उसे नहीं बताते।

जब यह ज़िंदगी का सफ़र मिला-जुला है, इसमें आने वाली मुश्किलों को मिल-जुल कर हल करना है तो फिर घर हो या बाहर, माली ज़िंदगी हो या सोशल ज़िंदगी, इन सब ही को आपस में शेयर करना ज़रूरी है जिसकी वजह से घरेलू ज़िन्दगी के बहुत से मसले हल हो सकते हैं।

हमारे समाज की एक बड़ी मुश्किल जो घरेलू और समाजी ज़िंदगी में पेश आती है, वह एक दूसरे के काम और ज़हमतों पर हौसला अफ़ज़ाई और तारीफ़ न करना है। कोई कितने ही खुलूस और मेहनत से काम करे, उस पर उसकी हौसला अफ़ज़ाई नहीं की जाती। इसलिए आजकल हमारे समाज में खुलूस भरे कामों में कमी हो रही है। जबकि हमारा दीन इसकी अहमियत की वजह से इसके बारे में बहुत ज़्यादा ज़ोर देता है। इसीलिए तो दीन कहता है, "जो मख़लूक़ का शुक्र अदा नहीं करता वह ख़ालिक़ का भी शुक्र अदा नहीं करता।"

शौहर बाहर कितनी ही मेहनत करता रहे, कितनी ही ज़हमतें उठाता रहे या बीवी घर में कितने ही जतन करे, घर की सफ़ाई-सुथराई से लेकर बच्चों की देखभाल तक जो कि किसी सूरत में भी बाहर के कामों से कम मेहनत वाले नहीं हैं, आम तौर पर इन दोनों मैदानों में अच्छे से अच्छे काम पर भी 'शुक्रिया' के अलफ़ाज़ अदा नहीं किए जाते।

जबकि एक ज़रा से शुक्रिया से न सिर्फ़ यह कि हौसला और हिम्मत बढ़ती है बल्कि काम की क्वालिटी भी कई गुना बढ़ जाती है।

शुक्रिए के बहुत से तरीक़े हैं जिनमें तोहफ़ा देने या सैर व तफ़रीह पर जाने से लेकर मुंह से शुक्रिया के अलफ़ाज़ तक कोई भी तरीक़ा चुना जाए, यह ज़िंदगी में अच्छा बदलाव लेकर आता है।

प्यारी बहनो! यह कुछ ऐसे उसूल थे जो आपकी आपसी मिली-जुली ज़िंदगी को खुशगवार बना सकते हैं। आपने मिली-जुली ज़िंदगी की शुरूआत अभी की हो या सालों पहले इस बंधन में बंधीं हों, ज़िद, हठधर्मी, गुरूर, अना और समझ की कमी जैसी ख़तरनाक बीमारियों को बिल्कुल भी अपने पास फटकने मत दीजिए, इन उसूलों को अपनाइए और यक़ीन रखिए कि आपकी ज़िंदगी खुशगवार और सुकून से भरी गुज़रेगी।

रसूले इस्लाम:
अगर कोई औरत इस हालत में मरे कि उसका शौहर उससे राज़ी हो तो वह जन्नत में जाएगी। (मुहज्जतुल बैज़ा, 2/70)

HK

KAZIM
Zari Art

All Kinds of
Sarees, Suits
& Lehanga Chunri

Hata Dhannu Beg
Kazmain Road
Lucknow

Contact No.
0522-2264357
9839126005

बैंक Account

ज़रा सोचिए कि आपके बैंक एकाउंट में 86,400 रूपए रोज़ाना सुबह में डाले जाते हों...
और आपको रात तक यह सारा पैसा ख़र्च करना हो क्योंकि इसके बाद यह पैसा ख़ुद बख़ुद ज़ीरो हो जाएगा।

आप क्या करेंगी ?

आप यही करेंगी न कि इसके एमाउंट के एक-एक पैसे को ख़र्च कर डालने की कोशिश करेंगी...

- *हम में से हर एक के पास ऐसा ही एक बैंक एकाउंट है...*Time-Bank Account.
- *रोज़ाना सुबह में आपके टाइम-बैंक में 86,400 सेकेंड डाले जाते हैं जो रात तक ख़त्म हो जाते हैं।*
- *इनमें से एक भी सेकेंड वापस नहीं होता है, जो गया सो गया, उसे भूल जाइए।*
- *एक साल की अहमियत को वह स्टूडेंट ज़रूर समझता है जो फ़ेल हो जाता है।*
- *एक महीने की अहमियत को वही औरत समझती है जो एक बच्चे की माँ बनती है।*
- *एक हफ़्ते की अहमियत को किसी वीकली न्यूज़ पेपर का एडीटर ही समझता है।*
- *एक घंटे की अहमियत को उस आशिक़ से पूछिए जो किसी का इंतेज़ार कर रहा हो।*
- *एक मिनट की अहमियत को वही जानता है जिसकी ट्रेन छूट गई हो।*
- *एक सेकेंड की अहमियत को सिर्फ़ और सिर्फ़ वही समझ सकता है जिसका कोई ख़तरनाक एक्सीडेंट हो गया हो।*

याद रखिए...हर सेकेंड एक बहुत बड़ा ख़ज़ाना है...
इसलिए अपने इस ख़ज़ाने को आसानी से बर्बाद न होने दीजिए!
याद रखिए!
वक़्त किसी का इन्तेज़ार नहीं करता है...।
यह भी ख़्याल रहे:
बीता हुआ कल गया...
आने वाला कल, क्या पता कैसा होगा!
लेकिन आज का दिन एक बहुत बड़ा तोहफ़ा है...एक बहुत बड़ा तोहफ़ा।

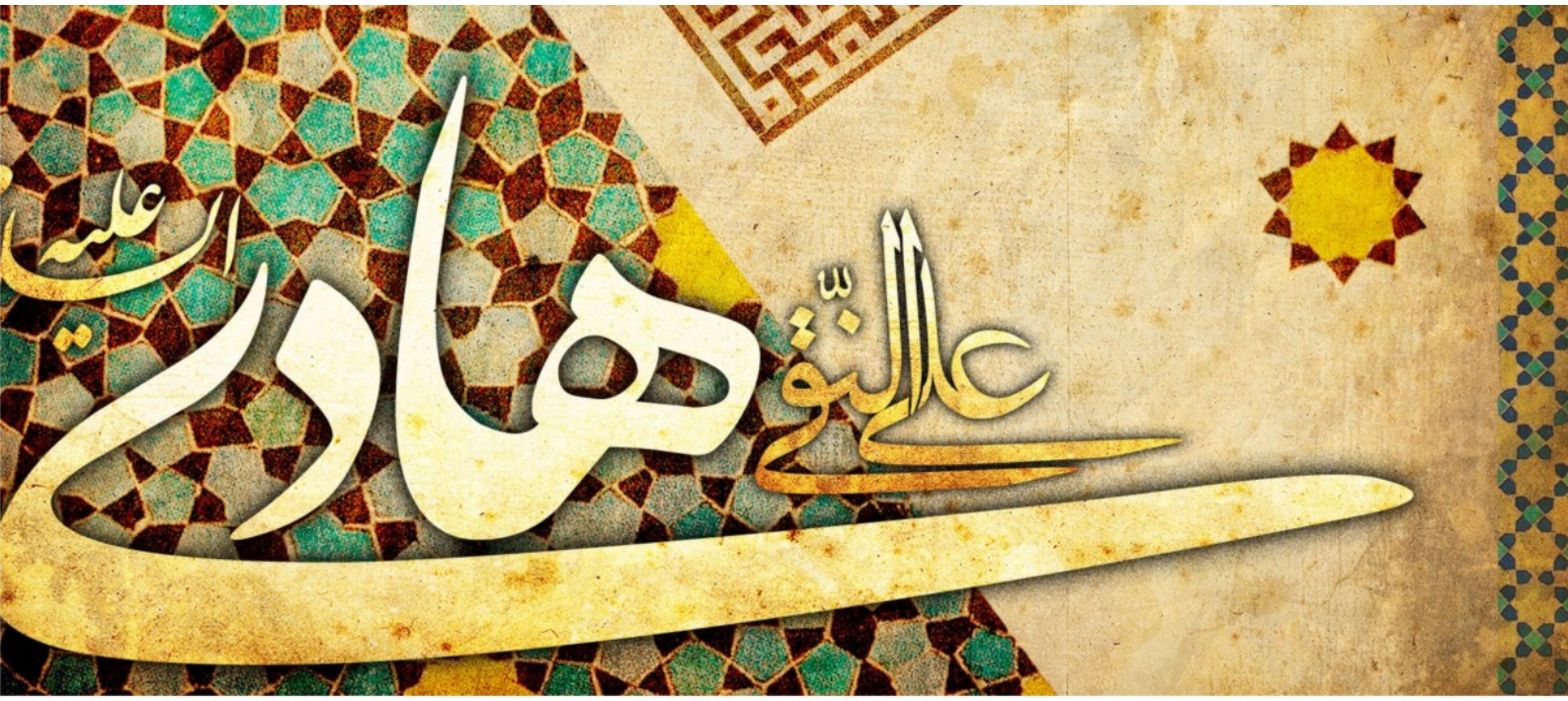

इमाम अली नक़ी अ०

इमाम अली नक़ी अ० रजब 214 हि० को मदीने में पैदा हुए। सिर्फ़ 6 साल की उम्र थी कि आप अपने वालिद से जुदा हो गए। जिसके बाद इमामत की ज़िम्मेदारियां आपके कंधे पर आ गईं।

उस ज़माने की हुकूमतें

इमाम अली नक़ी अ० की इमामत के दौर में उस वक़्त के हाकिम मोतसिम बिल्लाह का इंतेक़ाल हुआ और वासिक़ बिल्लाह की हुकूमत शुरू हुई। 236 हि० में वासिक़ बिल्लाह भी दुनिया से चला गया और मशहूर ज़ालिम ख़लीफ़ा और अहलेबैत का दुश्मन, मुतवक्किल हुकूमत की गद्दी पर बैठा। 250 हि० में मुतावक्किल हलाक हुआ और मुन्तसिर बिल्लाह ख़लीफ़ा बन गया। जो सिर्फ़ 6 महीने हुकूमत करने के बाद मर गया और मुस्तईन बिल्लाह की सलतनत क़ायम हुई। 353 हि० में मुस्तईन को हुकूमत छोड़ देने के बाद जान से भी हाथ धोना पड़ा और मुअतज़ बिल्लाह बादशाह बन गया। यही इमाम अली नक़ी अ० के ज़माने का आख़िरी बादशाह था।

मुसीबतें

मोतसिम ने चाहे अपनी मुल्की परेशानियों की वजह से चाहे इमाम अली नक़ी अ० की कमसिनी का ख़्याल करते हुए बहरहाल आपसे कोई झगड़ा नहीं किया और आप सुकून व इत्मिनान के साथ मदीने में अपनी ज़िम्मेदारियां पूरी करते रहे। मोतसिम के बाद वासिक़ ने भी आपके ख़िलाफ़ कोई क़दम नहीं उठाया मगर मुतवक्किल का तख़्त पर बैठना था कि इमाम अली नक़ी अ० पर मुसीबतों के पहाड़ टूट पड़े। यह वासिक़ का भाई और मोतसिम का बेटा था और आले रसूल की दुश्मनी में अपने तमाम बाप-दादाओं से बढ़ा हुआ था।

इस सोलह साल में जब से इमाम अली नक़ी अ० इमाम बने थे, आपकी शोहरत सारे मुल्क में फैल चुकी थी और अहलेबैत अ० की तालीमात के दीवाने हमेशा आपके आस-पास चक्कर लगाते रहते थे। अभी मुतवक्किल की सलतनत को चार साल ही हुए थे कि मदीने के हाकिम अब्दुल्लाह बिन हाकिम ने इमाम अ० की मुख़ालिफ़त शुरू कर दी। पहले तो ख़ुद इमाम को अलग-अलग तरह की तकलीफ़ें पहुंचाईं फिर मुतवक्किल को आपके बारे में इसी तरह की बातें लिखीं जैसी पिछली सलतनत के पास आपके बुर्ज़ुगों के बारे में उनके दुश्मनों की तरफ़ से पहुंचाई जाती थीं। जैसे यह कि इमाम अ० अपने आस-पास सलतनत का सामान जमा कर रहे हैं, आपके मानने वाले इतनी तादाद में बढ़ गए हैं कि आप जब चाहें हुकूमत के मुक़ाबले के लिए खड़े हो सकते हैं। इमाम को इन बातों की वक़्त पर ख़बर हो गई थी और आपने हुज्जत पूरी करने के लिए उसी के साथ मुतवक्किल के पास अपनी तरफ़ से एक ख़त लिख दिया जिसमें मदीने के हाकिम की अपने साथ ज़ाती मुख़ालेफ़त का ज़िक्र और उसकी ग़लत बातों को लिखा था। मुतवक्किल ने सियासत की वजह से इमाम अली नक़ी अ० के ख़त को अहमियत देते हुए मदीने के उस हाकिम को हटा दिया मगर एक फ़ौजी लश्कर को यहया बिन हरसमा के साथ भेज कर इमाम अ० से दिखावे में दोस्ताना अंदाज़ में बहुत ज़ोर देकर यह ख़्वाहिश की कि आप मदीने से सामरा आ जाएं और कुछ

दिन रहकर वापस मदीने चले जाएं। इमाम[अ] इस ख़्वाहिश की हक़ीक़त को ख़ूब पहचानते थे और जानते थे कि यह दावत हक़ीक़त में जिला-वतनी का हुक्म है मगर इंकार से कोई फ़ाएदा नहीं था। बेशक मदीने से हमेशा के लिए दूर होना आपके लिए वैसा ही तकलीफ़देह था जिसे इससे पहले इमाम हुसैन[अ], इमाम मूसा काज़िम[अ], इमाम रज़ा[अ] और इमाम मोहम्मद तक़ी[अ] बर्दाश्त कर चुके थे। देखने वाले बयान करते हैं कि मदीने से निकलते वक़्त आप इतने ग़मज़दा हो गए थे कि अज़ीज़ों और सहाबियों में एक कोहराम बरपा हो गया था। मुतवक्किल ने फ़ौजी दस्ता भेजा था वह ज़ाहिर तौर पर तो बड़ी शानो-शौकत के साथ भेजा गया था मगर जब इमाम[अ] सामरा पहुंच गए और मुतवक्किल को इसकी ख़बर दी गई तो उसका पहला ही अफ़सोसनाक काम यह था कि बजाए इमाम[अ] के इस्तेक़बाल या कम से कम अपने यहां बुलाकर मुलाक़ात करने के, उसने हुक्म दिया कि इमाम को 'भिकारियों की सराए' में उतारा जाए। इससे उस जगह की हालत का पूरा अंदाज़ा किया जा सकता है। यह शहर से दूर वीराने में एक खंडर था। जहां इमाम[अ] को ठहरने पर मजबूर किया गया था। वैसे यह मुक़द्दस हस्तियां ख़ुद ही फ़क़ीरों के साथ बैठने को अपने लिए बुरी बात नहीं समझती थीं मगर मुतवक्किल की नियत तो इस काम से बहरहाल इमाम की तौहीन के सिवा और कुछ नहीं थी। तीन दिन तक इमाम वहीं रहे।

उसके बाद मुतवक्किल ने आपको रज़्ज़ाक़ी की हिरासत में नज़र बंद कर दिया और अवाम के लिए आपसे मिलने-जुलने को मना करा दिया। वही बेगुनाही और हक़्क़ानियत की कशिश जो इमाम मूसा काज़िम[अ] की क़ैद के ज़माने में सख़्त से सख़्त पहरेदारों को कुछ ही दिन के बाद छूट देने पर मजबूर कर देती थी उसी का असर था कि थोड़े ही दिनों बाद रज़्ज़ाक़ी के दिल पर इमाम अली नक़ी[अ] की अज़मत का सिक्का बैठ गया और वह आपको तकलीफ़ देने के बजाए आराम पहुंचाने की पूरी कोशिश करने लगा मगर यह बात ज़्यादा दिनों तक मुतवक्किल से छुप नहीं सकती थी। उसे मालूम हो गया और उसने रज़्ज़ाक़ी की क़ैद से निकाल कर इमाम[अ] को एक दूसरे शख़्स सईद की हिरासत में दे दिया। यह शख़्स बेरहम और इमाम[अ] के साथ सख़्ती बरतने वाला था। इसीलिए उसके तबादले की ज़रूरत नहीं पड़ी और इमाम पूरे बारह साल उसकी निगरानी में क़ैद रहे। इन तकलीफ़ों के बाद भी इमाम[अ] रात-दिन इबादत में बसर करते थे। दिन भर रोज़ा रखना और रात भर नमाज़ें पढ़ना आपका मामूल था। आपका जिस्म कितनी ही क़ैद में रखा गया हो मगर आपका ज़िक्र उस चार दीवारी में क़ैद नहीं किया जा सकता था। नतीजा यह था कि आप तो उस अंधेरी कोठरी में क़ैद थे मगर आपका चर्चा सामरा बल्कि शायद इराक़ के हर घर में था और इस बुलंद किरदार इंसान को क़ैद में रखने पर लोगों में मुतवक्किल के जुल्मों से नफ़रत बराबर फैलती जा रही थी।

अब वह वक़्त आया कि फ़तेह बिन ख़ाक़ान आले रसूल से मोहब्बत रखने के बावजूद सिर्फ़ अपनी क़ाबलियत, अपनी समझ-बूझ और अपनी दिमाग़ी सलाहियतों की वजह से मुतवक्किल का वज़ीर हो गया। उसके कहने सुनने पर मुतवक्किल ने इमाम[अ] की क़ैद को नज़र बंदी से बदल दिया और आपको एक मकान दे दिया मगर इस शर्त से कि आप सामरा से बाहर न जाएं।

दरबार में रहने के बावजूद उस दौर में भी इमाम[अ] की ज़िंदगी देखने के क़ाबिल थी। न कभी मुतवक्किल के सामने कोई दरख़्वास्त की, न कभी किसी तरह के रहम या इज़्ज़त की ख़्वाहिश। मज़लूम की शान जैसे पहले थी वैसी ही अब भी। उस ज़माने में भी ऐसा नहीं हुआ कि इमाम को बिल्कुल आराम व सुकून की ज़िंदगी बसर करने दी जाती, अलग-अलग तरह की तकलीफ़ों से आपके मकान की तलाशी ली गई कि वहां असलहा है या ऐसे ख़त हैं जिनसे हुकूमत की मुख़ालेफ़त का सुबूत मिलता है। हालांकि ऐसी कोई चीज़ कभी मिली नहीं मगर यह तलाशी ही एक बुलंद और बेगुनाह इंसान के लिए कितनी तकलीफ़ की चीज़ है, उससे बढ़कर यह क़िस्सा कि दरबार में ठीक उस वक़्त आपकी तलबी होती है जबकि शराब के दौर चल रहे हैं। मुतवक्किल और सारे लोग नशे में धुत हैं और सब से बढ़कर यह कि बेग़ैरत और जाहिल बादशाह हज़रत[अ] के सामने जामे शराब बढ़ा कर पीने की दरख़्वास्त करता है इस्लाम के मुहाफ़िज़ मासूम को इससे जो तकलीफ़ पहुंच सकती है वह तीर व खंजर से

यक़ीनन ज़्यादा है मगर इमाम ने बड़े इत्मिनान और सब्र के साथ फ़रमाया कि 'मुझे इससे माफ़ करो! मेरा, मेरे बाप-दादा का ख़ून और गोश्त इससे कभी नहीं मिला है'।

अगर मुतावक्किल को ज़रा सी भी ग़ैरत होती तो वह इस जवाब का असर लेता मगर उसने कहा कि अच्छा यह नहीं तो कुछ गाना ही सुनाइए। इमाम ने फ़रमाया कि मैं इस फ़न को भी नहीं जानता हूं। आख़िर उसने कहा कि आपको कुछ शेर तो बहरहाल पढ़ना पड़ेंगे।

कोई जज़बात की धारा में बहने वाला इंसान होता तो इस गंदी हरकत और इस तौहीन से असर लेकर शायद अपने ग़ुस्से पर क़ाबू न रख पाता मगर वह इमाम की ही हस्ती थी जिसने इस मौक़े को नसीहत व तबलीग़ के लिए ग़नीमत समझ कर अपने दिल से निकली हुई सच्चाई से भरी हुई आवाज़ से ऐसे शेर पढ़ना शुरू किए जिन्होंने शराब की उस महफ़िल में गिरये की शक्ल पैदा कर दी। शेर कुछ ऐसे हक़ीक़ी असर के साथ इमाम[अ] की ज़बान से निकल रहे थे कि मुतवक्किल के नशे की बिसात उलट गई।

शराब के प्याले हाथों से छूट गए और सारा मजमा ज़ारो क़तार रोने लगा। यहां तक कि ख़ुद मुतवक्किल डाढ़ें मार-मार कर बेइख़्तियार रो रहा था। जूं ही यह गिरया और रोना बंद हुआ उसने इमाम[अ] को रुख़सत कर दिया।

एक और सख़्त रूहानी तकलीफ़ जो इमाम[अ] को पहुंची वह मुतवक्किल का वह हुक्म जो नजफ़ और करबला के ज़ायरीन के ख़िलाफ़ उसने जारी किया था। उसने यह हुक्म सारी हुकूमत में जारी कर दिया था कि कोई भी हज़रत अली[अ] और इमाम हुसैन[अ] के रौज़ों की ज़ियारत को न जाए, जो भी इस हुक्म को नहीं मानेगा उसको क़त्ल कर दिया जाएगा। इतना ही नहीं बल्कि उसने हुक्म दिया कि नजफ़ और करबला की इमारतें बिल्कुल गिराकर ज़मीन के बराबर कर दी जाएं। सारे मक़बरे खोद डाले जाएं और इमाम हुसैन[अ] की क़ब्र के आस-पास की सारी ज़मीन पर खेती शुरू कर दी जाए। यह नामुमकिन था कि ज़ियारत को जाने वाले ज़ियारत को न जाएं। नतीजा यह हुआ कि हज़ारों बेगुनाहों की लाशें ख़ून में तड़पती हुई नज़र आईं।

फिर आप ऐसे माहौल में क़ैद करके रखे गए थे कि आप वक़्त की मुनासिबत के लिहाज़ से उन लोगों तक कुछ ख़ास पैग़ाम भी नहीं पहुंचा सकते थे। यह अफ़सोसनाक सूरत एक दो साल नहीं बल्कि मुतवक्किल की ज़िंदगी के आख़िरी वक़्त तक बराबर बाक़ी रही। उधर मुतवक्किल के दरबार में इमाम अली[अ] की नक़लें की जाती थीं और उन पर ख़ुद मुतवक्किल और सारे दरबार वाले ठट्ठे लगाते थे।

इसी ज़माने का यह क़िस्सा भी कुछ कम अफ़सोस का नहीं है। इब्ने अल-सकीत बग़दादी एक बहुत बड़े आलिम थे और मुतवक्किल ने अपने दो बेटों की तालीम के लिए उन्हें तय किया था। एक दिन मुतवक्किल ने उनसे पूछा कि तुम्हें मेरे इन दोनों बेटों से ज़्यादा मोहब्बत है या हसन-हुसैन से। इब्ने अल-सकीत अहलेबैत[अ] से मोहब्बत रखते थे। इस सवाल को सुनकर बेताब हो गए और उन्होंने मुतवक्किल की आंखों में आंखें डालकर बेधड़क कह दिया कि हसन-हुसैन[अ] का क्या ज़िक्र, मुझे तो अली के ग़ुलाम क़म्बर से इन दोनों से कहीं ज़्यादा मोहब्बत है। इस जवाब का सुनना था कि मुतवक्किल ग़ुस्से से पागल हो गया। हुक्म दिया कि इब्ने अल-सकीत की ज़बान गुद्दी से खींच ली जाए। यही हुआ और इस तरह यह आले रसूल के चाहने वाले शहीद हो गए।

मुतवक्किल का ज़ुल्म भरा बर्ताव ऐसा था जिससे कोई भी दूर या पास का शख़्स उससे ख़ुश नहीं था। हद यह है कि उसकी औलाद तक उसकी जानी दुश्मन हो गई थी। इसीलिए उसके बेटे मुन्तसिर ने उसके बड़े ख़ास ग़ुलाम बाग़र रूमी के साथ मिलकर ख़ुद मुतवक्किल ही की तलवार से ठीक उसकी ख़्वाबगाह में उसको क़त्ल करा दिया था। जिसके बाद दुनिया को उस ज़ालिम से निजात मिली और मुन्तसिर की ख़िलाफ़त का ऐलान हो गया। मुन्तसिर ने तख़्त पर बैठते ही अपने बाप के सारे हुक्मों को एक साथ ख़त्म कर दिया। नजफ़ और करबला की ज़ियारत के लिए आम इजाज़त दे दी और इन मुक़द्दस रौज़ों की किसी हद तक तामीर भी करा दी। इमाम अली नक़ी[अ] के साथ भी उसने कोई बुरा बर्ताव नहीं किया मगर मुन्तसिर की उम्र लम्बी नहीं हुई। वह छः महीने के बाद दुनिया से उठ गया। मुन्तसिर के बाद मुस्तईन की तरफ़ से इमाम[अ] के ख़िलाफ़ किसी ख़ास बदसुलूकी का बर्ताव नज़र नहीं आता।

इतने वक़्त तक हुकूमत की तरफ़ से सख़्ती न होने की वजह से अहलेबैत[अ] की तालीमात के चाहने वाले ज़रा इत्मिनान के साथ बहुत बड़ी तादाद में इमाम से इल्म हासिल करने के लिए जमा होने लगे। जिसकी वजह से मुस्तईन के बाद मोतज़ को फिर आपसे जलन होने लगी और उसने आपकी ज़िंदगी ही का ख़ात्मा कर दिया।

आपका अख़्लाक़

हज़रत की सीरत और अख़्लाक़ वही थे जो दूसरे

सारे इमामों के थे। क़ैदख़ाने और नज़रबंदी का आलम हो या आज़ादी का ज़माना, हर वक़्त और हर हाल में ख़ुदा की याद, इबादत, सब्र, मुसीबतों की भीड़ में माथे पर शिकन न होना, मोहताजों और ज़रूरतमंदों की मदद करना, यही वह चीज़ें हैं जो इमाम अली नक़ी[अ०] की ज़िन्दगी में हर तरफ़ नज़र आती हैं।

इमाम अली नक़ी[अ०]:

जो भी ख़ुदा के रास्ते पर मज़बूती से चलेगा, दुनिया की मुसीबतें उसके लिए आसान हो जाएंगी चाहे उसके टुकड़े-टुकड़े की क्यों न कर दिए जाएं। (तोहफ़ुल उक़ूल/511)

क़ैद के ज़माने में जहां भी आप रहे आपके मुसल्ले के सामने एक क़ब्र खुदी तैयार रहती थी। देखने वालों ने जब इस पर ताज्जुब व डर दिखाया तो आपने फ़रमाया कि मैं अपने दिल में मौत का ख़्याल बाक़ी रखने के लिए यह क़ब्र अपनी निगाहों के सामने तैयार रखता हूं। जो शख़्स मौत के लिए इतना तैयार हो कि हर वक़्त खुदी हुई क़ब्र अपने सामने रखे वह ज़ालिम हुकूमत से डर कर उसके सामने सर कब झुका सकता था। मगर इसके साथ दुनियावी साज़िशों में शिरकत या हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी क़दम से आपका दामन इस तरह बचा रहा कि दरबार के अन्दर बाक़ाएदा रहने और हुकूमत के सख़्त तरीन जासूसी सिस्टम के बावजूद कभी आपके ख़िलाफ़ कोई इल्ज़ाम सही साबित नहीं हो सका।

मुतवक्किल से ख़ुद उसके बेटे मुन्तसिर की मुख़ालेफ़त और उसके बहुत क़रीबी ग़ुलाम बाग़र रूमी की उससे दुश्मनी, मुन्तसिर के बाद हुकूमती लोगों के आपसी झगड़े और आख़िर में मुतवक्किल के बेटों को ख़िलाफ़त से दूर करने का फ़ैसला, मुस्तईन की हुकूमत में यहया बिन उमर बिन यहया बिन ज़ैद अलवी का कूफ़े में ख़ुरूज और हसन बिन ज़ैद का तबरिस्तान पर क़ब्ज़ा कर लेना और हुकूमत बना लेना, फिर तुर्की ग़ुलामों की बग़ावत, मुस्तईन का सामरा को छोड़कर बग़दाद की तरफ़ भागना और क़िला बन्द हो जाना, आख़िर में हुकूमत को छोड़ने पर मजबूर होना और कुछ दिनों के बाद मोतज़ बिल्लाह के हाथ से तलवार के घाट उतरना, फिर मोतज़ बिल्लाह के दौर में रोमियों का मुख़ालिफ़त पर तैयार मोतज़ बिल्लाह को ख़ुद अपने भाईयों से ख़तरा महसूस होना वग़ैरा जैसे हंगामी हालात... इन सारी बेचैनियों और झगड़ों में से किसी में भी इमाम अली नक़ी[अ०] का हिस्सा लेने का शक तक न पैदा होना क्या इस अंदाज़ और तर्ज़े अमल के ख़िलाफ़ नहीं है जो ऐसे मौक़ों पर जज़बात से काम लेने वाले इंसानों का हुआ करता है। एक ऐसी हुकूमत के मुक़ाबले में जिसे न सिर्फ़ वह हक़ व इंसाफ़ के एतेबार से नाजाएज़ समझते हैं बल्कि उसकी बदौलत उन्हें जिलावतनी, क़ैद और बेइज़्ज़तियों का सामना भी करना पड़ा है मगर वह फिर भी जज़बात से बुलंद और सब्र से लबरेज़ ज़िंदगी गुज़ार कर दुनिया के सामने एक अनोखी मिसाल क़ायम करते हैं।

शहादत

मोतज़ बिल्लाह के ज़माने में 3 रजब 254 को सामरा में आपकी शहादत हो गई। उसी मकान में जिसमें आप रहते थे आपको दफ़न कर दिया गया। वहीं अब आपका रौज़ा बना हुआ है और ज़ायरीन ज़ियारत के लिए जाते हैं।

सूरए फ़ातिहा

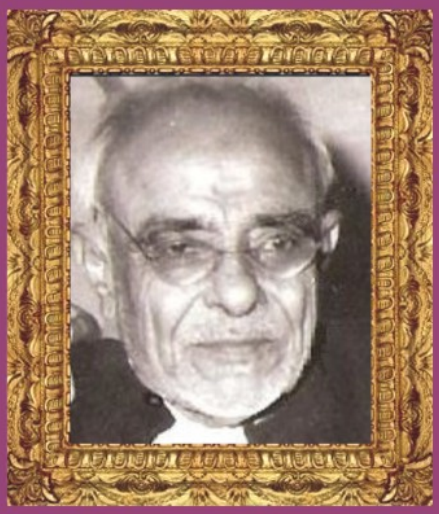

मरहूम सै. रज़ीऊल हसन बिलग्रामी

पैदाईशः 07-10-1909, बिलग्राम

इंतेक़ालः 09-11-1980, कानपुर में और दफ़्न इलाहाबाद में।

ज़ौजाः मरहूमा मेहदी बेगम

मरहूम सै. नूरूल हसन बिलग्रामी के बेटे थे। ख़ुद नूरूल हसन हाफ़िज़े क़ुरआन थे और 1888 में B.A. किया था। अपने बच्चों को उस वक़्त की अच्छी से अच्छी एजूकेशन दिलवाई। सरकारी नौकरी के बावजूद सारा ख़ानदान वाजिबात के अलावा नमाज़े शब का पाबन्द रहा और पांचवी पुश्त में भी हज, उमरा व ज़ियारात का चलन है। अपने इस चलन पर यह फ़ैमिली फ़ख़्र करती है।

मरहूम के बेटों ने 'मरयम' के साथ तआवुन किया है, ख़ुदा उन्हें इसका अज्र अता करे!

इन मरहूमीन के लिए भी सूरए फ़ातिहा ही गुज़ारिश है:

मरहूम सै. नूरूल हसन
मरहूमा कनीज़ सुग़रा
मरहूम मिर्ज़ा बशारत हुसैन
मरहूमा असग़री बेगम
मरहूम मिर्ज़ा माशूक़ हुसैन
मरहूमा अशरफ़ जहां
मरहूम मिर्ज़ा काज़िम रज़ा
मरहूम मिर्ज़ा असद रज़ा
मरहूमा मुसहफ़ आरा बेगम
मरहूम मिर्ज़ा आले रज़ा
मरहूमा कनीज़ हैदर

महदवियत

निजात देने वाला

■ फ़साहत हुसैन

हमेशा से हर दीन के मानने वालों के बीच यह अक़ीदा रहा है कि जब दुनिया जुल्म और नाइंसाफ़ियों से भर जाएगी तो एक शख़्स ख़ुदा की तरफ़ से आएगा और इन्सानों को निजात देगा और एक ऐसा आइडियल समाज बनाएगा जिसमें सिर्फ़ मोहब्बत ही मोहब्बत होगी, दुश्मनी और जंग का नाम व निशान मिट जाएगा, सारे लोग सुकून और चैन की ज़िंदगी गुज़ारेंगे और इन्सानियत अपनी तरक़्क़ी की आख़िरी मंज़िल पर पहुंच जाएगी। उनका यह अक़ीदा उनकी मज़हबी किताबों की वजह से है जिनमें यह अक़ीदा बयान किया गया है। इससे यह भी पता चलता है कि ख़ुदा ने हर ज़माने के नबी को यह ज़िम्मेदारी दी थी कि वह आख़िरी ज़माने में आने वाले उस ख़ुदा के नुमाइन्दे को पहचनवाए।

आयतुल्लाह शहीद बाक़िर अल-सदर इसी वजह से इस बारे में कहते हैं, "इमामे ज़माना[अ०] का अक़ीदा सिर्फ़ एक इस्लामी अक़ीदा नहीं है बल्कि यह इन्सानों का एक नेचरल अक़ीदा है जिसके तहेत इन्सानियत जुल्म और नाइन्साफ़ियां देखने के बाद सुकून की सांस लेगी और आसमानी मज़हबों का मक़सद पूरा होगा। सिर्फ़ किसी दीन को मानने वाले ही उस निजात देने वाले का इन्तिज़ार नहीं कर रहे हैं बल्कि जो लोग किसी भी दीन को नहीं मानते हैं वह भी यह मानते हैं कि दुनिया में एक ऐसा वक़्त आएगा जब दुनिया में सिर्फ़ अमन और सुकून होगा।"

यहूदियों और ईसाईयों के बीच यह एक बुनियादी अक़ीदा है जिसके बारे में बहुत से स्कालर्स ने किताबें लिखी हैं और अपनी मज़हबी किताबों के वह कोटेशंस पेश किए हैं जिनमें आख़िरी ज़माने में एक निजात देने वाले (Savor) के बारे में बयान किया गया है। आख़िरी ज़माने के बारे में होने वाले इन बयानों को 'बशारत' कहा जाता है।

मुहम्मद सादिक़ फ़ख़्रे इस्लाम, पहले ईसाई थे और फिर उन्होंने इस्लाम क़ुबूल किया। उन्होंने "अनीसुल आलाम" नाम की किताब लिखी है जिसमें ईसाईयों और यहूदियों की किताबों के यह सारे टेक्सट पेश किए हैं। इसी तरह मुहम्मद रज़ा रज़ाई जो यहूदी स्कॉलर थे उन्होंने भी अपनी मज़हबी किताबों की इन बशारतों को एक किताब की सूरत में पेश किया है।

यहूदियों की किताब तौरेत में हमें इस तरह मिलता है, "इस वक़्त (आख़िरी ज़माने में) तुम्हारी क़ौम में से "क़ायम" उठ खड़ा होगा और इस ज़माने में तुम्हारी क़ौम को निजात मिलेगी और ज़मीन में सोने वाले लोगों में से बहुत से लोग उठाए जाएंगे, कुछ को हमेशा की ज़िंदगी के लिए और कुछ को हमेशा की ज़िल्लत, पस्ती और शर्मिन्दगी के लिए।" [1]

जनाबे दाऊद की किताब ज़ुबूर में भी इस निजात देने वाले का ज़िक्र है जिसे क़ुरआन ने बयान किया है, "हमने ज़ुबूर में (तौरेत के) ज़िक्र के बाद यह लिखा है कि इस ज़मीन के वारिस हमारे नेक बंदे होंगे।" [2]

ज़ुबूर में होने वाले इतने बदलावों के बाद भी कुछ जगहें ऐसी मिल जाती हैं जहां हमें क़ुरआन के इस्तेमाल किए हुए अलफ़ाज़ दिखाई दे जाते हैं। जैसे "क्योंकि बुरे लोग हार जाएंगे, ख़ुदा पर भरोसा करने वाले ज़मीन के वारिस बनेंगे और अच्छी ज़िंदगी गुज़ारेंगे।"

ईसाईयों की मज़हबी किताब "बाइबिल" में भी आख़िरी ज़माने में आने वाले इस निजात देने वाले का ज़िक्र मिलता है। जैसे "जब इन्सान का बेटा शान व शौकत के साथ आएगा, सारे मुक़द्दस फ़रिश्तों के साथ (हुकूमत की) कुर्सी पर बैठेगा। सारे क़बीले यानी पूरी दुनिया के लोग उसके आस-पास इकट्ठा हो जाएंगे।" [3]

दूसरी जगह इस तरह से मिलता है, "उस दिन के बारे में सिवाए बाप (ख़ुदा) के कोई भी नहीं जानता है, न आसमान के फ़रिश्ते जानते हैं और न बेटा। उस दिन के बारे में डरो और दुआ करो क्योंकि तुम उसके आने के वक़्त को नहीं जानते हो, जैसे एक आदमी अपना घर बार छोड़ कर किसी लम्बे सफ़र पर गया है और घर की ज़िम्मेदारी नौकरों को दी है और हर एक को एक ख़ास काम और ओहदा दिया है और दरबान को जागते रहने का हुक्म दिया है। इसलिए जागते रहो क्योंकि तुम्हें नहीं मालूम है कि वह घर का असली ज़िम्मेदार कब आएगा। शाम के वक़्त या आधी रात को या सुबह सवेरे ऐसा न हो कि वह अचानक आ जाए और तुम्हें सोता हुआ पाए और मैं तुम लोगों से और सबसे यही कहता हूं कि जागते रहो।" [4]

हिन्दू और दूसरे मज़हब के मानने वालों के बीच भी यह अक़ीदा है कि आख़िरी ज़माने में एक निजात देने वाला आएगा। उपनिषद में आख़िरी ज़माने के बारे में कहा गया है, "जब दुनिया ख़त्म होने वाली होगी तो विष्णु का प्रतीक सफ़ेद घोड़े पर हाथ में तलवार लिए हुए आएगा, बुरे लोगों को

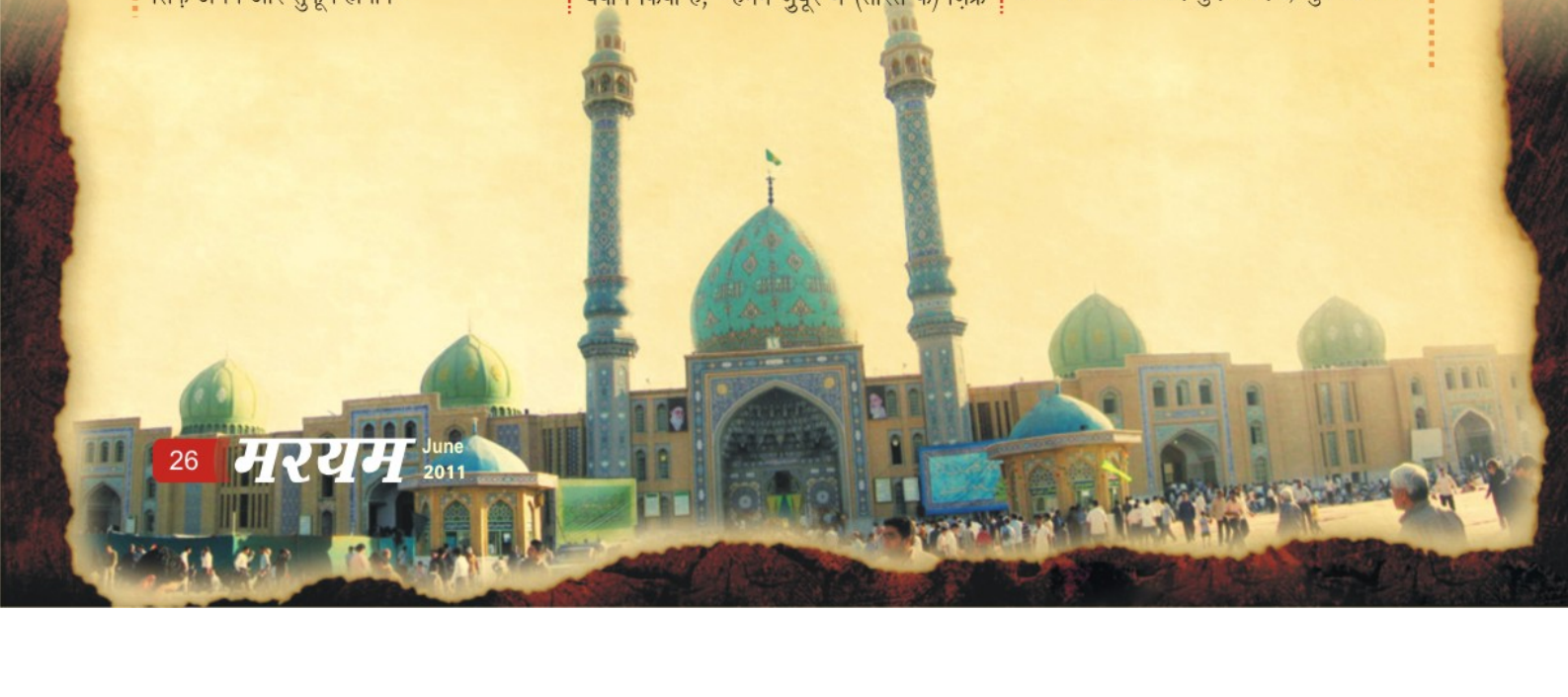

आपके लैटर्स

सलामुन अलैकुम
मैं एक बिज़निस मैन हूँ। काम के सिलसिले में हमेशा घर से बाहर रहता हूँ पर मझे हमेशा अपने बच्चों की परवरिश की फ़िक्र रहती थी लेकिन जब से मुझे 'मरयम' मिली है और मेरे बच्चों ने इस मैगज़ीन को पढ़ना शुरू किया है मेरी फ़िक्र ख़त्म हो गई है। इस बेहतरीन तोहफ़े के लिए मैं आपका शुक्रगुज़ार हूँ।

सैयद शहाब, कानपुर

सलामु अलैकुम
मेरे एक दोस्त ने मुझे मरयम मैगज़ीन पढ़ने के लिए दी थी और तब से मैं हमेशा इसे पढ़ रहा हूँ। बच्चे तो इस मैगज़ीन को पूरी पढ़े बिना छोड़ते ही नहीं हैं। इस मैगज़ीन को पढ़ने की वजह से मेरे घर का माहौल काफ़ी अच्छा हो गया है जिसके लिए मैं आपका शुक्रिया अदा करता हूँ।

मोहम्मद अली, मुम्बई

अस्सलामु अलैकुम
मैं मरयम मैगज़ीन को शुरू से पढ़ रही हूँ और इसका हर आर्टिकल मुझे बहुत अच्छा लगता है ख़ास तौर पर इमामों के बारे में आर्टिकल तो बहुत ही अच्छे होते हैं। अल्लाह आपको इस नेक काम के करने में मदद करे और आप लोगों का हौसले बनाए रखे।

अमीना, लखनऊ

MARYAM MAILBOX

maryammonthly@gmail.com

best Hindi magazine for women and families.

Salman Rajani

I feel very relaxed when I read this magazine. thnx 4 such a nice literature.

Kaneez Zohra

It's such a good instrument to make our youths true human beings. Thanks to " Maryam".

Zainab

"Maryam" aaj k doar ki zarurat hai. Keep it up....

Prof. Zargham

A website should be designed for going through this magazine online.

Mohammad Alim

Good way to know the best way to know about Parwarish.

Hasnain

TO,
MARYAM MAGAZINE
234/22, Thwai Tola
Victoria Street, Chowk
LUCKNOW-226003-INDIA

ख़त्म कर देगा और ज़मीन पर अच्छाईयों को वापस ले आएगा।'' [5]

मज़हबी किताबों के अलावा दुनिया के कुछ स्कॉलर्स ने भी इस निजात देने वाले के बारे में लिखा है। बर्नाड शॉ ने अपनी किताब 'मैन एंड सुपरमैन' में इस निजात देने वाले के बारे में लिखा है, ''वह एक तंदरूस्त और ज़िंदा इन्सान है जिसका जिस्म मज़बूत और अक़्ल बहुत तेज़ है। उसकी उम्र 300 साल होगी वह पूरी कोशिश करेगा कि एक अज़ीम इन्सान बने और अपनी लम्बी उम्र की वजह से उसे ज़माने के बहुत से तर्जुबे मिलेंगे जिनसे वह फ़ायदा उठाएगा।''

बर्नाड शॉ ने साफ़ अंदाज़ में इस रिफ़ार्मर की क्वालिटीज़ बताते हुए कहा है कि वह दुनिया में बड़े बदलाव लाएगा। हाँ! उम्र और तर्जुबे के बारे में उन्होंने जो बात कही है वह हमारे अक़ीदे से अलग है लेकिन इससे इतना अंदाज़ा हो जाता है कि हर इन्सान के दिल में यह ख़्याल है कि आख़िरी ज़माने में एक आदमी ज़रूर आएगा जो लोगों को निजात देगा।

इन सारे मज़हबों और इस्लाम का फ़र्क़ यह है कि दूसरे मज़हबों में सिर्फ़ यह बताया गया है कि आख़िरी ज़माने में एक शख़्स आएगा और उसके बारे में सिर्फ़ कुछ निशानियां और बातें बताई गई हैं लेकिन इस्लाम ने इस निजात देने वाले और रिफ़ार्मर को बहुत साफ़ अंदाज़ में बयान किया है। उसका नाम, उसकी निशानियां, उसके मां-बाप, ख़ानदान वग़ैरा के बारे में तफ़सील से बताया है और यह भी बताया है कि वह आने के बाद किस तरह पूरी दुनिया पर हुकूमत करेगा। उसे क़ुरआन में खुलासे के तौर पर और मुसलमानों के सारे फ़िरक़ों की किताबों में डिटेल के साथ बयान किया गया है और उसके बारे में उलमा ने अपनी किताबों में बहुत सी हदीसें लिखी हैं जिनमें रसूल[स०] ने इमामे ज़माना[अ०] के बारे में बताया है। हम अगले इश्यू में इस बारे में क़ुरआन की आयतों और हदीसों को आपके सामने पेश करेंगे।

1-तौरेत, दानियाल किताब, चेप्टर/12, 2-सूरए अम्बिया/106, 3-तौरेत, चेप्टर/37, 4-बाईबिल, मैथियू, चेप्टर/25, 5-उप निषद, 2/637

यह आर्टिकिल प्रोफ़ेसर नदीम अशरफ़ ने लिखा है। इसे हम उर्दू माहनामे तंज़ीमुल मकातिब के शुक्रिए के साथ इमाम अली अ० की विलादत के मौक़े पर अपने रीडर्स के लिए पेश कर रहे हैं। प्रोफ़ेसर नदीम अशरफ़ अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में शिया-सुन्नी दीनियात फ़ैकल्टी में मशग़ूल हैं...

इमाम अली अ० और हयूमन राइट्स

■ प्रोफ़ेसर नदीम अशरफ़

इस्लाम में हयूमन राइट्स की अहमियत

इस्लाम वह मज़हब है जो ख़ुदा की तरफ़ से पूरी दुनिया के लिए एक क़ीमती दौलत की तरह है। ख़ुदा के दीन की इस यूनिर्वसालिटी की डिमांड यह है कि ज्योग्राफ़िकल बाउंड्रीज़ से बाहर निकलकर सारी ज़मीन के इंसान इसके अंदर पनाह ले लें और इसके मानने वाले लोग सारी इंसानियत के लिए अमन व सलामती का पैग़ाम देने वाले बन जाएं।

इस्लाम में अगर हयूमन राइट्स की बात की जाए तो इस दीन की यूनिर्वसालिटी को पहचानने के बाद हम देखते हैं कि इस ख़ुदाई सिस्टम ने सारी ज़मीन व आसमान की मख़लूक़ में आदम व हव्वा की औलाद का क्या मुक़ाम बताया है और इस मुक़ाम तक कैसे पहुंचा जा सकता है।

सूरए वत्तीन की आयत/4 में इंसान का मुक़ाम हमें बताया गया है, ''हमने इन्सान को बहतरीन साख़्त में पैदा किया है''। सूरए इसरा/70 में इंसान के अफ़ज़ल होने को यूं बयान किया गया है, ''हमने आदम की औलाद को करामत दी है।''

इंसान के बुनियादी हक़ों में अहम हक़ यह है कि उसको बरतरी दी जाए, उसको जीने के रिसार्सेस अता किए जाएं और हलाल रिज़्क़ अता किया जाए। इसीलिए इस्लाम ने इन हक़ों का ख़ास ख़्याल रखा और इंसान को दूसरी सारी मख़लूक़ से ऊँचा मुक़ाम दिया गया जैसा कि ऊपर की आयतों से साफ़ है। इसी तरह रसूले इस्लाम स० की उन हदीसों से भी यह बात साबित होती है जो आपने अपने आख़िरी हज के मौक़े पर फ़रमाई थी, ''ऐ लोगो! तुम्हारा पालने वाला एक है, बाप एक है। तुम में न कोई अरब, ग़ैर अरब से बड़ा है और न ग़ैर अरब अरब से, न कोई सफ़ैद किसी काले से बड़ा है और न कोई काला किसी सफ़ैद से,

अगर कोई बड़ा है तो अपने तक़्वे और परहेज़गारी से।''

ख़ुलासा यह है कि इस्लाम में ह्यूमन राइट्स को एक अहम मुक़ाम दिया गया है। इसकी अहमियत का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि अल्लाह के हक़ों की अदाएगी में अगर कोई कमी हो जाए तो अल्लाह से तो यह उम्मीद की जा सकती है कि वह बंदों की ग़ल्तियों को माफ़ कर दे लेकिन जिन हक़ों का ताअल्लुक़ बंदों से है उनकी अदाएगी में किसी तरह की कमी को माफ़ नहीं किया जा सकता। जैसा कि मुस्लिम की रिवायत में है जिसमें सबसे बड़ा फ़क़ीर उस शख़्स को कहा गया है जिसके ऊपर दूसरों के हक़ हों चाहे वह नमाज़ी ही क्यों न हो या बहुत ज़्यादा ज़कात देने वाला ही क्यों न हो, उस वक़्त तक उसको निजात नहीं मिलेगी जब तक कि दूसरों के हक़ अदा न कर दे।[1]

ख़लीफ़ए रसूल हज़रत अली[अ०]

आपकी पैदाइश 13 रजब 30 आमुल फ़ील यानी 600 ई० जुमे के दिन काबे में हुई थी। आपके वालिद जनाबे अबू तालिब और माँ फ़ातिमा बिन्ते असद थीं। आप दोनों तरफ़ से हाशिमी हैं। दुनिया भर के हिस्टोरियंस ने आपके ख़ानए काबा में पैदा होने के बारे में कभी कोई शक नहीं किया है बल्कि सब का मानना यही है कि आप काबे मे पैदा हुए थे।[2]

कुन्नियत व लक़ब

आपकी कुन्नियत व लक़ब बहुत से हैं। कुन्नियत में अबुल हसन, अबू तुराब और अलक़ाब में अमीरुल मोमिनीन, मुर्तज़ा, असदुल्लाह, यदुल्लाह, नफ़्सुल्लाह, हैदरे कर्रार, नफ़से रसूल और साक़िए कौसर मशहूर हैं।

आपकी परवरिश

हज़रत अली[अ०] की ज़ात एक अकेली ऐसी ज़ात है पैदाईश के वक़्त से ही जिसकी परवरिश रसूले अकरम[स०] ने की है। बचपन से ही हर वक़्त और हर जगह रसूल के साथ-साथ रहने की वजह से आपके अंदर रसूल का अख़लाक़ और सीरत कूट-कूट कर भर गई थी। हज़रत अली[अ०] को शुरू ही से अच्छी परवरिश मिलने की वजह से उनका दामन जाहिलियत के ज़माने की सारी गंदिगयों और बुराईयों से पाक रहा।[3]

हज़रत अम्मार यासिर कहते हैं, ''रसूल अल्लाह[स०] ने हज़रत अली[अ०] से फ़रमाया कि ख़ुदा तुम्हें ऐसे ज़ेवरों से सजाए जिनसे उसने अपने किसी बंदे को न सजाया हो, वह ख़ुदा के ख़ालिस और नेक बंदों का ख़ास ज़ेवर है जो तक़्वा और दुनिया से बेरग़बती है, तुम्हें ख़ुदा ने ऐसा बनाया है कि तुम दुनिया की किसी भी चीज़ से अपने आपको आलूदा न करो।[4]

आपकी ख़ुसूसियतें

मौलाना ज़ियाउद्दीन बर्नी जो हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीद थे, लिखते हैं कि सहाबा में मुर्तज़ा[अ०] को कई हैसियतों से यक़ीनी तौर पर शर्फ़ और बुज़ुर्गी हासिल है। सबसे पहले यह कि वह रसूले ख़ुदा[स०] के चचाज़ाद भाई हैं, दूसरे यह कि रसूल अल्लाह[स०] ने हज़रत अली[अ०] के मां-बाप की गोद में परवरिश पाई है, तीसरे यह कि अली[अ०] रसूल अल्लाह[स०] के नूरे नज़र यानी हसन-हुसैन[अ०] के बाप थे, चौथे यह कि पैग़म्बर ने उनको सहाबियों में सबसे बड़ा ज़ाहिद कहा, पांचवें यह कि सहाबियों में इल्म के लिहाज़ से उनकी कोई मिसाल नहीं थी, छठे यह कि इस्लाम से पहले भी कुफ़्र व शिर्क उनके दिल में एक लम्हे के लिए दाख़िल न हुआ और सातवें यह कि उनकी सख़ावत के बारे में कई आयतें नाज़िल हुईं।[5]

आपकी ख़िलाफ़त का ज़माना

मौलाना अबुल हसन अली नदवी आपकी ख़िलाफ़त के बारे में लिखते हैं, ''ख़िलाफ़त के पूरे ज़माने को एक मुसलसल कोशिश, एक कशमकश, एक मुसलसल सफ़र में गुज़ारना लेकिन न थकना, न मायूस होना, न बददिल होना, न शिकायत करना, न आराम की ख़्वाहिश, न मेहनत का शिकवा, न दोस्तों का गिला, न दुश्मन की बुराई, अपनी तारीफ़ और बुराई से बेपरवाह, जान से बेपरवाह, अंजाम से बेपरवाह, माज़ी का ग़म न आने वाले ज़माने का डर, ज़िम्मेदारियों का पूरा-पूरा एहसास और कोशिशों का न टूटने वाला एक सिलसिला, दरिया जैसा सब्र, सूरज और चांद की तरह पाबंदी, हवाओं और बादलों की तरह ज़िम्मेदारियों का एहसास। ऐसा लगता है कि जिस तरह तलवार उनके हाथ में सरगरम और बेज़बान है इसी तरह वह किसी और हस्ती के सामने सरगरम और शिकवा-शिकायतों से दूर हैं, ईमान व इताअत का वह मुक़ाम जो 100% यक़ीन को हासिल होता है लेकिन उसका पहचानना और उन नज़ाकतों और मुश्किलों से समझना बड़ी गहरी नज़र रखने वाले का काम है। इसलिए उनकी ज़िंदगी और उनकी अज़ीम शख़्सियत का पहचानना एक बड़ा इम्तिहान है।[6]

हज़रत अली[अ०] और ह्यूमन राइट्स

जो कुछ अब तक कहा गया है उससे यह बात बहुत ही अच्छे अंदाज़ से साबित हो जाती है कि हज़रत अली[अ०] की परवरिश और तरबियत हज़रत मुहम्मद[स०] के ज़रिए हुई और आपको इस बात का शर्फ़ हासिल है कि हर जगह आपको रसूले ख़ुदा[स०] के साथ ज़िंदगी गुज़ारने का मौक़ा मिला। इसलिए आपकी ज़िंदगी को हज़रत मुहम्मद[स०] की सीरत का आईना कहा जा सकता है।

इसीलिए हम देखते हैं कि रसूले इस्लाम[स०] ने किसी मज़हब या क़ौम की शर्त लगाए बिना ह्यूमन राइट्स को अदा करने के लिए मुसलमानों को उभारा और ख़ुद अपनी कोशिशों के ज़रिए इस बात की तरफ़ ध्यान दिलाया कि तुम्हारी निजात ह्यूमन राइट्स और बंदों के हक़ों की अदाएगी के साथ जुड़ी है। हज़रत अली[अ०] एक बहुत लम्बे ज़माने तक आपके साथ रहे थे इसलिए न सिर्फ़ यह कि आपकी बातों और नसीहतों में ह्यूमन

राइट्स की तालीमात मिलती हैं बल्कि अलग-अलग मौक़ों पर अल्लाह के बंदों के साथ आपके किए गए मामले इस बात के गवाह हैं कि हज़रत अली[अ०] हयूमन राइट्स के सबसे बड़े अलमबरदार हैं और आपकी इस सिलसिले में की गई कोशिशें बाद वालों के लिए एक नमूना हैं।

समाज के कमज़ोर तबक़ों के लिए आपकी कोशिशें

रसूले इस्लाम[स०] के ज़माने से इंसाफ़, बराबरी व तरक़्क़ी की सीढ़ी पर चढ़ते हुए समाज ने अरब की समाजी, मज़हबी व सियासी ज़िन्दगी का रुख़ बदल दिया था। मेहनत-मशक़्क़त, सोशल रिफ़ार्म व सोशल सर्विस मुसलमानों के लिए एक ख़ास रोशनी बन गई थी।

इसी चिराग़ की रोशनी को और तेज़ करते हुए हज़रत अली[अ०] ने अपनी ज़िंदगी सोशल सर्विस के लिए वक़्फ़ कर दी थी, अपने बचपन से ही उन्होंने अपने आपको इंसानों की भलाई और तरक़्क़ी के कामों के साथ जोड़ लिया था।[7]

हज़रत अली[अ०] की सख़ावत का यह आलम था कि ग़ुरबत और फ़ाक़ों के दिनों में भी जो कुछ वह दिन भर की मज़दूरी के बाद कमाते थे उसका एक बड़ा हिस्सा ग़रीबों और फ़ाक़ाकश लोगों में बांट दिया करते थे। इसके अलावा कभी किसी मांगने वाले को अपने दरवाज़े से ख़ाली हाथ वापस जाने नहीं देते थे।[8]

आपके तक़वे और परहेज़गारी का यह आलम था कि कड़ी सर्दी में भी एक चादर जो मदीने से लाए थे उसी को ओढ़ते थे। बदन कांप रहा है लेकिन अमीरुल मोमिनीन[अ०] होने के बावजूद सरकारी ख़ज़ाने से इस वजह से नहीं लेते थे कि किसी मुसलमान का हक़ न छिन जाए।[9]

हज़रत अली[अ०] की ज़िंदगी का यह अंदाज़ इस बात की साफ़ दलील है कि आप दूसरों के हक़ों का बहुत ज़्यादा ख़्याल रखते थे, यहां तक कि आपने सख़्त ठंडक की परेशानियां बर्दाशत कर लीं लेकिन बैतुल माल से सिर्फ़ इस वजह से अपने लिए आराम की चीज़ नहीं ली कि कहीं किसी मुसलमान का हक़ न छिन जाए।

आप दूसरों के हक़ों को पूरा करने के लिए किसी के भी ऐतराज़ की परवा नहीं करते थे। एक बार हज़रत अली[अ०] ने बैतुल माल से लोगों के हिस्से को बराबर से बांटा तो कुछ लोगों ने ऐतराज़ कर दिया। हज़रत अली[अ०] ने उनसे कहा कि क्या तुम यह चाहते हो कि जिनकी ज़िम्मेदारी मुझे सौंपी गई है उन पर ज़ुल्म करके तुम्हारी हिमायत ले लूँ। ख़ुदा की क़सम! तुम्हारे एतेराज़ की परवा न करके उस वक़्त तक ऐसा करता रहूंगा जब तक यह दुनिया बाक़ी है और जब तक चांद सितारे आसमान में हैं। अगर यह माल-दौलत मेरी मिलकियत होती तो भी मैं इसे उनके बीच बराबर से ही बांटता तो क्यों न अल्लाह के माल को बराबर से बांटू।[10]

इमाम बैहक़ी ने लिखा है कि हज़रत अली[अ०] का वजूद रिआया के लिए रहमत था। बैतुल माल के दरवाज़े ग़रीबों और मिसकीनों के लिए खुले हुए थे और उसमें जो रक़म भी होती थी बड़े खुले दिल के साथ मुस्तहक़ लोगों में बांट दी जाती थी। ईरान में ख़ुफ़िया साज़िशों की वजह से बार-बार बग़ावत हुई लेकिन हज़रत अली[अ०] ने हमेशा रहम दिली से काम लिया। यहां तक कि ईरानी इस महरबानी और रहम दिली से मुताअस्सिर होकर कहते थे कि ख़ुदा की क़सम इस अरबी ने नौशेरवां आदिल की याद ताज़ा कर दी है।

हज़रत अली[अ०] को लोगों के हक़ों का इतना ख़्याल था कि ख़लीफ़ा होने की वजह से हर चीज़ आपके पास थी लेकिन आप सादा ज़िंदगी गुज़ारते थे, सादा ग़िज़ा और सादा लिबास शुरू से आख़िर तक आपकी आदत रही, जौ कि सूखी रोटी खाते थे और मोटा-लम्बा कुर्ता और इसी तरह की अबा और अमामा पहनते थे लेकिन मुलाज़िमों को अच्छा लिबास दिलाते थे, ग़ुलामों और कनीज़ों को आज़ाद करते थे, घर के और ज़ाती काम ख़ुद करते थे। एक बड़ी इंसानी अच्छाई यह थी कि आप मामूली ग़रीब मुसलमानों से भी मिलते थे और

जाहिलों की निशानियां

एक आदमी ने रसूले ख़ुदा[स०] से जाहिलों की निशानियों के बारे में पूछा तो आपने फ़रमाया:

1-जाहिल के पास बैठोगे तो वह तुम्हें थका डालेगा।

2-उससे दूर हो गए तो वह तुम्हें गाली देगा।

3-वह तुम्हें कुछ देगा तो एहसान जताएगा।

4-तुम उसे कुछ दोगे तो नाशुक्री करेगा।

5-तुम उसे राज़दार बनाओगे तो ख़्यानत करेगा।

6-वह तुम्हें राज़दार बनाएगा तो तुम पर इल्ज़ाम लगाएगा।

7-बेनियाज़ हो जाएगा तो वह इतराएगा और बहुत बुरे सुलूक और बे इज़्ज़ती से पेश आएगा।

8-फ़क़ीर व मोहताज हो जाएगा तो बेझिझक ख़ुदा की नेमतों का इंकार करेगा।

9-ख़ुश होगा तो इसराफ़ और ज़ुल्म करेगा।

10-परेशान होगा तो नाउम्मीद हो जाएगा।

11-हंसेगा तो क़हक़हे लगाएगा।

12-रोएगा तो बेताब हो जाएगा और ख़ुद को नेक समझेगा जबकि न ख़ुदा से मुहब्बत करता है और न ही उससे डरता है, न ख़ुदा से शर्माता है और न ही उसे याद करता है।

13-उसे राज़ी करोगे तो तुम्हारी तारीफ़ करेगा और ऐसी अच्छाईयां बताएगा जो तुम्हारे अन्दर नहीं होंगी।

14-तुम से नाराज़ होगा तो तुम्हारी तारीफ़ नहीं करेगा और ऐसी बुराईयों की तरफ़ इशारा करेगा जो तुम्हारे अन्दर नहीं होंगी। यह हैं जाहिल की निशानियां। (किताब अक़्ल, मुहम्मदी रे-शहरी/300)

उनको अपने पास बिठाते थे।[11]

हज़रत अली[अ०] रसूले इस्लाम[स०] के ज़माने में भी अपनी ज़ाती जायदाद और माल लोगों की भलाई के लिए ख़र्च कर देते थे। उन्हें लगता था कि उनके माल में ग़रीबों और ज़रूरतमंदों का भी हक़ है। अय्यूब बिन अलैह हज़ा कहते हैं कि मैंने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] को यह कहते सुना है कि रसूल अल्लाह[स०] ने माले ग़नीमत बांट दिया तो हज़रत अली[अ०] के हिस्से में ज़मीन आई। आपने उस ज़मीन में कुंआ खोदा और उसका नाम यमबा रखा। लोगों ने आपको उसकी मुबारकबाद दी तो आपने फ़रमाया कि उसके असल वारिस को मुबारकबाद दो। मैंने उसे ख़ुदा की राह में हज करने वालों के नाम कर दिया है। यह ज़मीन कभी बेची नहीं जा सकती और न ही किसी को तोहफ़े में दी जा सकती है और न यह विरासत में किसी को हासिल हो सकती है।[12]

आपके ख़ुतबों में ह्यूमन राइट्स पर ज़ोर

हज़रत अली[अ०] ने ह्यूमन राइट्स के बारे में अपने बेटे इमाम हसन[अ०] को वसीयत करते हुए जिस तरह तालीम दी है वह सारी इन्सानियत के समझने के लिए काफ़ी है।

आपने फ़रमाया, "ऐ बेटा! अपने और दूसरों के बीच में हर मामले में अपनी ज़ात को तराज़ू मान कर चलो! जो अपने लिए पसंद करते हो वही दूसरों के लिए पसंद करो और जो अपने लिए नहीं चाहते हो वह दूसरों के लिए भी न चाहो। जिस तरह यह चाहते हो कि तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव हो वैसे ही दूसरों के साथ अच्छे बर्ताव करो! दूसरों के लिए वह बात न कहो जो अपने लिए सुनना पसंद नहीं करते। ख़ुद को अपने भाई के लिए इस बात पर तैयार करो कि जब वह दोस्ती तोड़े तो तुम उसे जोड़ो, वह मुंह फेर ले तो तुम आगे बढ़ो और उसके साथ मेहरबानी से पेश आओ। वह तुम्हारे लिए कंजूसी करे तो तुम उस पर ख़र्च करो, वह तुमसे दूर हो तो तुम उसके पास जाने की कोशिश करो, वह सख़्ती करे और तुम नर्मी करो, वह ग़ल्ती करे और तुम उसको माफ़ करने का कोई बहाना तलाश करो।"

आपने एक जगह फ़रमाया, "इंसाफ़ से दोस्त ज़्यादा होते हैं। रहमदिली और मेहरबानी से इज़्ज़त बढ़ती है। झुक कर मिलने से नेमतें बढ़ती हैं। दूसरों का बोझ उठाने से सरदारी मिलती है। दूसरों के पसमांदगान के साथ भलाई करो ताकि तुम्हारे पसमांदगान पर भी मेहरबानी की जाए।"[13]

एक जगह इमाम अली[अ०] फ़रमाते हैं, "जिसने तुमको माल-दौलत बख़्शी है उसकी राह में तुम उसे ख़र्च नहीं करते हो और न अपनी जानों को उसके लिए ख़तरे में डालते हो जिसने उनको पैदा किया है। तुम ने अल्लाह की वजह से बंदों में इज़्ज़त पाई लेकिन उसके बंदों के साथ अच्छा बर्ताव करके उसका एहतेराम नहीं करते।[14]

एक और जगह आप नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं, "जिस किसी को अल्लाह देता है उसे चाहिए कि वह उसे अपने अज़ीज़ों के साथ अच्छे बर्ताव के लिए इस्तेमाल करे। उसे ग़रीबों और क़र्ज़दारों को देने में ख़र्च करना चाहिए। हक़ की अदाएगी में और सिले की उम्मीद में ज़हमत उठाना चाहिए।"[15]

इसी तरह हज़रत अली[अ०] ने ख़ैरात की तक़सीम को समाजी और फ़ाइनेंशल कामों का वाजिबी हिस्सा बताया है। आपने लोगों को नसीहत की कि वह आपसी मदद के कांसेप्ट पर अमल करें। आपके मुताबिक़ ज़रूरतमंदों की मदद और सहारा देने की आदत इंसान के मुक़ाम को बुलंद करती है। आप फ़रमाते हैं कि थोड़ा देने में शर्म न करो क्योंकि इन्कार इससे भी छोटा होता है।[16]

हज़रत अली[अ०] ने समाज की मज़बूती और दिली जुड़ाव पर ज़ोर देते हुए कहा है, "लोगों से इस तरह मिलो कि मर जाओ तो तुम पर रोएं और ज़िंदा रहो तो तुम से मिलने के लिए बेताब रहें।[17]

हज़रत अली[अ०] के इन सारे अक़वाल व नसीहतों की रोशनी में यह बात साफ़ हो जाती है कि आपने अपनी पूरी ज़िंदगी ह्यूमन राइट्स को फैलाने और उन्हें पूरा करने पर लोगों में शौक़ पैदा करने में बसर कर दी थी। साथ ही यह भी अंदाज़ा होता है कि आपके यहां ह्यूमन राइट्स का कांसेप्ट बड़ा फैला हुआ और गहरा है यानी सिर्फ़ दुनियावी चीज़ें ही ह्यूमन राइट्स के अंदर नहीं आतीं हैं बल्कि एक समाज में रह कर आपसी रिश्तों को अच्छा बनाना और दोस्ती और आपसी मदद का माहौल पैदा करना भी आपसी हक़ों में से है जिनको पूरा करना एक अच्छे और ख़ुशहाल समाज के लिए ज़रूरी है।

1-किताब मुस्लिम, अलबिर वस्सिला, 2-मुस्तदरक हाकिम, 3/483, 3-शाह मुईन उद्दीन, तारीख़े इस्लाम, 1/368, 4-मनाक़िब आले अबी तालिब, 294, तारीख़े फ़ीरोज़ शाह, 45, 6-अलमुर्तज़ा, 7-मसऊदुल हसन, हज़रत अली मुर्तज़ा[अ०], देहली, 3, 8-नहजुल बलाग़ा, 9-शाह मुईन उद्दीन, तारीख़े इस्लाम, 10-नहजुल बलाग़ा, 11-हज़रत अली[अ०], उर्दू दायरतुल मआरिफ़ इस्लामिया दानिशगाह पंजाब, लाहौर, 12-नहजुल बलाग़ा, 13-नहजुल बलाग़ा, 14-नहजुल बलाग़ा, 15-मसऊदुल हसन, हज़रत अली[अ०], 16-नहजुल बलाग़ा, 17-हिकम व मवाएज़/43

एजूकेशन की अहमियत

■ इंजीनियर सै. हसन रज़ा नक़वी

ख़ुदा ने इन्सान को पैदा करते ही अपनी पसंद का एलान कर दिया था और दूसरी सारी मख़लूक़ पर आदम अ० को सनद सिर्फ़ इस बिना पर दी थी कि जो 'इल्म' आदम अ० के पास था वह किसी और के पास नहीं था। अपने आख़िरी रसूल का दौर आते-आते उसने अपनी इस पसंद पर मोहर भी लगा दी यानी वह आयत जो हर हफ़्ते सूरए जुमा में हम पढ़ते हैं "जो किताब और हिकमत की तालीम देता है और नुफ़ूस को पाक करता है" वह मेरा हबीब ही है भले ही वह तुममें से हो यानी ख़ुदा की नज़र में 'आदमी' वही है जो इल्म का शौक़ीन है मगर हम एजूकेशन के मैदान में दिन ब-दिन अपनी ग़फ़लत को बढ़ाते जा रहे हैं। नतीजा यह है कि ग़ुरबत और माली मुश्किलों को हमने अपना मुक़द्दर बना लिया है।

थोड़ा कांफ़िडेन्स इस बात से ज़रूर मिलता है कि क़ौम के समझदार और बेदार लोगों ने संजीदगी के साथ इस तरफ़ सोचना शुरू कर दिया है। इसलिए ज़रूरी है कि क़ौम को झिंझोड़ा जाए और एजूकेशन की तरफ़ उसका ध्यान दिलाया जाए ।

हमारा पहला स्कूल खुद हमारे पैरेंट्स की गोद होती है जहां न सिर्फ़ बुनियादी अकाएद, तमीज़ और तहज़ीब सिखाई जाती है बल्कि बच्चों की सोच को भी एक एंगिल मिलता है और यही एंगिल धीरे-धीरे ज़िन्दगी का रास्ता बन जाता है। फिर भले ही आप उसे किसी दर्सगाह में भेज दें, कहीं न कहीं मां-बाप की गोद, परवरिश की झलक दिखाला ही देती है।

फिर एक लम्बा दौर एक दूसरे को इल्ज़ाम देने का शुरू होता है। पैरेंट्स को टीचर्स से शिकायत और टीचर्स को पैरेंट्स से शिकायत, जबकि यह दोनों ही अपने हद से ज़्यादा बिज़ी होने और दुनिया भर की भाग-दौड़ में लगे रहने की वजह से बच्चों को और अंधियारों का आदी बनाते जाते हैं। जिसका रिज़ल्ट यह होता है कि बच्चे के अंदर से सेल्फ़-कांफ़िडेन्स, मुक़ाबले का शौक, आगे बढ़ने की उमंग, मंज़िल की तलाश सब के सब ग़ायब हो जाते हैं। यहीं से एजूकेशन में रूकावटें पैदा होने लगती हैं। यही वजह है कि एक बड़ी मेजॉरिटी प्राइमेरी के बाद या हद से हद हाई स्कूल की पढ़ाई से उकता जाती है। उनमें कुछ ने अगर ग्रेजुएशन कर भी लिया तो उन्हें मंज़िल का पता नहीं होता। बहुत से बच्चे सिर्फ़ दो ही पेशों को जानते हैं, डाक्टर बन जाएं या इंजीनियर। इस ख़्वाब के साथ दुसरे सारे कोर्सेस से अंजान, एक थके हुए मुसाफ़िर की तरह एजूकेशन ही ख़त्म कर देते हैं।

यह सब क्यों होता है?

क्योंकि या तो पैरेंटस के पास वक़्त नहीं होता या वह इल्म की अहमियत को नहीं समझते या फिर अपनी ज़िम्मेदारियों का एहसास नहीं होता।

बच्चों को सिर्फ़ स्कूल में एडमीशन दिला देना ही काफ़ी नहीं है, रोज़ उनके होम-वर्क की डायरी देखना, हफ़्ते में कम से कम एक बार टीचर्स से मिलना, रोज़ कम से कम दो घंटे बच्चों के साथ वक़्त गुज़ारना, भले ही सिर्फ़ निगरानी की हद तक हो और उनके अंदर सेल्फ़-कांफ़िडेन्स पैदा करना, यह ज़िम्मेदारियां पैरेंट्स की हैं। जो बच्चा हाई स्कूल तक बेहतरीन नम्बरों से पास होता गया फिर उसे ज़्यादा निगरानी की ज़रूरत नहीं होती और वह हायर-एजूकेशन के लिए तैयार हो जाता है और अच्छे कालिज में उस का एडमीशन आसान हो जाता है। हाई स्कूल के बाद आगे के कोर्सेस चुनने में बच्चे के रूझान पर भी ध्यान देना चाहिए यानी सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश और पसंद को बच्चों पर न थोपें। आज हाई स्कूल और इंटर मीडियट के बाद सैकड़ों कॉम्पटीशंस हमारे सामने मौजूद हैं। आमतौर से फ़रवरी के बाद फ़ार्म वग़ैरा मिलने लगते हैं। हर शहर में यह आसानियाँ मौजूद हैं। बस होशयार रहने की ज़रूरत है। बहुत से बच्चे सब कुछ करके और अच्छी सलाहियत होने के बावजूद सिर्फ़ न जानने की वजह से कॅरियर ख़राब कर लेते हैं। *'डेट निकल गई'* बड़ी आम बात है जो नौजवानों से अक्सर सुनने को मिलती है।

पैरेंट्स और बच्चों दोनों के अंदर एक बैलेंस होना चाहिए। सिर्फ़ पढ़ाई, सिर्फ़ खेल, सिर्फ़ तफ़रीह, सिर्फ़ मज़हबी रस्मों को अंजाम देना, सिर्फ़ मस्जिद...ज़्यादती है लेकिन यह सब होना भी ज़रूरी है मगर हर चीज़ बैलेंस के साथ।

आज अलीगढ़ मुस्लिम युनिवर्सिटी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया और दूसरे बहुत से एजूकेशनल इंस्टिट्यूट हमें पुकार रहे हैं मगर हम बेख़बरी की चादर ओढ़े सो रहे हैं।

इन यूनिवर्सिटीज़ के प्रॉस्पेक्टस ज़रूर हासिल कीजिए और देखिए कि एजूकेशन के कितने रास्ते खुल गए हैं, कितने प्रोफ़ेशनल कोर्सेस शुरू हो चूके हैं, शहरों-शहरों इन काम्पटीशंस के सेन्टर रखे जाते हैं।

हमने यह सिलसिला 'मरयम' के ज़रिए शुरू करने के लिए पहला कदम उठाया है। यह कोशिश जारी रहेगी और हम यह भी कोशिश करेंगे कि वक़्त पर एडमीशंस और एक्ज़ाम्स वग़ैरा की इंफ़ार्मेशन भी आपको देते रहें।

कहानी

MATHEMATICS

इम्तेहान

■ फ़रहा नाज़

आज सुबह से मैं बहुत परेशान थी। जब नाश्ते की मेज़ पर पहुंची तो अम्मी ने मेरी शक्ल देखते हुए कहा, "बेटी! आयतल कुर्सी पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लेना और यह बादाम वाला दूध ज़रूर पी कर जाना! ख़ुदा ने चाहा तो सब ठीक हो जाएगा।"

अम्मी के बाद पापा कहने लगे, "इस बार मेरा पैसा बर्बाद नहीं होना चाहिए! इस साल मैंने तुम्हारे मैथ्स के ट्यूटर को बहुत बड़ी रक़म दी है!" फिर वह धीरे से बड़बड़ाए, 'अगर यह रक़म मैं अपने कारोबार में लगाता तो बहुत फ़ायदा होता।"

कालेज में आज बहुत भीड़ थी। सप्लिमेंट्री का इम्तिहान देने के लिए बहुत सी स्टूडेंट्स आई हुई थीं। क्लास में आकर टीचर ने हम सब पर एक गहरी नज़र डाली और कहने लगीं, "सब ठीक तरह से बैठ जाओ और इत्मिनान से अपना-अपना पेपर करो। कोई किसी दूसरे की कापी को न देखे।"

इसके बाद कापियां और पेपर बांटा गया। एक लड़की ने हिम्मत करके पूछा, "मैम! क्या पेपर आसान है?"

"अगर आपने तैयारी की है तो बिल्कुल आसान है।"

अब पेपर मेरे सामने है। डिवाईड, मल्टिपिल, अलजबरा और न जाने कौन-कौन से सिम्बल्स पेपर में बने हुए हैं! मेरी कुछ समझ में नहीं आ रहा। मुझे तो सिर्फ़ पापा की ख़र्च की हुई रक़म याद है जो मेरा पेपर किल्यर करवाने के लिए ख़र्च की गई है। मैंने कोशिश की कि अपनी आंखों में दूरबीन लगा कर अपने आगे या बराबर में बैठी हुई लड़की के जवाब देख लूं। अचानक इंसट्रक्टर की आवाज़ आई, "सिर्फ़ अपनी-अपनी कापी पर नज़र रखो।" यह कहकर वह मेरे पास ही ख़ड़ी हो गईं।

सब लड़कियां तेज़ी के साथ जवाब लिख रही हैं लेकिन मेरा सर बुरी तरह चकरा रहा है और मैथमैटिक्स के सिम्बल्स मेरी आंखों के सामने भूत बन कर घूमने लगे हैं। ऐसा लग रहा है जैसे यह भूत मुझे उठा कर ले जाएंगे और किसी अंधे कुंए में बंद कर देंगे। पेपर में क्या लिखा है क्या नहीं, मुझे कुछ याद नहीं। बहेरहाल तीन घंटे बाद एक्ज़ाम ख़त्म हुआ और मैं घर आ गई।

"क्या हुआ बेटी! एक्ज़ाम कैसा रहा?" घर में घुसते ही अम्मी ने घबराहट के आलम में सवाल करते हुए ठंडे पानी का ग्लास मेरे हाथ में थमाया और बैग और किताबें मेरे हाथ से ले लीं।

"बस, बुरा नहीं हुआ!" मैंने लापरवाही के साथ थके-थके से लहजे में जवाब दिया और सोफ़े पर बैठते हुए एक ही सांस में सारा पानी पी गई।

"शाबाश बेटा! शाबाश! इतना पैसा ख़र्च होने के बाद कहा जा रहा है

MATHEMATICS

कि बुरा नहीं हुआ! यानी अब भी यह नहीं कि बहुत अच्छा हुआ! देख लिए बेगम आपने अपनी लाडली के कारनामे?''

पापा ने अपने कमरे से बाहर निकलते हुए कहा। मैं हड़बड़ा कर उठ बैठी और जल्दी से सलाम किया। शायद आज पापा जल्दी घर आ गए थे लेकिन सलाम का जवाब देने के बजाए वह कड़ी नज़रों से मुझे और अम्मी को देखते हुए घर से बाहर निकल गए। बाहर जाते वक़्त वह दरवाज़ा ज़ोर से बंद करना नहीं भूले थे।

अम्मी हाथ में फ्रूट की प्लेट लिए मेरे पास आ बैठीं। उन्होंने आंसू पोछने के लिए मुझे टिशू पेपर दिया और प्लेट मेरे आगे रख दी। फिर तसल्ली देते हुए कहने लगीं, ''बेटा! तुम तो जानती हो अपने पापा को। वह दिल के अच्छे हैं और तुम्हारा भला चाहते हैं। बस उन्हें गुस्सा जल्दी आ जाता है।''

''जबीन! सच बताओ तुम पास हो जाओगी ना?'' अम्मी ने पूछा।

''मैं कुछ नहीं कह सकती!'' यह कह कर मैं उठकर अपने कमरे में चली गई। मुझे पता है कि वह भी अकेले में रो रही होंगी।

अपने कमरे में बिस्तर पर लेटे-लेटे मैं सोचने लगी कि अगर मुझे मैथमैटिक्स के सब्जेक्ट में कोई दिलचस्पी नहीं है तो इसमें मेरी क्या ग़लती है? मैं तो शुरू ही से आर्टस लेना चाह रही थी लेकिन बस अब्बू को शौक़ था कि जब उनकी भतीजी साइंस स्ट्रीम में है तो मुझे भी साइंस ही लेनी चाहिए। यही सब कुछ सोचते हुए मुझे नींद आ गई।

रात को अचानक पापा बहुत ख़ुश-ख़ुश घर में आए और आते ही कहने लगे कि लाओ भई कुछ खाने को लाओ।

अम्मी ने जल्दी से एक बड़ा सा अनार छील कर दाने प्लेट में निकाले और पापा के आगे रख दिए और कहा, ''आप अनार लीजिए तब तक मैं रोटी उतार लूं।''

बड़े शौक़ से अनार खाते हुए कहने लगे, ''मैं आज आमिर के पास गया था!''

''कौन आमिर?वही तो नहीं जो स्कूलों और कालेजों में सामान सप्लाई करता है?'' अम्मी ने कुछ सोचते हुए कहा।

''हां, हां वही।'' पापा ने जवाब दिया।

''लेकिन आप तो बहुत दिन हुए उसके पास नहीं गए।'' अम्मी ने हैरत से पूछा।

''हां गया तो नहीं था लेकिन बहेरहाल वह है तो मेरा पुराना दोस्त ही। बेचारे ने मेरे सामने दस ग्यारह फ़ोन कर डाले तब कहीं जाकर पेपर चेक करने वाले का पता लगाया।'' पापा ने जोशीले लहजे में बताया।

''अब वह क्या करेंगे?'' अम्मी ने सादगी से पूछा।

''अरे तुम आमिर को नहीं जानती, वह बड़ी ऊंची चीज़ है। वह इस बार हमारी बेटी को पास करवा ही देगा!'' पापा ने सोफ़े से टेक लगाते हुए इत्मिनान से बताया।

आज रिज़ल्ट आउट होना था। अम्मी पापा दोनों मुतमईन थे क्योंकि उन्हें आमिर साहब पर भरोसा था कि वह ज़रूर मुझे पास करवा देंगे लेकिन मुझे कोई ख़ुशी नहीं थी। मुझे इस सब्जेक्ट में पास होने से कोई दिलचस्पी नहीं थी।

आख़िरकार रिज़ल्ट आया और फिर वही हुआ जो होना था यानी आमिर साहब की सारी कोशिशें और पापा का सारा पैसा बेकार हो चुका था और मैं फिर फ़ेल हो गई थी। अम्मी फूट-फूट कर रो रही थीं और पापा मुट्ठियां भींचे कमरे में टहल-टहल कर आमिर साहब को बुरा-भला कह रहे थे। उनको ज़्यादा गुस्सा इस बात पर आ रहा था कि आमिर साहब ने अपना फ़ोन लगातार इंगेज कर रखा था! पापा कई बार फ़ोन मिलाने में नाकाम होने के बाद रिसीवर पटख़ चुके थे। दो दिन इसी कशमकश में गुज़र गए। आमिर साहब फ़ोन पर मिलते ही नहीं थे। तीसरे दिन शाम के वक़्त आख़िर में वह मिल ही गए! मैं उस वक़्त चाय पी रही थी और पापा आमिर साहब से फ़ोन पर बात कर रहे थे।

''सलाम अर्ज़ करता हूं जनबा आमिर साहब!'' पापा ने तंज़िया लहजे में बात शुरू की। ''बहुत एहसान किया आपने.. जी हां बड़ा कारनामा किया है..... अच्छा, अच्छा... हां ठीक

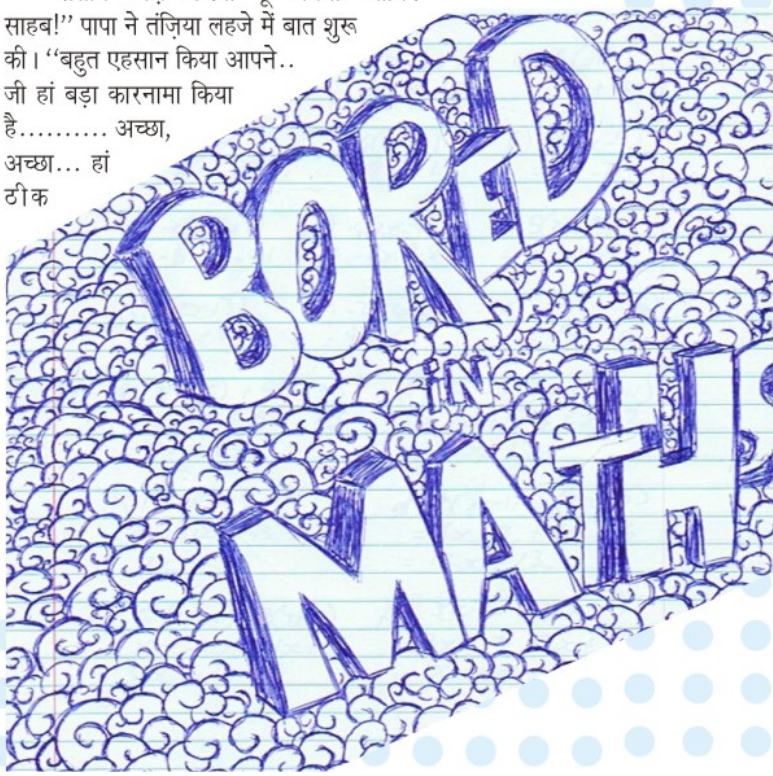

है... चलो सही है कल आ जाओ। मैं इंतिज़ार करूंगा... ख़ुदा हाफ़िज़।''

मैंने नोट किया कि पापा ने बात बहुत ग़ुस्से और तंज़ में शुरू की थी लेकिन एक दो जुमलों में ही ठंडे पड़ गए थे! बाद में पता चला कि आमिर साहब ने पेपर चेक करने वाले का पता लगाया है और कल पापा को उसके पास ले जाने के लिए आने वाले हैं। उन्हें उम्मीद थी कि रिज़ल्ट आउट हो जाने के बाद भी अगर ऐतराज़ किया जाए तो पास हुआ जा सकता है। इसलिए अगर पापा ख़ुद उससे बात कर लें तो मैं ज़रूर पास हो जाऊंगी!

अगले दिन अम्मी और पापा ने बाज़ार जाकर बहुत सारे तोहफे ख़रीदे, फ्रूट के पैकिट्स तैयार किए और शाम का इंतिज़ार करने लगे। शाम चार बजे के क़रीब मैं और अम्मी किचन की ख़िड़की से झांक रहे थे। फिर साढ़े चार बजे घंटी बजने की आवाज़ आई। हम फ़ौरन बाहर निकले। दरवाज़े पर आमिर साहब पापा और अम्मी को लेने के लिए आए हुए थे। इसलिए कि पेपर चेक करने वाली एक लेडी टीचर थीं और आमिर साहब का कहना था कि अम्मी भी साथ चलें तो अच्छा रहेगा।

जब तक अम्मी तैयार होतीं मैंने उनके लिए चाय बनाई और पापा के साथ उनकी बातें भी सुनती रही। वह कह रहे थे कि मैं फूलों का क़ीमती बुके बनवा कर और एक टोकरा फूलों का लेकर ख़ुद मिस के पास गया था लेकिन उन्होंने न सिर्फ़ मेरे फूल और फल वापस कर दिए बल्कि मुझे अंदर आने की इजाज़त भी नहीं दी और खिड़की से ही टहला दिया। मैंने उन्हें बड़ी मुश्किल से तुम्हारे साथ बात करने पर राज़ी किया है, अब तुम जानो और तुम्हारा काम।

यह सब बातें सुनकर मैं बहुत ख़ुश थी। इससे ज़्यादा ख़ुशी मुझे इस बात की थी कि उन्होंने मुझे नाजाएज़ नम्बर देने से इंकार कर दिया था! वह मिस मुझे बहुत ईमानदार और समझदार औरत लग रही थीं।

''अरे तुम फ़िक्र न करो! मैंने भी कोई कच्ची गोलियां नहीं खेलीं हैं। मैंने उनके लिए और उनके बच्चों के लिए काफ़ी तोहफ़े ख़रीद रखे हैं। अब तुम देखना मैं क्या करता हूं।'' पापा बड़े भरोसे से कह रहे थे।

कुछ देर बाद मम्मी और पापा आमिर साहब के साथ चले गए और मैं उनका इंतिज़ार करने के लिए किताबें उठा कर पढ़ने लगी। लगभग दो घंटे बाद मम्मी पापा घर पर आ गए। मैं सोच रही थी कि अभी मुझे कहेंगे कि जल्दी से इंजीनियरिंग की तैयारी करो लेकिन पापा ने मुझ से कुछ नहीं कहा और जल्दी से वाशरूम में चले गए। अब मैं अम्मी का इंतिज़ार करने लगी लेकिन उन्होंने अंदर आने के बजाए मुझे बाहर बुला लिया। मैं दरवाज़े से बाहर निकली तो उन्होंने कहा कि जबीन ज़रा यह गिफ़्ट्स उठा लो, गाड़ी में रखना ठीक नहीं है।

मैं हैरान थी कि यह तोहफ़े क्यों वापस आ गए। अंदाज़ा तो मैंने लगा लिया था लेकिन बाद में अम्मी से पूछा तो उन्होंने बताया, ''बेटी! जब हम वहां पहुंचे तो पता चला कि वह मेरी पुरानी दोस्त नरजिस है। हम दोनों एक ज़माने में क्लास फ़ेलो भी थे। फिर मैं तो पढ़ाई जारी नहीं रख सकी लेकिन वह यहां तक पहुंच गई। बहेरहाल मेरी वजह से उसने हम सब को अंदर आने दिया और ड्राइंगरूम में ले जाकर बिठाया लेकिन उसने उसी वक़्त सख़्ती से मना कर दिया कि तोहफ़े वग़ैरा गाड़ी ही में रहने दिए जाएं। बहेरहाल हमने अंदर जाकर उनसे बातचीत की और लम्बी बातचीत के बाद उन्होंने पापा को राज़ी कर लिया कि वह तुम्हें तुम्हारे इंट्रेस्ट के मुताबिक़ पढ़ने की इजाज़त दें और दूसरों की देखा देखी अपनी बेटी की आरज़ुओं का गला न घोंटे और जिस फ़ील्ड में तुम्हारे आगे बढ़ने के चांसेस हैं, उसमें तुम्हें पढ़ने दिया जाए।

उसने तुम्हारे पापा को यक़ीन दिलाया है कि अगर किसी तरह से दे दिला कर तुम्हें यहां से किल्यर भी करवा दिया जाए तो आगे जाकर तुम्हें फिर परेशानी होगी और फिर रिश्वत की आदत से जिस तरह समाज बिगड़ता है, वह भी उन्होंने समझाया। इस तरह तुम्हारे पापा मान गए।

दूसरे दिन पापा ने नाश्ते की मेज़ पर मुझसे कहा, ''बेटी! मुझसे ग़लती हो गई कि मैंने बे वजह तुम्हारी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ तुम्हें अपनी पसंद से पढ़ाने की कोशिश की।''

पापा कह कर कुछ देर के लिए चुप हो गए। फिर बोले, ''बस अब तुम अपनी पसंद से आर्टस का कोई भी सब्जेक्ट ले लो और दिल लगा कर उसमें मेहनत करो। मुझे यक़ीन है कि अल्लाह की मदद से कामयाबी तुम्हारे क़दम चूमेगी क्योंकि तुम ज़हीन और ईमानदार हो।''

''काश! मिस नरजिस हमें पहले मिल जातीं तो तुम्हारा इतना वक़्त बर्बाद न होता।'' अम्मी ने कहा!

आज मैं बहुत ख़ुश थी क्योंकि धांधली से हासिल होने वाली कामयाबी के बजाए अब मैं अपनी मेहनत और पसंद के मुताबिक़ अपना रास्ता ख़ुद चल सकती थी।

27 रजब बेसत

जब जिहालत के अंधेरों ने पूरी दुनिया को अपनी लपेट में ले रखा था, जुल्म, फ़साद, तबाही और बर्बादी हर जगह फैली हुई थी और नबियों की सुन्नत को भुलाया जा चुका था थी, ऐसे में मक्के से एक नूर चमका जो पूरी दुनिया में फैल गया और जुल्म व सितम ख़त्म होने लगा। ख़ुदा ने अपना दस्ते करम खोला और कामयाबी और ख़ुशियों की राहें खुलने लगीं।

17 रबीउल अव्वल के मुबारक दिन रसूले इस्लाम[स०] इस दुनिया में आए और 27 रजब वह तारीख़ है जिस दिन रसूले इस्लाम[स०] पर क़ुरआन की पहली आयत, ग़ारे हिरा के अंदर नाज़िल हुई जो मक्के के पास ही है और जहां रसूले इस्लाम[स०] सालों साल ईबादत किया करते थे और जिहालत के गंदे माहौल से दूर उस ग़ार में पनाह लिया करते थे। 27 रजब के दिन जिबराईल[अ०] सूरए अलक़ की पाँच आयतें लेकर रसूले इस्लाम[स०] के पास आए, वह आयतें यह हैं: ''उस ख़ुदा का नाम लेकर पढ़िए जिसने पैदा किया है। उसने इंसान को जमे हुए ख़ून से पैदा किया है। पढ़िए। और आपका पालने वाला बड़ा करीम है जिसने क़लम के ज़रिए तालीम दी है। और इंसान को वह सब कुछ बता दिया है जो उसे मालूम नहीं था।''

इस तरह दीने इस्लाम को फैलाने का काम 'क़लम' के नाम से शुरू हुआ। रसूले इस्लाम[स०] जब ग़ार से बाहर आए तो आपका जिस्म इस तरह कांप रहा था जैसे बहुत ठंड लग रही हो। आपके चहरे से 'वही' का असर साफ़ झलक रहा था। आपको अपना बदन भारी लग रहा था और पसीना आपकी पेशानी से टपक रहा था। जब आप घर पहुंचे तो हज़रत ख़दीजा[अ०] ने आपका बढ़कर इस्तेक़बाल किया और इस अजीब सी हालत के बारे में पूछा और आपके लिए दुआ की।

रसूल[स०] ने फ़रमाया, ''मुझे कुछ उढ़ा दो। यहीं आपने सूरए मुद्दस्सिर की कुछ आयतें पढ़ीं।

आपने लोगों से अलग-अलग मिल कर इस्लाम की तबलीग़ की शुरूआत कर दी लेकिन काफ़ी वक़्त तक सिर्फ़ आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा[अ०] और अमीरूल मोमिनीन अली[अ०] ही आप पर ईमान लाए और आपके पीछे नमाज़ पढ़ते रहे।

सबसे ख़ास वाक़िआ

इस्लाम का सबसे ख़ास वाक़िआ बेसत है जिसकी तारीख़ 27 रजब है।

सारे उलामा इसी बात को मानते हैं कि क़ुरआन की पहली आयत बेसत के साथ 27 रजब को नाज़िल हुई। बेसत शरीअत के बाक़ाएदा एलान और तबलीग़ के शुरू करने के मायनों में है वरना आप सारी बातों को पहले से ही जानते थे। इसका साफ़ सुबूत इमाम अली[अ०] का वह ख़ुतबा है जिसमें आपने फ़रमाया था, ''बचपन के ज़माने से ही ख़ुदा ने रसूल[स०] के लिए अपने फ़रिश्तों में से एक बहुत ख़ास फ़रिश्ते को इस काम पर लगा रखा था कि वह रसूल[स०] को बुलंद राहों और दुनिया के बेहतरीन अख़्लाक़ की तरफ़ रास्ता दिखाए।''

इसमें कोई शक नहीं है कि शुरू ही से आपके और ख़ुदा के बीच एक ख़ास रिश्ता था यानी चालीस साल की उम्र में बेसत दरअसल तबलीग़ के शुरू होने और शरीअत के नाज़िल होने के मायनों में है।

यह दावत धीरे-धीरे आगे बढ़ी थी और शुरू में सिर्फ़ अमीरूल मोमिनीन[अ०] और हज़रत ख़दीजा[अ०] ही आपके साथ थे। इसके बाद क़रीबी रिश्तेदारों को दावत देने का हुक्म हुआ। आयत में है, ''अपने क़रीबी रिश्तेदारों को दावत दीजिए और उन्हें ख़ुदा के अज़ाब से डराईए।''

यह दावत भी अपनी जगह एक बहुत दिलचस्प चीज़ है। इसके बाद आम दावत का हुक्म हुआ जो कुछ रिवायतों के मुताबिक इस आयत में है, ''आप इस बात का खुला एलान कर दीजिए जिसका हुक्म दिया गया है और मुश्रिकों से दूर रहिए।''

इस तरह इस्लाम सारी दुनिया में लोगों तक पहुंच गया और दुनिया भर के इंसानों पर इस दीन की बदौलत दिन-बदिन नूर अफ़शानी होती रही।●

आज की औरत

■ डा. रेहाना फ़िरदौस

आज की मार्डन दुनिया में दो बड़ी ताक़तवर तहज़ीबें और कल्चर पाए जाते हैं जिन्होंने मार्डन पश्चिमी कल्चर पर बहुत गहरा असर डाला है। एक है पुराना मुश्रिकाना कल्चर और दूसरा इस्लामी कल्चर। इस आर्टिकिल में हमने मुश्रिकाना कल्चर्स का जाएज़ा लिया है, फिर इस्लाम के नज़रियों और उन एहसानों का ज़िक्र किया गया है जो उसने औरतों पर किए हैं।

पश्चिमी कल्चर ने बहुत सी चीज़ें, बहुत से नज़रिए इस्लाम से उधार लिए हैं मगर इसमें पुराने मुश्रिकाना कल्चर के ख़ुराफ़ाती नज़रिए भी शामिल हैं और मार्डन मुलहिदाना कल्चर के अन-बैलेंस्ड और अन-नेचुरल नज़रिए भी। आर्टिकिल के आख़िर में हमने औरत पर मार्डन कल्चर के ख़तरनाक असर की तरफ़ ध्यान दिलाया है।

औरत और ओल्ड कल्चर्स

पुराने यूनान में औरत का दर्जा इतना गिरा हुआ था कि इंसाइक्लोपीडिया ब्रेटानिका 1984 के मुताबिक़ औरत महेज़ बच्चे पैदा करने और बच्चे पालने वाली कनीज़ थी। वह ज़िंदगी के हर बुनियादी हक़ से महरूम थी। उसे महेज़ ऐश का एक सामान समझा जाता था।

पुराने यूनान में औरत के बारे में मशहूर था कि सारी ज़मीन पर बुराईयां फैलाने की ज़िम्मेदार वही है क्योंकि वह औरत जो ज़मीन पर पहली औरत की हैसियत से उतरी थी उसके साथ एक Pandara का बक्स था जो बुराईयों से भरा हुआ था। इंसाइक्लोपीडिया के मुताबिक़ यही कहानी यहूदियों और ईसाईयों में भी बहुत मशहूर है।

पुराने रोम में

औरत के पास क़ानूनी तौर पर कोई हक़ नहीं होता था कि वह कभी बाप की, कभी भाई की और बाद में अपने शौहर की कनीज़ होती थी। उसे नासमझ समझा जाता था और वह ख़ुद अपनी मालिक भी नहीं होती थी।

ईसाई मज़हब में

बाइबिल के पैदाईश वाले चेप्टर के मुताबिक़ औरत मर्द की पसली से पैदा हुई है। बाइबिल के अल्फ़ाज़ इस तरह हैं, "ख़ुदा ने आदम[अ] पर गहरी नींद भेजी और वह सो गए। वह उनकी पसलियों में एक पसली से जो उसने आदम में से निकाली थी एक औरत बना कर आदम के पास लाया।"

ईसाई मज़हब के मुताबिक़ औरत ही सबसे पहले गुनाह की ज़िम्मेदार है। बाइबिल के अल्फ़ाज़ में "सांप ने औरत से कहा कि तुम बिल्कुल न मरोगी बल्कि ख़ुदा जानता है कि जिस दिन तुम उसे खाओगी तुम्हारी आंखे खुल जाएंगी और तुम ख़ुदा की तरह अच्छे-बुरे को जानने वाली बन जाओगी। औरत ने जो देखा कि पेड़ खाने के लिए अच्छा और आंखों को भला मालूम होता है और अक़्ल बख़्शने के लिए अच्छा है तो उसने वह फल खाया और अपने शौहर को भी दिया और उसने भी खाया। तब दोनों की आंखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि वह नंगे हैं।" (बाइबिल, बर्थ चैप्टर)

इस हुक्म न मानने का नतीजा यह हुआ कि आदम और उनकी बीवी जन्नत से निकाल दिए गए। इसलिए औरत पहली गुनाहगार ठहराई गई। इस गुनाह की सज़ा में औरत पर मर्द को लाद दिया गया जैसा कि इसी चैप्टर में आगे चलकर कहा गया है कि 'मैं तेरे लेबर-पेन को बढ़ा दूंगा। तू दर्द के साथ बच्चे जनेगी और तेरी मुहब्बत अपने शौहर के साथ होगी और वह तुझ पर हुकूमत करेगा।' इन्हीं नज़रियों की वजह से ईसाईयत में औरत पहले गुनाह की ज़िम्मेदार, मर्द की कनीज़, शैतान की हथियार और रूह से खाली समझी जाती है। इसी वजह से रूहानियत का सबसे ऊंचा दर्जा बग़ैर औरत रहने में है। जैन मज़हब में तो औरत की तरफ़ देखना भी गुनाह है। हिन्दू मज़हब में औरत का जो मुक़ाम था उसका अंदाज़ा इसी बात से लगाइए कि आज तक बेवा को शौहर के साथ चिता में जलना पड़ता था। जब अंग्रेज़ों ने क़ानूनी तौर पर सती की रस्म को रोक दिया तो लोग बेवा औरतों को घरों में ज़िंदा जला देते और फिर उसकी राख ले जाकर शौहर की राख के साथ मिला देते थे। इस्लाम से पहले अरबों का लड़कियों को ज़िंदा दफ़न करना ख़ुद क़ुरआने मजीद में लिख़ा है। यह सब इस कल्चर के करिश्मे हैं जिसको हमने शुरू में मुश्रिकाना कल्चर कहा है। इसमें कोई शक नहीं कि सारी बुराईयों को शिर्क जन्म देता है।

औरत के बारे में इन घिनौने नज़रियों को और औरत की गिरी हुई हैसियत को इस्लाम ने कैसे ऊंचा बनाया, आइए अब इसका जाएज़ा लेते हैं।

औरत और इस्लाम

औरत की पैदाईश के बारे में मुश्रिकाना कल्चर ने जो ख़ुराफ़ाती नज़रिए दिए थे क़ुरआन ने उन्हें रद्द कर दिया और कहा, "ऐ लोगो! उस परवरदिगार से डरो जिसने तुम्हें एक नफ़्स से पैदा किया और उसका जोड़ा भी उसी की जिन्स से पैदा किया है और फिर दोनों से बहुत से मर्द और औरत दुनिया में फैला दिए हैं।" [1]

साफ़ रहे कि औरत का मर्द की पसली से पैदा होना, बाइबिल की रिवायत है क़ुरआन की नहीं। क़ुरआन के मुताबिक़ दोनों की असल एक है।

आदम[अ] और हव्वा को एक साथ जन्नत में रखा गया। फ़रमाया, "हमने आदम और उसकी बीवी को पैदा किया, उन्हें जन्नत में रखा और उन्हें

हुक्म दिया कि वह अपने रब की इबादत करें और उसके बताए हुए रास्ते पर चलें।'' यहीं से समाज पैदा हुआ जिससे आदम की औलाद बढ़ती रही। यह समाज फैलता और बढ़ता रहा। यह वह इंसानी समाज है जिसका आग़ाज़ एक मर्द और एक औरत से हुआ जिनकी असल एक है, जिनकी हक़ीक़त एक है। इसलिए इस समाज की बुनियाद शादीशुदा ज़िंदगी पर रखी गई क्योंकि यही वह इकाई है जिससे समाज पैदा होता है। समाज का तक़द्दुस, फैमिली के तक़द्दुस के साथ बाक़ी रह सकता है।

औरत पहले गुनाह की ज़िम्मेदार नहीं है

क़ुरआने मजीद ने सूरए आराफ़ आयत 19-22 में इस इल्ज़ाम को इस तरह रद्द किया है, ''और ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जंनत में रहो और जहां से चाहो खाओ, लेकिन इस पेड़ के पास न जाना वरना सितम करने वालों में से हो जाओगे। इसके बाद शैतान ने उन्हें फुसलाया ताकि वह चीज़ जो उनके अंदाम में छुपी है वह ज़ाहिर हो जाए.....''

एक दूसरी जगह पर है कि, ''उन दोनों को शैतान ने बहकाया'' के अलफ़ाज़ आए हैं। यानी क़ुरआन ने साफ़ अलफ़ाज़ में इस नज़रिए को रद्द कर दिया कि हव्वा ने आदम को जन्नत से निकलवाया है बल्कि क़ुरआन के मुताबिक़ दोनों शैतान के बहकावे में आए थे।

क़ुरआने मजीद ने बहुत सी आयतों में इंसान की बुलंदी को ज़िक्र किया है। जैसे, ''हमने इंसान को अहसन तक़वीम पर पैदा किया'' या ''हमने आदम को इज़्ज़त बख़्शी'' यानी मर्द और औरत दोनों ही अल्लाह की नज़र में इज़्ज़त व बुर्ज़ुगी के हक़दार हैं। उसके दीन की दावत दोनों को बराबर से दी गई है, दोनों को अपनी बंदगी की तरफ़ बुलाया है और जज़ा व सज़ा के ऐतबार से भी दोनों के साथ एक जैसा सुलूक होगा।

इसी तरह यह आयत, ''कोई मर्द हो कि औरत हम किसी के नेक अमल को बर्बाद नही करते।''

किसी भी समाज की तरक़्क़ी इसी बात में छुपी है कि हर एक के साथ बराबर का और एक जैसा बर्ताव हो। इसलिए हर एक के हक़ के बारे में कहा कि इंसानी कल्चर के क़ायदे के मुताबिक़ जो हक़ मर्दों के औरतों पर रखे गए हैं वही औरतों के लिए मर्दों पर हैं। इंसानी हिस्ट्री में यह एक अहम ऐलान और इंक़ेलाबी नारा था। औरत की गवाही और विरासत के हक़ को माना गया। इस्लाम से पहले किसी मज़हब ने औरत की पर्सनालिटी, उसकी पहचान और इज़्ज़त को इस तरह नहीं माना था। यूरोप में उन्नीसवीं सदी तक औरत के विरासत के हक़ को नही माना गया था

इस्लाम की बदौलत दुनिया में ह्यूमन राइटस की समझ पैदा हुई। सोच की आज़ादी, मज़हब की आज़ादी, अक़ीदे की आज़ादी, इज़्ज़त व आबरू की हिफ़ाज़त, माल व जान का एहतेराम, बराबरी जैसे इंक़ेलाबी पैग़ाम इंसानियत को इस्लाम का बहुत बड़ा तोहफ़ा हैं। इस्लामी कल्चर ने एक छा जाने वाले कल्चर के तौर पर दुनिया के बहुत से समाजों पर असर डाला। हमारी राय में औरत के हक़ों और हैसियत के हवाले से वेस्टर्न कल्चर में जो नई लहर पैदा हुई वह इस्लाम की देन है। मार्डन कल्चर ने भी अब यह तय कर लिया है कि आम तौर पर औरत को भी वही हैसियत, वही हक़ और वही दर्जा मिलेगा जो मर्द को मिला है। इस्लाम का तर्ज़ुबा 'वही' की रौशनी में था, इसलिए वह हदों के अंदर था। इसके उलट मार्डन कल्चर में यह तर्ज़ुबा सिर्फ़ अक़्ल की रौशनी में किया गया इसलिए वह हदों से बाहर निकल गया। उन्होंने अक़्ली तौर पर तो औरत की हैसियत को मान लिया मगर अमली तौर पर क्या किया? इसका अंदाज़ा एक झलक आज के पश्चिमी कल्चर में औरत का हाल देखकर किया जा सकता है।

आज का वेस्टर्न कल्चर और औरत

आज के पश्चिमी कल्चर में मर्द और औरत की बराबरी की अन-नेचरल डिमाण्ड की गई है। औरत और मर्द के बीच इंसानी ऐतबार से बराबरी है तो ज़रूर मगर कामों में बटवारे में बराबरी के नारे ने बहुत से मसलों को जन्म दिया है। जैसे औरत पर रोज़ी-रोटी कमाने का फ़ालतू बोझ डाल दिया गया है जबकि इस्लाम ने मर्द को औरत के सारे ख़र्चों का ज़िम्मेदार और हिफ़ाज़त करने वाला बनाया है। अगर वह चाहे तो पैसा कमा भी सकती है, जायदाद खरीद सकती है, बेच सकती है।

पश्चिमी समाज में मर्द और औरत के बेजा मेल-जोल ने समाज में सेक्चुअल बुराईयों को जन्म दिया है जिससे हज़ारों मसले पैदा हुए हैं जो इस आज़ादी का एक ज़रूरी नतीजा है। इस तरह औरत ज़ाती और समाजी सतेह पर ज़लील व रुसवा होकर रह गई है।

निकाह जो शादीशुदा ज़िंदगी में एक मुक़द्दस रिश्ता है, वेस्टर्न कल्चर में एक ऐसा बंधन बन चुका है जिसमें कोई बंधना नहीं चाहता। शादीशुदा ज़िंदगी की पाबंदी और ज़िम्मेदारी जो इंसान को सही मायनों में इंसान बनाती है, लोग उससे भागना चाहते हैं। इसलिए कोई किसी के साथ नहीं है। इस सोच ने वहां के फ़ैमिली सिस्टम की धज्जियां बिखेर कर रख दी हैं। फ़ैमिली सिस्टम रिश्तों के तक़द्दुस का ज़ामिन होता है। जहां बाप, भाई, शौहर, मां, बहन और बेटी होती है और समाज इन्ही रिश्तों के साथ परवान चढ़ता है। वेस्टर्न औरत इन रिश्तों की अहमियत और रुतबे से महरूम हो चुकी है। रिश्तों की इस बर्बादी का सबसे बड़ा नुक़सान औरत को हुआ है। अब सौतेले बाप के हाथों बेटियों की और सौतेले भाईयों के हाथों बहनों की इज़्ज़त भी सेक्योर नहीं। फ़ैमिली सिस्टम में यह बुराई ख़तरनाक हद तक तलाक़ के ग्राफ़ को बढ़ाने की ज़िम्मेदार है। कुछ सर्वे रिर्पोटों के मुताबिक़ इस वक़्त अमेरिका में हर दस में से छः औरतें तलाक़ के ज़हरीले तर्ज़ुबे से गुज़र चुकी हैं।

इसी वजह से बच्चे मां-बाप की मुहब्बत के प्यासे हैं जिसके नतीजे में ज़ेहनी मसले बहुत बढ़ गए हैं। आठ साल की बच्ची डेट लेती और मर्द की हवस का शिकार हो जाती है। घर से बिछड़े बच्चे आवारगी और दुनिया से नफ़रत का शिकार होकर खुदकुशी करने पर मजबूर हो जाते हैं।

कैसी अजीब आज़ादी है यह जिसका नतीजा बर्बादी है!

1-सूरए निसा/1

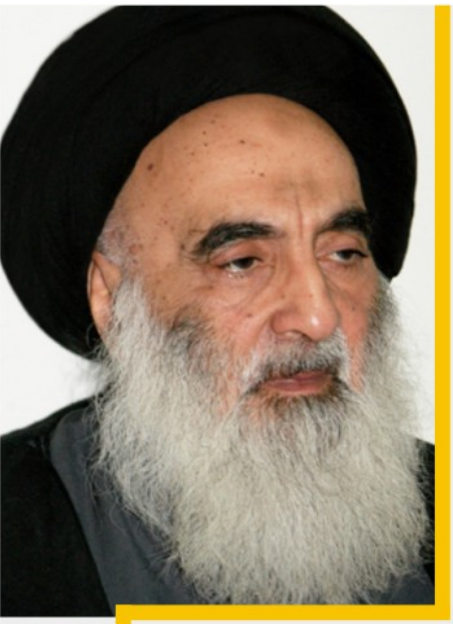

एहकाम

हैज़ (पीरियड्स)

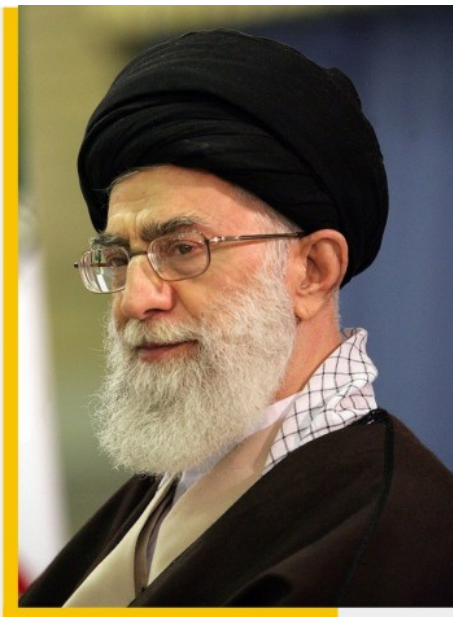

सवालः हैज़ या पीरियड्स किसे कहते हैं और इसकी पहचान क्या है?

जवाबः हर महीने औरत को जो ख़ून आता है उसे हैज़ कहते हैं। इसकी सबसे बड़ी पहचान यह है:-

(1) कम से कम तीन दिन और ज़्यादा से ज़्यादा दस दिन तक आता है।

(2) लाल रंग का या थोड़ा कालापन लिए हुए होता है।

(3) गाढ़ा होता है।

(4) गर्म होता है।

(5) तेज़ और थोड़ी जलन के साथ निकलता है।

सवालः पीरियड्स के बीच औरत पर इस्लाम की तरफ़ से क्या एहकाम जारी होते हैं?

जवाबः नीचे दी गई चीज़ें पीरियड्स के बीच हराम हो जाती हैं:

(1) ऐसी सारी इबातें जिन में तहारत यानी वुज़ू, ग़ुस्ल या तयम्मुम ज़रूरी हो, हराम हैं जैसे नमाज़, रोज़ा, तवाफ़ और एतेकाफ़। इसीलिए औरत पीरियड्स के बीच नमाज़े मय्यत पढ़ सकती है क्योंकि इसमें वुज़ू ज़रूरी नहीं है।

(2) क़ुरआने करीम के हर्फ़ों का छूना और ख़ुदा के नामों और ख़ास सिफ़तों को छूना भी हराम है। इसी तरह नबियों और मासूम इमामों के नामों और हज़रत ज़हरा के नाम को छूना भी हराम है।

(3) ऐसे सूरे जिनमें सजदा वाजिब है, उनका पढ़ना। यहां तक कि उनका एक हर्फ़ भी पढ़ना हराम है। वह सूरे जिनमें सजदा वाजिब है वह यह हैं: (1) 32वां सूरा (अलिफ़-लाम-मीम तनज़ील) (2) 41वां सूरा (हा मीम) (3) 53वां सूरा (वन नज्म) (4) 96वां सूरा (इक़रा)।

(4) मस्जिदुल हराम और मस्जिदुन्नबवी में जाना चाहे एक दरवाज़े से जाए और दूसरे से निकल जाए।

(5) दूसरी मस्जिदों में ठहरना हराम है लेकिन गुज़र सकती है। लेकिन यह मकरूह है। इसी तरह इमामों के हरम में भी ठहरना सही नहीं है।

सवालः नमाज़, रोज़ा वग़ैरा पीरियड्स में औरत पर हराम हो जाते है तो क्या बाद में उनकी क़ज़ा होगी या यह छुटी हुई इबादतें माफ़ हो जाएंगी?

जवाबः पीरियड्स के बीच जो रोज़ाना की नमाज़ें छूट जाएंगी वह माफ़ हैं और उनकी क़ज़ा वाजिब नहीं है। लेकिन छूटे हुए रोज़ों की क़ज़ा करना वाजिब है। यानी अगर रमज़ान में जितने रोज़े छूटेंगे उनकी क़ज़ा रमज़ान का महीना ख़त्म होने के बाद से वाजिब होती है और यह ज़रूरी है कि अगला रमज़ान आने से पहले उनकी क़ज़ा कर ली जाए।

सवालः पीरियड्स वाली औरतें कितनी तरह की होती हैं और क्या उनमें अलग-अलग तरह से पीरियड्स होते हैं?

जवाबः औरतों के पीरियड्स उनके रख-रखाव, माहौल, रहने की जगह वग़ैरा के एतेबार से अलग-अलग हो सकते हैं। इसलिए इस्लाम ने इनको छः क़िस्मो में बांट दिया है:

(1) मुबतदेआः यानी शुरूआतीः वह लड़की जिसे पहले-पहले ख़ून आना शुरू हुआ हो।

(2) मुज़तरेबाः यानी बीच में अटकी हुईः वह पहले कई बार ख़ून देख चुकी है मगर उसका कोई रूटीन नहीं बना है या उसका रूटीन बदल गया है।

(2) नासियाः यानी भूली हुई। वह औरत जो अपने पीरियड्स की टाईमिंग भूल गई हो जैसे वह प्रग्नेंट औरत जो प्रंग्नेंसी के बीच या दो साल दूध पिलाने की वजह से अपने पीरियड्स की टाईमिंग भूल गई हो।

(4) वक़्तियाः यानी वह औरत जिसको हर महीने यह तो पता होता है लकिन कितने दिन तक इसी तरह चलेगा यह पता नहीं होता।

(5) अददियाः यानी वह औरत जिसको महीने में कितने दिन मेन्सेस आएंगे, यह तो पता होता है लकिन कब से शुरू होंगे यह वह नहीं जानती।

(6) वक़्तिया व अददियाः यानी वह औरत जिसे पीरियड्स कब से शुरू होंगे और कब तक चलेंगे, दोनों पता होते हैं।

इन सब औरतों के एहकाम भी अलग-अलग हैं। ऊपर बताई हुई क़िस्मों में से आप किस क़िस्म में आती हैं, यह जानना आपके लिए ज़रूरी है।

अपनी क़िस्म को तय करने के बाद नम्बर आता उस क़िस्म के एहकाम को जानने का जिन पर आपकी इबादतों का दारोमदार है। लेकिन यह हम बताएंगे अगले इशू में...

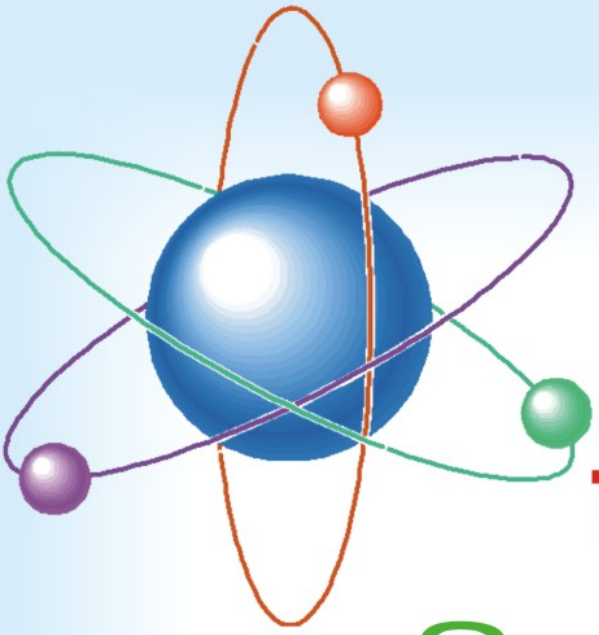

साइंस बुनियादी बातें

'मरयम' में साइंस के नाम से आपके लिए एक नया कॉलम शुरू किया जा रहा है। इसके तहेत बहुत से आर्टिकिल्स, रिसर्चस, इंफ़ोर्मेशन और डेटा पेश किया जाएगा...

साइंस को उर्दू में इल्म कहते हैं और इल्म का मतलब होता है जानना। इसलिए साइंस का मतलब भी जानना ही होता है। अपने आस-पास के माहौल को देखना और अलग-अलग क़ुदरती चीज़ों के बारे में सोचना ही साइंस है। इस तरह ग़ौर करने और सोचने वाले शख़्स को साइंटिस्ट कहा जाता है यानी साइंसदान वह होता है जो आब्ज़र्वेशन करता है और सोच कर कोई नतीजा निकालता है। अगर आपने कभी किसी पौधे को सूखते हुए देख कर यह अंदाज़ा लगाया कि अगर पौधों को पानी दिया जाए तो वह हरे-भरे होकर बड़े हो जाते हैं और अगर पानी न दिया जाए तो वह सूख जाते हैं तो आपने दो काम किए एक तो यह कि आपने पौधों के सूखने और हरा हो जाने के नेचुरल प्रॉसेस को देखा और दूसरे यह कि आपने यह सोचा कि ऐसा पानी की कमी की वजह से होता है। बस यही आब्ज़र्वेशन और उसके बारे में सोचना साइंस है।

इस तरह नेचुरल फ़ैक्टर्स और चीज़ों को देखने और फिर उन पर ग़ौर करने का यह जो प्रॉसेस है उसको साइंटिफ़िक तरीक़े का नाम दिया जाता है और इस साइंटिफ़िक तरीक़े से जो इंफ़ार्मेशन इकट्ठा होती है उसको भी साइंस ही कहा जाता है।

साइंस में शामिल सब्जेक्ट

अगर आपने अब तक की सब बातों को समझ लिया है तो यक़ीनी तौर पर आप को यह जानने में देर नहीं लगेगी कि साइंस में सारे सब्जेक्टस आ सकते हैं। जी हां, चूंकि आबज़र्वेशन करना और उस पर ग़ौर करने को ही साइंस कहा जाता है। इसलिए चाहे हिस्ट्री की स्टडी हो या ज्योग्राफ़ी की, जानवरों की बात हो या नेचुरल रिर्सोसेज़ की, उनमें से जिसके बारे में भी बारीक बीनी और ग़ौर के साथ स्टडी की जाएगी तो उसको साइंस ही कहा जाएगा। जैसे हिस्ट्री की साइंस, ज्योग्राफ़ी की साइंस, जानवरों की साइंस या नेचर की साइंस वग़ैरा।

कई सब्जेक्टस की स्टडी ख़ालिस साइंसी बुनियादों पर नहीं की जाती और इसीलिए इन सब्जेक्टस को स्कूल-कालेजों के कोर्सेस में साइंस से अलग करने के लिए अलग-अलग नाम दे दिए जाते हैं जैसे इकोनॉमिक्स, हिस्ट्री, फ़िज़िक्स, कैमिस्ट्री, बॉयोलोजी वग़ैरा जबकि वह सारे सब्जेक्टस जिनमें आबज़र्वेशन और तर्जुबे करने पड़ते हैं उनको साइंस के ख़ास सब्जेक्टस माना

जाता है।

साइंस के ख़ास सब्जेक्ट

ख़ास साइंसी सेब्जेक्ट यूं तो बहुत सारे हैं लेकिन अगर उनको एक आसान सिकुएंस में रखा जाए तो यूं कहा जा सकता है :-

जानदारों के बारे में साइंस यानी Biology

हैवानों - जानवरों के बारे में साइंस यानी Zoology

पौधों के बारे में साइंस यानी Botany

ग़ैर जानदारों के बारे में साइंस यानी Physics

मैटर और कैमिकल्स के बारे में साइंस यानी Chemistry

हो सकता है कि किसी के ज़हन में सवाल पैदा हो कि Mathematics सब्जेक्ट साइंस है कि नहीं है? इस टॉपिक पर तफ़सील से बात तो किसी और जगह पर की जाएगी फ़िलहाल तो इतना समझ लीजिए कि कुछ एक्सपटर्स, Maths को साइंस नहीं कहते और कुछ उसे आरटर्स मे गिनते हैं जबकि कुछ इसे साइंसी सब्जेक्ट मानते है क्योंकि इसमें न सिर्फ़ यह कि साइंसी तरीक़े से आगे बढ़ा जाता है बल्कि Mathematicians, Mathematics के उसूल, साइंटिस्टस ही की तरह पूछते हैं, क्रियेट नहीं करते।

क्या साइंस कोई पश्चिमी या ग़ैर मुल्की चीज़ है?

कभी आपने ग़ौर किया कि साइंस और साइंटिस्ट का नाम सुनकर वाक़ई आपके ज़ेहन में क्या एहसास उजागर होता है? पश्चिमी दुनिया में रहने वाले अकसर लोगों के ज़ेहन के किसी हिस्से में आज साइंस का नाम सुन कर यह एहसास ज़रूर होता है कि साइंस उन लोगों की या पश्चिमी चीज़ है। इस एहसास की बड़ी वजह इंग्लिश की भरमार है क्योंकि अकसर साइंटिफ़िक चीज़ों को पश्चिमी दुनिया से जूं का तूं इंग्लिश में ही ख़रीद कर वेस्ट में फैला दिया जाता है। हद तो यह है कि दवा के पैकिट पर इसके इस्तेमाल का तरीक़ा ज़्यादातर इलाक़ाई ज़बान के बजाए इंग्लिश में छपता है। इस का असर यह होता है कि हिन्दी, उर्दू या किसी और इलाक़ाई ज़बान के बोलने वालों की सोच पर इंग्लिश छा जाती है और उनका नेचुरल साइंसी रुजहान धीरे-धीरे ख़त्म हो जाता है जबकि यह पैदाईशी तौर पर बच्चे के साथ ही इस दुनिया में आता है। ●

دوماہی مُؤمَّل لکھنؤ

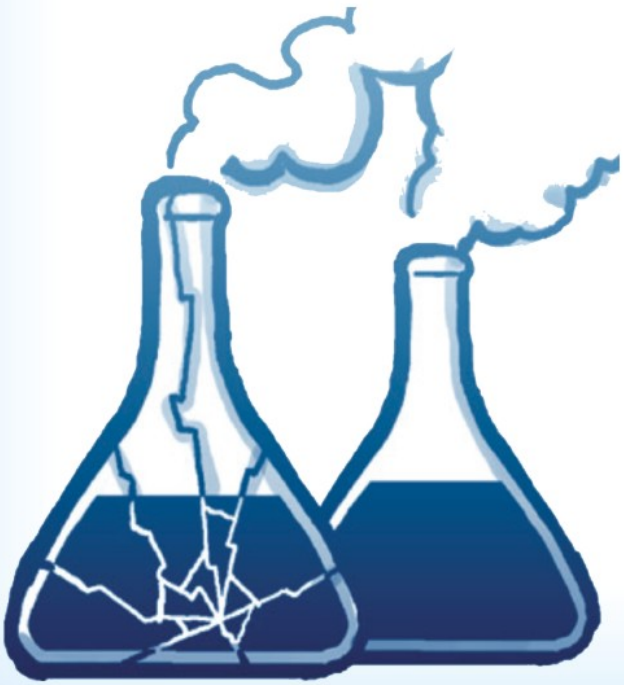

उमदा तबाअत	عمدہ طباعت
आसान ज़बान	آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात	قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें	اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी	آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल	اسلامک پزل
कामिक्स	کامکس

آج ہی ممبر بنئے
زرسالانہ
Rs.150

द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL

AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College
Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Ph.: 0522-2405646, 9839459672
email: muammal@al-muammal.org

बरसात की बीमारियां

■ मुहम्मद यूसुफ़ मिड़की

झुलसा देने वाली गर्मियों के बाद जब एक दम से बरसात का मौसम आता है तो सारा माहौल ठंडा होकर मज़ेदार बन जाता है लेकिन बारिश अपने साथ कुछ बीमारियां भी लेकर आती है। हमें चाहिए कि इन बीमारियों को पहचानें और उनसे बचने के लिए ज़रूरी क़दम उठाएं। छोटे बच्चे और बूढ़े लोग इन बीमारियों का आमतौर पर ज़्यादा शिकार होते हैं। इसलिए मां-बाप को ज़्यादा एहतियात करने की ज़रूरत होती है ताकि अपने बच्चों को इन बीमारियों से बचाकर रख सकें।

इस मौसम में पानी और ग़िज़ाओं के ज़रिए बीमारियां फैलती हैं। इसके अलावा हवा के ज़रिए भी कुछ बीमारियां फैलती हैं।

आम तौर पर होता यह है कि जैसे ही बारिश होने लगती है और आप घर से बाहर कहीं हों तो फ़ौरन किसी छत वग़ैरा के नीचे जाकर भीगने से बच जाती हैं। आप बारिश के पानी से बच तो जाती हैं लेकिन इस मौसम में फैलने वाले इंफ़ेक्शन से बचना मुश्किल होता है।

इस मौसम की कुछ आम बीमारियां

1-मलेरिया, 2-डेंगू, 3-चिकन गुनिया, 4-सर्दी-ज़ुकाम, 5-फ़्लू, 6-ग़िज़ाओं के ज़रिए इंफ़ेक्शन, 7-पानी के ज़रिए इंफ़ेक्शन, 8-कालरा, 9-गर्दन तोड़ बुख़ार (मिनेनजाईटिस)

इन बीमारियों से कैसे बचें?

1- छतरी का इस्तेमाल

जब भी आप घर से बाहर निकलें और बरसात से बचने के लिए कहीं जगह न मिले या फिर काम के सिलसिले में आपको कहीं रुके बग़ैर जाना हो तो छतरी या बरसाती वग़ैरा ज़रूर इस्तेमाल करें। इसी तरह वाटर प्रूफ़ जूतों का भी इस्तेमाल करें।

2- विटामिन 'सी' का इस्तेमाल

इस मौसम में होने वाले सर्दी-ज़ुकाम को जल्दी से जल्दी भगाने के लिए विटामिन C काफ़ी फ़ायदेमंद होता है। इसे आप टेबलेट की शक्ल में ले सकती हैं या फिर विटामिन सी से भरपूर ग़िज़ाएं इस्तेमाल करके इस विटामिन को ले सकती हैं।

3- भीगने के बाद फ़ौरी नहा लें

बारिश में अगर आप भीग गई हों तो घर आकर फ़ौरन नहा लें। यह एहतियाती तदबीर शायद आपको अजीब सी लगे लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि अगर इस मौसम में हल्के गर्म पानी से नहा लिया जाए तो इंफ़ेक्शन से बचने में आसानी होती है।

4- हाट-ड्रिंक्स का इस्तेमाल

बारिश में भीग कर घर आने के बाद गीले कपड़े उतार दें और तौलिए वग़ैरा से सर और जिस्म को ख़ुश्क करने के बाद साफ़ और ख़ुश्क कपड़े पहन लें। इसके बाद कोई गर्म सूप पी लें या कम से कम एक कप गर्म दूध पी लें। इससे आप सर्दी लगने से बची रहेंगी।

5- ख़ुद को साफ़-सुथरा रखें

बरसात के मौसम में ख़ुद को साफ़ रखना बहुत ज़रूरी है। एहतियात के बावजूद अगर आपको सर्दी ज़ुकाम हो जाए तो आप जब भी नाक साफ़ करें, अपने हाथों को साफ़ कर लें।

6- ज़्यादा पानी पिएं

मानसून के आते ही गर्म मौसम क़ुदरती तौर पर ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो जाता है। टम्प्रेचर गिर जाता है और लोग राहत की सांस लेते हैं बल्कि गर्मियों की तेज़ धूप को भूल ही जाते हैं। इसके नतीजे में लोग पानी कम पीने लगते हैं लेकिन याद रखें कि मौसम गर्मी का हो या सर्दी का, ज़रूरत भर पानी पीना सेहत के लिए अच्छा होता है। आम तौर पर लोग पानी उसी वक़्त पीते हैं जब उन्हें प्यास लगती है जबकि सुनहरा उसूल यह है कि प्यास लगने से पहले पानी पिया जाए। प्यास तो दरअस्ल जिस्म की वह ज़रूरत होती है जिसके ज़रिए जिस्म हमें यह बताता है कि पानी की कमी को अब और बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। अगर अब भी पानी न पिया जाए तो फिर जिस्म को नुक़्सान पहुंचना शुरू हो सकता है। मौसम कोई भी हो, ज़्यादा पानी पीने से जिस्म की बहुत सी ज़रूरतें पूरी होती हैं और एक ख़ास बात यह है कि यह जिस्म से ज़हरीले माद्दों को बाहर निकालने का काम भी करता है।

7- अपनी ग़िज़ा का ख़्याल रखें

इस मौसम में अच्छी और साफ़-सुथरी ग़िज़ाएं ही इस्तेमाल करें। इसके अलावा रास्तों पर बेची जाने वाली चीज़ें खाने से जहां तक हो सके, बचें। घरों में भी पकाई जाने वाली ग़िज़ाएं भी साफ़ सुथरे पानी से पकाई जाएं और बर्तन भी साफ़ सुथरे हों।

दस्त और उल्टी

बार-बार दस्त और उल्टी हो रही हो तो इससे जिस्म में पानी और नमक वग़ैरा की कमी हो जाती है। यह कमी अगर एक हद को पार कर जाए तो इससे इमरजेंसी वाली हालत पैदा हो सकती है। इसलिए ज़रूरी है कि फ़ौरन डाक्टर से मिलकर इसे रोका जाए। अगर डाक्टर से फ़ौरन न मिला जा सकता हो तो अपने तौर पर यह करें कि जिस्म में पानी वग़ैरा की कमी को दूर करने के लिए काफ़ी मिक़दार में पीने वाली चीज़ें पिएं जो नारियल का पानी, फलों का रस, दाल का पानी, नीबू पानी वग़ैरा की शक्ल में हो सकती हैं।

इसी तरह पानी वाली चीज़ों की कमी की भरपाई के लिए डिहाईड्रेशन को कम करने वाले पानी, जिसे ORS कहा जाता है का इस्तेमाल करें। इसमें शकर और नमक का घोल होता है जिसे जिस्म में पानी वाली चीज़ों की कमी को दूर करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसके लिए एक लीटर पानी लेकर उसे अच्छी तरह उबाल लें और ठंडा होने के बाद उसमें ORS का एक पैकिट मिला दें। यह ORS थोड़ी-थोड़ी देर पर मरीज़ को पिलाती रहें।

मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया से बचाव

यह बीमारियां मच्छरों से फैलती हैं। इसलिए मच्छरों को घर में मत आने दें। घरों की खिड़कियों और दरवाज़ों पर ऐसी जालियां लगवाई जाएं जिनसे मच्छर अंदर न आ सकें। शाम होते ही मच्छर भगाने वाले क्वाएल और क्रीम वग़ैरा का इस्तेमाल करें। लम्बी आस्तीनों वाले कपड़े पहनें। इसके अलावा घरों के अंदर और बाहर कहीं भी पानी को जमा होने न दें। अगर घरों के आस-पास कहीं गढ़ों वग़ैरा में पानी जमा हो गया हो तो उस पर बेक्टीरिया को ख़त्म करने वाली दवाओं का छिड़काव करवाएं। घरों की छतों और टाप फ़्लोर के ऊपर बेकार टायर, बर्तन, गमले, पैकेट वग़ैरा पड़े हों तो उसमें बारिश का पानी जमा होने न दें। ऐसी बेकार चीज़ों को इस तरह रखें कि उनके अंदर कहीं भी पानी जमा होने न पाए। इसी तरह कूलर में बचा हुआ पानी फ़ौरन निकाल दें। तेज़ बुख़ार के साथ जाड़ा हो रहा हो तो फ़ौरन डाक्टर से मिलें। ●

रसूले इस्लाम अ०:

माहे रजब मेरी उम्मत के लिए इस्तेग़फ़ार का महीना है।

GULSHAN

MEHANDI & HERBALS

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block
REGALIA HEIGHT
S Ahmadabad Palace Road
KOHE-FIZA
BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
G-1, Krishna Apartment
Plot No. 2, Firdaus Nagar
Bairasia Road, BHOPAL
+91-755-2739111